अगस्त ९५
सम्पूर्ण सिद्धि अमृत विशेषांक
मूल्य - १८/-
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
साधना-सफलता
एक बूंद उछली और समुद्र बन गई
जीवन की अनमोल सिद्धि - छाया पुरुष
सूर्य ग्रहण सारी सिद्धियों को समेटे
यौवन गर्विता अप्सरा
राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट
नवरात्रि के
६०
सिद्ध सफल प्रयोग
जो दुर्लभ गोपनीय एवं अचरज भरे हैं।

गुरुदेव का आमंत्रण
आना है तो फिर आना ही है
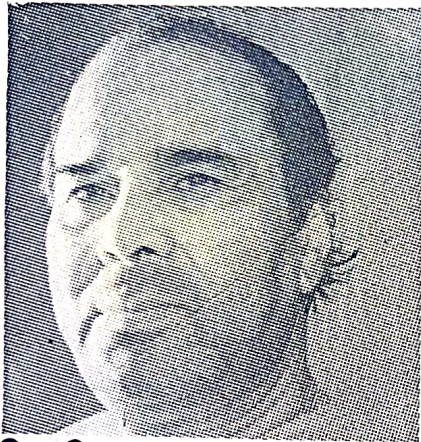
# दीपावली महोत्सव

# 23-10-1995

## कुबेर कृत
## अद्वितीय, गोपनीय, दुर्लभ
## एक दिवसीय

# निश्चित सिद्धिदात्री महालक्ष्मी साधना शिविर

**शिविर स्थल : डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०)**

साधना जगत में काल गणना का अपना ही महत्त्व होता है,
जिस प्रकार सही लग्न में किया गया कार्य निश्चित सफलता प्रदान करता है,
उसी प्रकार दीपावली की रात्रि को सही लग्न में की गई लक्ष्मी की साधना से
सफलता प्राप्त होती ही है. . . और फिर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में किया हुआ
प्रयोग कभी असफल होता ही नहीं, इसीलिए आपको भौतिकता और आध्यात्मिकता की
पूर्णता के लिए सपरिवार इस साधना में भाग लेना ही है–

---

**पूज्य गुरुदेव द्वारा सम्पन्न कराये जाने वाले प्रयोग–**

☆ रात्रि को सिंह लग्न में चारों वेदों से युक्त महालक्ष्मी पूजन

☆ कनक धारा स्तोत्र अभिषेक

☆ इन्द्राणी लक्ष्मी सिद्धि चेतना

☆ श्री सूक्त युक्त देवताओं द्वारा प्रमाणित लक्ष्मी पूजन

**नियम –**

- प्रत्येक साधक को २३ अक्टूबर १९९५ की प्रातः शुभ वेला में जोधपुर पहुंच जाना चाहिए, आप वापिस २४ नवम्बर को प्रातः प्रस्थान कर सकते हैं।
- **शिविर शुल्क मात्र ३३०/-**
- शिविर के नियमों का पालन अनिवार्य है।

सम्पूर्ण सिद्धि अमृत विशेषांक
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
नवरात्रि के ६० सिद्ध सफल प्रयोग जो दुर्लभ गोपनीय एवं अप्राप्य रहे हैं।

वर्ष 15 अंक 8
अगस्त1995 पृष्ठ 80



मूल्य
एक प्रति : 18/-
वार्षिक : 180/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034,
फोन : 011-7182248
फेक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०)
फोन : 0291-32290
फेक्स : 0291-32010

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. 13, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

# विषय सूची

## साधना



## स्तम्भ



## सद्गुरुदेव



## दीक्षा



## रिपार्ताज



## विशेष



## चिकित्सा

# प्रार्थना

स्वस्त्यस्तु सर्वजगतां निखिलप्रसादात्,
ध्यायन्तु भूतानि गुरुं शुभेच्छया।
मनश्च भद्रं भजतां हितेच्छया;
भूयाद् विशेषांकगतेनामृतत्त्व सिद्धिः।।

गुरुदेव निखिल की कृपा से समस्त संसार का कल्याण हो, सभी प्राणि आत्मोन्नति हेतु गुरु का ही ध्यान करें, सर्वहित की कामना के लिए मन सदैव सुचिन्तन करे, तथा यह "अमृत विशेषांक" सभी साधकों को सिद्धि प्रदान करे।

## जागर्ति शिष्यत्वं भावरूपम्

वेद कालीन युग की बात है। एक गुरुकुल में विद्याध्यापन पूर्ण करने के पश्चात् सभी शिष्य गुरु से आज्ञा प्राप्त कर अपने-अपने घरों को वापिस लौटने के लिए अत्यधिक उत्सुक एवं आह्लादित हो रहे थे। घर जाने के एक दिन पूर्व जब शिष्य गुरु को प्रणाम करने गये, तब गुरु ने कहा— **''मैं तुम लोगों को अभी घर जाने की अनुमति नहीं दे सकता हूं, क्योंकि तुम लोगों की अभी एक अन्तिम परीक्षा होनी शेष रह गई है, यदि तुम उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये, तब तुम अपने घर वापिस जाकर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश प्राप्त करने के अधिकारी बन सकोगे।''**

गुरु की यह बात सुनकर सभी शिष्य उस विशिष्ट अन्तिम परीक्षा की प्रतीक्षा में गुरुकुल में ठहर गये, किन्तु कुछ दिन बीतने के पश्चात् शिष्यों ने समझा, कि शायद गुरुदेव अब हमारी परीक्षा लेना उचित नहीं समझते होंगे, क्योंकि उन्होंने हमें जो कुछ सिखाया, उसे हमने पूर्णता के साथ सीख लिया है, अतः वे पुनः गुरु के पास घर जाने की आज्ञा लेने गये। इस बार गुरु ने बिना कुछ कहे सहर्ष उन्हें घर वापिस लौटने की आज्ञा दे दी।

जब उन शिष्यों ने घर के लिए प्रस्थान किया, तो मार्ग में एक जंगल पड़ा, जिसे पार करने में शाम का धुंधलका छाने लगा और कुछ ही दूर जाने पर रास्ते में कांटे ही कांटे बिछे हुए दिखाई दिये। शिष्य वहीं रुक गये, कुछ शिष्य लकड़ियों से कांटों को इधर-उधर कर धीरे-धीरे अपना रास्ता पूरा करने का प्रयास करते हुए आगे बढ़ गये, तो कुछ शिष्य रास्ते के किनारे-किनारे कांटों से बच-बचकर रास्ता पार करने का प्रयास करने लगे।

किन्तु एक शिष्य कांटों भरे रास्ते के प्रारम्भ में ही रुक गया। उसे रुका देख उसके अन्य साथियों ने कहा— **''रात हो रही है, तुम भी कांटों को इधर-उधर करके जल्दी चले आओ''**, और उस शिष्य ने कहा— **''रास्ते में फैले इन कांटों को यूं ही छोड़ कर मैं सिर्फ अपने लिए ही रास्ता बनाते हुए आगे नहीं बढ़ सकता हूं, मैं तो जब तक इन सभी कांटों को रास्ते से हटा नहीं दूंगा, तब तक यही कार्य करता रहूंगा, क्योंकि रात होने को है और यदि कोई राहगीर इस रास्ते से दैववश निकला, तो उसके पांव इन कांटों से लहूलुहान हो जायेंगे, आप आगे चलें, मैं इन्हें साफ करके आता हूं।''** ऐसा कहकर वह शिष्य मार्ग में फैले कांटों को समेटने लगा; तभी उनके गुरुदेव वहां पर आ गये और आगे जा रहे शिष्यों को भी वापिस बुलाकर उनसे कहा— **''यही तुम सभी की अन्तिम परीक्षा थी। मेरी शिक्षा और दीक्षा के द्वारा तुम अपना कल्याण करने के साथ ही साथ समाज का भी कल्याण करना सीखो, यही मेरा उद्देश्य था, किन्तु मेरी इस शिक्षा को इसी एक शिष्य ने अच्छी तरह समझा है, अतः एकमात्र यही ''श्रेष्ठ शिष्य'' है।''**

# हृदय स्थित ब्रह्माण्ड को जाग्रत करने में समर्थ

# परमहंस डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

प्रज्ञा पुरुष होते हैं, उनके समक्ष केवल एक ही भावभूमि होती है, कि मेरे प्रवाह में अधिक से अधिक जीवात्माएं उस ओर बह चलें, जो मुक्ति का, आनन्द का महासागर है, उनके समक्ष और कोई कामना या लालसा नहीं होती, किन्तु हम इस भावभूमि को नहीं समझ सकते।

हमारा बचपन से लेकर युवावस्था तक का और युवावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक का सारा जीवन विविध वासनाओं, लिप्साओं और घृणा के वातावरण में ही जो व्यतीत हुआ होता है। हम छोटे-छोटे पिंजरों में फुदकने वाले पक्षी यह जान ही नहीं सकते, कि राजहंस किस भावभूमि के विस्तृत नभ में उड़ते हुए, कौन-सा गीत गुनगुनाते हैं? ऐसे प्रज्ञा पुरुषों के समक्ष सबसे बड़ा द्वंद्व होता है, कि सर्वथा निस्पृह होते हुए भी उन्हें स्वयं को स्थापित करने की विवशता होती है, जिसके फलस्वरूप मिलती हैं— आलोचनाएं, व्यंग वाण, कुतर्क, छल और द्वेष।

ऐसे ही तानों-वानों में वुना जीवन रहा है, प्रारम्भ से लेकर अव तक **''पूज्यपाद गुरुदेव परमहंस डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** का, जिनका जन्म राजस्थान के एक छोटे-से क्षेत्र **लूनी** में हुआ था, वह इतना अधिक पिछड़ा इलाका है, कि आज आजादी के चालीस वर्षों के बाद भी उनके ग्राम 'खरंटिया' तक सड़क नहीं पहुंच सकी है।

लोक परम्परा के अनुसार उनका विवाह भी नौ-दस वर्ष की अल्पायु में ही हो गया, लेकिन किशोर 'श्रीमाली जी' किन्हीं और तत्त्वों से निर्मित होकर, किन्हीं और लक्ष्यों की पूर्ति के लिए ही इस धरा पर आये थे, जिससे यह सम्बन्ध बाधा नहीं वन सका। वे **''पूजनीया गुरु माता श्रीमती भगवती देवी जी''** से विदा लेकर हिमालय के दुर्गम इलाकों में गये।

अपने भटकाव के दिनों में उन्हें जहां एक ओर हिमालय की कन्दराओं में छिपे एक-से-एक श्रेष्ठ योगी मिले, और उनके द्वारा भारत का लुप्त प्रायः श्रेष्ठतम ज्ञान मिला, वहीं डॉ० श्रीमाली जी में इस बात की चेतना भी सदैव बनी रही, और चेतना से भी अधिक तड़प बनी रही, कि मुझे इन्हीं की भांति यह ज्ञान लेकर के इन कन्दराओं में अपना जीवन नहीं खपाना है, और इसके लिए आवश्यक थी सामाजिक जीवन की यात्रा।

पूज्यपाद गुरुदेव परमहंस डॉ० श्रीमाली जी इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने साधनात्मक जीवन के मध्य पुनः-पुनः समाज में आकर लौकिक शिक्षा की आवश्यकता की भी दशा का निर्वाह करते रहे। उन्होंने अत्यन्त कठिनाई से संन्यस्त जीवन एवं लौकिक शिक्षा दोनों ही दशाओं का निर्वाह किंचित अन्तरालों पर एक साथ किया।

**अपनी कॉलेज की शिक्षा पूर्ण करने के बाद पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्ष १९६३ में राजस्थान विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम०ए० कर वर्ष १९६५ में जोधपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी**

जन्म से कोई व्यक्ति महापुरुष नहीं होता, उसके कर्म ही उसे महापुरुष बना देते हैं; और इतिहास उसके कार्यों के आधार पर ही उसे स्मरण रखता है। आज जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने अभावों, कष्टों और समाज के विषैले गरल को पीकर भी अपने लक्ष्य की प्राप्ति की . . . और वे आज भी जीवित हैं, ऐसी ही कुछ छवि देखने को मिलती है गुरुदेव ''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी'' में।

**में शोध कार्य द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि अर्जित की।**

ज्ञान के इस द्विपक्षीय जीवन को सम्पूर्ण करने के बाद, उनके समक्ष स्वयं के जीवनयापन की समस्या आ खड़ी हुई, क्योंकि वे जिस क्षेत्र में जन्मे वह राजस्थान का एक प्रायः उजाड़ सा क्षेत्र है। अपने जीवनयापन के लिए पूज्यपाद गुरुदेव ने अध्यापन कार्य को चुना और एक छोटे से प्राइमरी स्कूल में कार्य करना आरम्भ किया।

पूज्यपाद गुरुदेव, जो कि अपने व्यक्तिगत जीवन के विषय में बहुत कम ही बताते हैं, एक बार प्रसंगवश कहा था— **''मैंने नित्य अठारह किलोमीटर की दूरी आ-जाकर जीवन के बीस वर्ष अध्यापन कार्य में दिये हैं, और मैं जब आज के युवकों को थोड़े ही समय में अधीर होते देखता हूं, तो मन में वेदना व्याप्त हो जाती है।''** पूज्यपाद गुरुदेव का चिन्तन रहा है, कि वे अपनी वेदनाओं को अपने शिष्यों के समक्ष रख कर, उन्हें पीड़ा से नहीं भरना चाहते, और इसीलिए वे अपने व्यक्तिगत जीवन के विषय में सदैव मौन रहे।

अध्यापन के जीवन क्रम में भी पूज्यपाद गुरुदेव ने सर्वप्रथम जिस भारतीय विद्या को अपना स्पर्श देकर पुनर्जीवित किया, वह है **ज्योतिष शास्त्र।** निरंतर शोध कर उन्होंने अपने ज्ञान को सौ के आस-पास ग्रन्थों में संयोजित किया और जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। आज भारत में 'डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली' और 'ज्योतिष' शब्द पर्यायवाची हो गये हैं। समाज में इस विद्या की प्रामाणिकता पुनर्स्थापित तो हुई ही है, साथ ही कितने युवक भी उनके ग्रन्थों को पढ़ कर आज अपनी आजीविका चला रहे हैं। **भारतीय ज्योतिष, ज्योतिष योग दीपिका, ज्योतिष के गूढ़ रहस्य, ज्योतिष योग चन्द्रिका, कुण्डली दर्पण** इनके प्रमुख ग्रन्थ हैं।

ज्योतिष को पूर्णता देने और उसे ऊंचाई तक पहुंचा देने के बाद पूज्यपाद गुरुदेव ने जिन विद्याओं को अपना कार्यक्षेत्र बनाया है, वे हैं भारत की अनन्यतम विद्याएं— **मंत्र विद्या, तंत्र शास्त्र एवं यंत्र विज्ञान।** ये विद्याएं तो अपने दूषित आचरण और अटपटे व्यवहार के कारण तांत्रिकों ने समाज में घृणित सी बना दी थीं, जिससे जन-सामान्य के मध्य ये विद्याएं लुप्त ही नहीं, मृत प्रायः हो गई थीं। इन विद्याओं के नाम पर उपलब्ध रह गया था बाजार में पीत साहित्य सदृश्य कुछ घटिया और अधकचरा ज्ञान।

**डॉ० श्रीमाली जी का स्वभाव, सदैव चुनौतियों को स्वीकार करना रहा है, और उन्होंने सहर्ष ही इस चुनौतिपूर्ण कार्य को साकार रूप दिया ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका के प्रकाशन के साथ।** यह तो कभी इतिहास में अंकित होगा, कि उन्होंने किन आलोचनाओं, कुचक्रों और भीतरीघातों का सामना कर इस पत्रिका का निरंतर प्रकाशन किया। आज बारह वर्ष से भी अधिक हो चुके हैं, किन्तु आलोचकों के सन्देहों का निवारण करती हुई यह पत्रिका निरन्तर प्रकाशित होती रही।

आलोचकों और भीतरीघात करने वालों को यह पता था, कि भारत की जनता मूलतः धर्म परायण है, आवश्यकता तो यह थी, कि कोई उसे सोते से जगा सके, यही कार्य किया पत्रिका के प्रकाशन ने, और हजारों-हजारों व्यक्ति व साधक ललक के साथ आगे बढ़े साधनाओं में। प्रारम्भिक सफलता मिलने के बाद उन्हें सहज विश्वास हुआ पूज्यपाद गुरुदेव परमहंस डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी में।

> **स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम।**
> **भूतभावन भूतेश देव देव जगत्पते।।**
>
> **(श्रीमद्भगवत् गीता)**
>
> **हे पुरुषोत्तम! हे भूतभावन! हे भूतेश! हे देवों के देव! हे संसार के स्वामी! तुम स्वयं ही अपने द्वारा अपने को जानते हो।**

पूज्यपाद गुरुदेव, जो अपने प्रारम्भिक जीवन को एक छोटे से प्राइमरी स्कूल के अध्यापन कार्य से आरम्भ कर, जोधपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष तक पहुंचे, उनके समक्ष अब यह आवश्यक हो गया, कि वह अपने निरन्तर बढ़ते हुए शिष्यों के कारण और अपने लक्ष्यों की पूर्ति हेतु अध्यापन कार्य से अवकाश ले लें, तथा संस्थात्मक रूप से कार्यों को गति दें।

पूज्यपाद गुरुदेव ने इस हेतु जिस संस्था का गठन किया, उसका नाम है— **''सिद्धाश्रम साधक परिवार'', जिसकी भारत में ही नहीं, विदेशों में भी शाखाएं फैलती जा रही हैं। पिछले ही वर्ष मॉरीशस शाखा ने उन्हें अपने देश में सादर आमन्त्रित कर, उनका सम्मान कर, न केवल अपने को कृतकृत्य अनुभव किया, वरन् वहां के प्रधानमंत्री और सामान्य जनता भी भारत से पधारे इस महायोगी की अभ्यर्थना में उमड़ पड़ी।**

पूज्यपाद गुरुदेव ने केवल संस्थात्मक गतिविधियों तक ही अपने को सीमित नहीं रखा, उन्होंने पहली बार यह नवीन तथ्य रखा, कि यदि लोग ज्ञान प्राप्त करने मुझ तक नहीं आ सकते, तो मैं ही चलकर उनके द्वार तक क्यों न पहुंच जाऊं? इस उद्देश्य के लिए उन्होंने सम्पूर्ण भारत में साधना शिविरों की अटूट श्रृंखला प्रारम्भ की। इसमें उन्होंने अपने शिष्यों और साधकों को वह दुर्लभ

ज्ञान दिया, और ऐसी नवीन साधनाएं प्रत्येक बार नवीन पद्धति से सम्पन्न कराईं, जो कि किसी भी 'साधना ग्रंथ' में उपलब्ध ही नहीं। साधना के उपरान्त उन्होंने यह तथ्य सामने रखा, कि समय की मांग को देखते हुए यह आवश्यक है, कि व्यक्ति अब और भी कोई छोटा क्रम अपनाए, और यह क्रम सम्भव है, केवल और केवल **दीक्षा** से एवं गुरु प्रदत्त **शक्तिपात** से।

पूज्य गुरुदेव

पुरुषः स परः पार्थ! भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया।
यस्यान्तः स्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्।।

(श्रीमद्भगवत् गीता)

**हे पार्थ! समस्त प्राणी जिसके अंदर अवस्थित हैं, जिसके द्वारा यह समस्त संसार व्याप्त है, वह परम पुरुष अनन्य भक्ति द्वारा ही प्राप्त होने योग्य है।**

पूज्यपाद गुरुदेव इस बात को लेकर आलोचना का भी विषय बने, कि आप व्यक्ति की पात्रता अथवा अपात्रता देखे बिना ही उसे क्यों दुर्लभ ज्ञान प्रदान कर रहे हैं? किन्तु पूज्य गुरुदेव का सदैव विनम्र उत्तर यही रहा, कि मैं तो उस मालगाड़ी के समान हूं, जिसमें कोयला भी लदा है, लोहा भी लदा है, अनाज भी भरा है और कहीं कोई बक्सा सोने का भी है, मुझे तो सबको खींचकर ले चलना है।

और यहीं पर हमको याद आता है, कि जब "आद्यशंकराचार्य जी" बहुविधि दीक्षा देने के कारण आलोचना का पात्र बने, तब उन्होंने यही कहा था— "मेरे पास जीवन के क्षण निश्चित हैं और लक्ष्य अपरिमित, मेरे पक्ष से कोई न्यूनता नहीं रहेगी, शेष सामने वाले की पात्रता है, कि वह मेरे प्रदत्त ज्ञान को, शक्तिपात को कितना संजो सकता है।"

इतिहास आज अपने को पुनः दोहरा रहा है। जीवन का केवल एक पक्ष ही नहीं, अपितु विविध पक्ष लेकर जीवन जीया है पूज्यपाद गुरुदेव जी ने, चाहे वह पत्रिका के प्रकाशन से सम्बन्धित हो या विविध ग्रंथों के निष्पादन से, चाहे लोगों की व्यक्तिगत समस्याओं को सुनने से सम्बन्धित रहा हो या साधकों की साधनात्मक कठिनाइयों को दूर करने से। प्रातः ७ बजे से लेकर रात्रि ११ बजे तक अथक परिश्रम कर और परिश्रम के उपरान्त भी प्रसन्नवदन रहे पूज्यपाद गुरुदेव ने हम सभी के समक्ष यह उदाहरण रखा है, कि कैसे यह जीवन, जिसे हम आधा-अधूरा जीकर चले जाते हैं, उसे हजार-हजार जन्मों में परिवर्तित किया जा सकता है।

जो श्रेष्ठ साधक इस तथ्य से परिचित हैं, कि ऐसे प्रज्ञा पुरुषों की देहगत स्थिति गौण होती है, उनके आत्मगत स्वरूप के आगे, वे जानते हैं, कि पूज्यपाद गुरुदेव परमहंस डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी वास्तव में अनन्यतम योगी और योगी ही नहीं, गुरु-मण्डल के सर्वाधिक दैदीप्यमान नक्षत्र, **"परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी"** हैं, और वे इस तथ्य से भी परिचित हैं, कि पूज्यपाद गुरुदेव अपने लौकिक स्वरूप में जिस प्रकार इस जगत् में क्रियाशील हैं, उतने ही गतिशील अपने संन्यस्त शिष्यों के मध्य भी हैं।

आश्चर्य होता है, कि जहां व्यक्ति जीवन भर सिर खपाकर केवल एक विद्या 'ज्योतिष' या 'हस्तरेखा' ही सीख पाता हो, **वहां पूज्यपाद गुरुदेव की गति क्या ज्योतिष, क्या आयुर्वेद, क्या मंत्र, क्या तंत्र, क्या पुराण, क्या मीमांसा सभी में निर्बाध है, और यहीं पर पहिचान है उनकी दिव्यता की।**

लौकिक दृष्टि से उनकी थाह पाना असम्भव है, वे हिमालय की गुप्त और लुप्त होती विद्याओं और साधनाओं के अग्रदूत रहे हैं। एक अकेले व्यक्तित्व ने जो कार्य किया है, सैकड़ों संस्थाएं भी मिलकर उस कार्य को पूरा नहीं कर सकतीं। हर दृष्टि से, हर क्षेत्र में वे अद्वितीय, समर्थ, सशक्त और सफल रहे हैं।

परमहंस डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी भारतीय ऋषियों और मनीषियों की उदात्त परम्परा की एक शाश्वत कड़ी हैं, जिनके आलोक में वर्तमान एवं भावी पीढ़ी अपना पथ प्रशस्त कर सकेगी,

वे तो तपोबल के प्रेरणा पुंज हैं। वे ही एकमात्र पहले ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनमें सम्पूर्ण साधनाओं का समाहितीकरण है, जहां वे वैदिक और दैविक साधनाओं में अग्रणी रहे हैं, वहीं वे श्मशान और साबर साधनाओं के भी अन्यतम आचार्य रहे हैं।

संन्यासी एवं गृहस्थ दोनों ही रूपों में वे अपने-आप में एक अप्रतिम, अद्भुत और अनिवर्चनीय व्यक्तित्व रहे हैं, उन्हें देखकर तो आश्चर्य होता है, कि उन्मुक्त गगन में विचरण करने वाला ऐसा व्यक्तित्व कैसे आज गृहस्थ के छोटे से दायरे में कैद होकर रह गया है, जहां सिवाय दुःख, वेदना, आलोचना, तिरस्कार, अपमान आदि के कुछ नहीं है। जहर के कड़वे घूंट पीने पर भी एक मुस्कान सदा उनके मुख पर कायम रहती है, जो इस बात को दर्शाती है, कि उन पर सुख-दुःख का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि वे जन्म-मरण के इस चक्र से परे हैं, समस्त लोकों में जिनके ज्ञान और चेतना की प्रखरता चारों ओर व्याप्त है, समस्त सिद्धियां जिनके चरणों में नतमस्तक हैं, जो सिद्धाश्रम के प्राण हैं, उनका व्यक्तित्व तो अनिवर्चनीय है, अनुपम है।

वे सब कुछ जानते हुए भी अनजान बने रहते हैं। वे सही अर्थों में शिव स्वरूप हैं, जिनका प्रत्येक शब्द अपनी अर्थवत्ता लिए हुए है। आज उन्हें देखकर यह विश्वास नहीं होता, कि साधारण से धोती-कुरता पहिने जो व्यक्ति हमारे सामने खड़ा है, वह ज्ञान के अथाह सागर को अपने अन्दर समेटे हुए है, उन्हें देखकर यह विश्वास नहीं होता, कि यही वह व्यक्तित्व है, जिसने हिमालय को अपने पैरों से नापा है, जिसमें हिमालय जैसी ऊंचाई और सागर जैसी गहराई विद्यमान है, उसकी थाह पाना तो वास्तव में ही एक असम्भव कार्य है।

**पूज्य गुरुदेव परमहंस डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी, जो सही अर्थों में ब्रह्माण्डनायक हैं अर्थात् पूरे ब्रह्माण्ड को अपने भीतर समेटने वाले, भूत, भविष्य और वर्तमान में घटित घटनाओं के ज्ञाता हैं, उन्हें 'ब्रह्माण्डनायक' कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि जिसने ब्रह्म को ही पहिचान लिया, जिसने उस परमशक्ति का साक्षात्कार कर लिया, उसके तो हृदय में ही सारा ब्रह्माण्ड स्थित हो गया. . . और जिसके हृदय में समस्त ब्रह्माण्ड स्थापित हो जाता है, वह तो स्वयं ब्रह्म हो जाता है, जिसमें अपने ही समान ब्रह्म बना देने की शक्ति होती है, सामर्थ्य होती है।**

**ब्रह्माण्ड का तात्पर्य है, जो कुछ स्थूल रूप में बाह्य दृष्टि से गोचर हो रहा है, वही सूक्ष्म रूप में अन्तर्निहित है. . .और बाहर देखने की प्रक्रिया तो एक छोटी-सी प्रक्रिया है. . .अपने सातों चक्रों को जाग्रत कर उस ब्रह्मानन्द को प्राप्त कर लेना, जहां ब्रह्माण्ड अपने पूरे पार्श्व में फैला हुआ है, एक दिव्य प्रक्रिया है. . .जिसका ज्ञान कुछेक को ही है।**

साधारण मनुष्य पांच सौ फीट से ज्यादा दूर की घटनाएं नहीं देख पाता, तो फिर वह एक मील दूर घटित घटना को कैसे देख सकता है. . .और जब वह देख नहीं सकता, तो पूरे ब्रह्माण्ड में घटित घटनाओं को कैसे देख सकेगा, हम जो कुछ भी देख रहे हैं, वह तो ब्रह्माण्ड का एक छोटा-सा पार्श्व है. . .ब्रह्माण्ड तो सम्पूर्णता का पर्याय है।

एक उच्चकोटी का योगी. . .और वह भी हजारों-हजारों योगियों में से कोई एकाध ही ऐसा व्यक्तित्व होता है, जिसमें उस सूक्ष्म तत्त्व को पहिचानने की अर्थात् अपने अन्दर स्थित ब्रह्माण्ड को जाग्रत करने की क्षमता व्याप्त होती है।

पूज्य गुरुदेव के तो हृदय में ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड स्थित है, वे स्वयं एक चेतना पुंज हैं, एक द्रष्टा हैं, जिन्होंने उन सारी पद्धतियों को समझा है, हृदयंगम किया है, पहिचाना है, वे उस रास्ते से गुजरे हैं, जो रास्ता पूर्णता की ओर अग्रसर है, उन्होंने स्वयं ही अनुभव नहीं किया, वरन् दूसरों को करवाया भी है, उन्होंने ब्रह्माण्ड को अपने अन्दर देखा ही नहीं, अपितु दूसरों को दिखाने का सफल प्रयास भी कर चुके हैं. . .जबकि श्रीकृष्ण ने तो अपने भीतर स्थित ब्रह्माण्ड से अर्जुन को अवगत कराया, किन्तु अर्जुन के भीतर स्थित ब्रह्माण्ड को जाग्रत करने में वे असफल रहे. . . जिसका परिणाम यह हुआ, कि "स्व ब्रह्माण्ड जागरण" के अभाव में अर्जुन अद्वितीय व्यक्तित्व नहीं बन पाया. . . और जो व्यक्ति ब्रह्माण्ड के परिपार्श्व को पूर्णरूप से देख सकता है, वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं, वह तो अपने-आप में काल के भाल पर लिखी गई एक अद्वितीय घटना है, सर्वश्रेष्ठ घटना है।

किन्तु दुर्भाग्य यह है, कि आज उन्हें वस्तुतः पहिचानने वाले बहुत कम हैं, क्योंकि केवल उनके सीधे-सादे बाह्य रूप को देखकर ही साधक और शिष्य विमोहित हो जाते हैं तथा उनसे दूर हो जाते हैं। यह त्रासदी हमेशा इस देश की रही है, कि जब-जब भी ऐसे अद्वितीय पुरुष इस धरती पर आये, उन्हें साधारण मानकर उनका तिरस्कार ही किया गया, उनसे होने वाले लाभ को नहीं ले पाये।

कृष्ण को यदि उस समय पहिचान जाते, तो 'गीता' जैसे अद्वितीय ज्ञान के साथ-साथ और भी लाभ सम्भव हो सकते थे। भले ही आज पूज्य गुरुदेव परमहंस डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के पीछे हजारों-लाखों शिष्यों की भीड़ है, किन्तु उन्हें पहिचानने की क्षमता कुछ गिने-चुने शिष्यों में ही है. . . और जो सूक्ष्मता से परख सकते हैं, वे सहज ही अभिभूत हो जाते हैं, कि उनके मध्य आज कोई अलौकिक पुरुष सामान्य रूप में उपस्थित है।

पूज्यपाद गुरुदेव का एक-एक क्षण कीमती है, और इन क्षणों में भी जो कोई उनसे कुछ क्षण मिल लेता है, उसका तो निश्चित ही भाग्योदय है, यह तो समस्त तीर्थों का दर्शन है और साक्षात् गंगोत्री में ही अवगाहन है।

# नवरात्रि के
# ६०
## सिद्ध, सफल प्रयोग, जो दुर्लभ, गोपनीय और अचरज भरे हैं।

"सिद्धिदात्री यह नवरात्रि पहली बार अद्‌भुत एवं अचरज भरे लघु प्रयोगों को अपने में समेटे है, जो निश्चित मनोकामना, अटूट सम्पदा, सौभाग्य एवं आरोग्य को प्रदान करने की क्षमता से परिपूर्ण हैं तथा जो अल्प काल में ही बहुत कुछ प्रदान करने वाले एवं शीघ्र लाभ देने में चमत्कारी एवं आश्चर्यजनक सिद्ध होते ही हैं।"
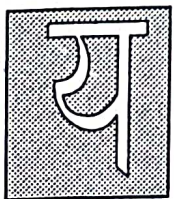
ह मानव स्वभाव रहा है, कि शुरू से ही बलवान, शक्तिहीनों पर, विद्वान्, बुद्धिहीनों पर तथा धनवान, निर्धनों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए व्यर्थ ही उन पर अपनी शक्ति का प्रयोग करते रहे हैं।

**नवरात्रि ऐसा ही शक्ति पर्व है, जो व्यक्ति को शक्तिविहीन से शक्तिशाली बना देता है, क्योंकि मां अपने बालक को असहाय और कमजोर नहीं देख सकती, वह उसकी परेशानियों में, विपत्तियों में हमेशा ढाल बनकर खड़ी रहती है, अतः मां दुर्गा अपने भक्तों व साधकों के लिए ढाल बनकर विपत्तियों में उन्हें सुरक्षा प्रदान करती है।**

वर्ष में केवल दो बार ही वे क्षण आते हैं, जब सम्पूर्ण

प्रकृति सज-धज कर, पूर्ण श्रृंगार युक्त हो, शक्ति स्वरूपा बनकर अपनी आभा से, अपने तेज से धरती को आप्लावित करती है।

ऋतुएं मुख्यतः चार ही होती हैं— शरद, वसंत, ग्रीष्म और वर्षा ऋतु। जब शरद और ग्रीष्म अपनी ठण्ड और गर्मी के प्रकोप से पूरी पृथ्वी को तप्त करते हैं, तो उन्हीं का उन्मूलन प्रकृति वसंत और वर्षा ऋतु के आगमन से करती है। शीत और वसंत ऋतु एवं ग्रीष्म और वर्षा ऋतु के बीच का समय ऐसा होता है, जब फूल खिलने लगते हैं, सारी प्रकृति केसरिया रंग में रंग जाती है, और पहली वर्षा के बाद जब गर्मी का प्रकोप समाप्त होने लगता है, वे क्षण होते हैं आह्लाद के, प्रसन्नता के, उमंग के, मस्ती के, आनन्द के।

— क्योंकि उसी समय नयी फसलें कटती हैं। सुनहला वातावरण अत्यंत ही सुहावना प्रतीत होने लगता है, ऐसा लगता है, मानो किसी नयी-नवेली दुल्हन ने थोड़ा-सा घूंघट उठाकर अपने चन्द्रमुख से सबको निहार दिया हो, वे क्षण होते हैं जीवंतता के, सप्राणता के, चैतन्यता के, जब पूरी पृथ्वी आनन्दविभोर हो उठती है, और उन्हीं क्षणों में ही मनुष्य नये-नये कार्यों का शुभारम्भ करके प्रसन्नता का अनुभव करते हैं, क्योंकि वे क्षण ही हर दृष्टि से पूर्ण हो जाने के हैं, अप्रतिम सौन्दर्य, धन, ऐश्वर्य, मान-सम्मान, श्री, वैभव, समृद्धि, सम्पन्नता प्राप्त कर लेने के हैं।

यही क्षण हैं, जो पूर्णता प्रदान करने में सक्षम हैं, मनोनुकूल इच्छाओं को पूर्ण कर लेने के हैं, तभी तो देशभर में नवरात्रि की इस पावन बेला को बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है, क्योंकि रात्रि के बाद ही सूर्य का तेज पूरी पृथ्वी को प्रकाशवान करता है, अतः **नवरात्रि समस्त साधकों एवं शिष्यों के जीवन को आलोकित करने का पर्व है, पूर्ण कर देने का पर्व है, क्योंकि तब वह पावन बेला प्रत्येक जीवन को प्रकाशवान, सौन्दर्यवान, ऐश्वर्यवान, धनवान हर दृष्टि से समर्थवान बना देने में सहायक सिद्ध होती है, और तब व्यक्ति उस शक्ति स्वरूपा की शक्ति प्राप्त कर अपने भाग्य को भी परिवर्तित करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।**

पहली बार ही नवरात्रि के इस पावन पर्व पर कुछ लघु प्रयोग व नुस्खे दिये जा रहे हैं, जिनसे लाभ प्राप्त कर व्यक्ति पूर्णता प्राप्त करता ही है, क्योंकि यह विशिष्ट पर्व होता ही पूर्ण कर देने के लिए है जीवन के अधूरेपन को।

ये जो लघु प्रयोग यहां दिये जा रहे हैं, और उनसे सम्बन्धित जो भी सामग्री है, वह अपने-आप में दुर्लभ, पूर्ण चैतन्य एवं मंत्रसिद्ध है, जो अन्य कहीं भी उपलब्ध नहीं है। ये अत्यन्त ही गोपनीय प्रयोग हैं, जिनका प्रभाव सहज और निश्चित फलदायी होता ही है।

इसका एक-एक प्रयोग अपने-आप में एक शक्ति पुञ्ज है, जिसके फलस्वरूप कैसी भी विपत्ति हो, बाधा हो दूर होती ही है।

सुपरीक्षित इन लघु प्रयोगों को यहां पहली बार प्रस्तुत किया जा रहा है, जो इस प्रकार हैं—

### १. अक्षय्य गुटिका—

१. यह गुटिका बड़े भाग्य से ही प्राप्त होती है, जिसका घर में होना ही पूर्ण श्री, वैभव और समृद्धि प्रदान करना है।
२. यदि नौकरी न मिल रही हो।
३. घर में धन की कमी हो।
४. दरिद्रता का वास हो।
५. धन का कोई स्रोत न दिखाई दे रहा हो।

— तो इस गुटिका को घर में स्थापित करने से ये समस्याएं दूर हो जाती हैं।

### २. भेदिनी चक्र—

१. यदि किसी स्त्री का गर्भ किसी ने बांध दिया हो, तो इस चक्र पर नवरात्रि के प्रथम दिन कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से इसका पूजन कर और यह भावना देकर की इस समस्या से छुटकारा मिल जाय, ऐसा कहकर यह चक्र ७ बार उस गर्भिणी स्त्री के ऊपर से घुमायें और किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें, तो अगले ही वर्ष वह सुन्दर और स्वस्थ बालक को जन्म देती है।
२. अपनी राजनीतिक स्थिति सुदृढ़ करने एवं वोट आदि से सम्बन्धित कार्यों को पूर्ण करने के लिए यह चक्र विशेष रूप से प्रभावकारी सिद्ध होता है।
३. विकट परिस्थितियों में कभी-कभी शत्रु बार-बार हावी होने का प्रयास करते हैं, ऐसी स्थिति में इस चक्र का होना आवश्यक है, तभी उनके प्रयासों को विफल किया जा सकता है।
४. इस युग में ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य के कारण भी कई बार शत्रु पैदा होते हैं, उन्हें खत्म करने हेतु, यदि आप ऐसे शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, उनका दमन करना चाहते हैं, और उन पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं, तो २१ बार शत्रु का नाम लेते हुए निम्न मंत्र पढ़कर, यह चक्र किसी काले कपड़े के कलावे से बांधकर उस दिशा में फेंक दें, जहां उसका स्थान हो। चक्र पर भी उस शत्रु का नाम कुंकुम से अवश्य लिखें।

थोड़े दिनों के पश्चात् ही इसका प्रभाव सामने आ जायेगा।

**मंत्र**

**क्लीं क्लीं क्लीं ॐ क्लीं क्लीं क्लीं फट्।।**

### ३. कमलिनी–

१. यह कमल-पुष्प के रंग का एक पौधा होता है, जो तिब्बत की ऊंची-ऊंची पहाड़ियों पर पाया जाता है, जो स्थान दुर्लभ एवं गोपनीय हैं।
२. इसकी जड़ को पीसकर यदि दो दिन तक एक लोटा पानी में रखा जाय, और उस जल से स्नान कर लिया जाय, तो विशेष लाभदायक होता है।
३. इससे पेट सम्वन्धी सभी बीमारियां नष्ट होने लगती हैं।
४. बाल झड़ने बंद हो जाते हैं।
५. चेहरे पर एक उद्दीप्त आभा-सी छा जाती है।

### ४. मश्मीना–

१. यह एक कीमती, अनमोल नग है, जिसे धारण करने पर भाग्य को भी परिवर्तित किया जा सकता है।
२. जिस व्यक्ति के पास भी यह नग होता है, उसके विपरीत ग्रह भी अनुकूल प्रभाव देने लगते हैं।
३. किसी भी प्रकार की दोष-बाधा दूर होने लगती है।
४. फिर उसके कार्य में किसी प्रकार का कोई अवरोध उत्पन्न नहीं होता।
५. स्वतः ही समस्त परिस्थितियां उसके अनुकूल बनने लग जाती हैं।

### ५. इमृता फल–

१. विशिष्ट सौन्दर्य-प्राप्ति के लिए लाभदायक।
२. यह फल भी तिब्बत के गुह्य स्थानों से उपलब्ध हुआ है, जिसे प्राप्त करना अपने-आप में कष्ट साध्य है।
३. इस फल को यदि नवरात्रि पूजन के पश्चात् अष्टमी के दिन खीर बनाकर, उसमें ५ मिनट तक डाल कर, **''ॐ ह्रीं सर्वरूपात्मने ह्रीं नमः''** मंत्र का उच्चारण कर खीर को हिला कर खा लिया जाय, तो व्यक्ति कितना भी कुरूप क्यों न हो, रूपवान हो जाता है।
४. ऐसा सौन्दर्य, जो किसी कृत्रिम संसाधनों की उपलब्धि नहीं है, अपितु प्राकृतिक देन है।
५. ऐसा सौन्दर्य, जिसकी छटा छिटक-छिटक कर दूसरों पर अपना प्रभाव विखेरती ही है।
६. मानो खीर का नहीं, वरन् अमृत का ही रसास्वादन किया हो।

### ६. मोहिनी मुक्तक–

१. किसी कागज पर **''ह्रीं''** बीजमंत्र लिखकर, उसमें केसर, गुलाल, इत्र और गुलाव की कुछ पंखुड़ियों के साथ इस मुक्तक को रख कर, लाल धागे से बांध कर गले में पहिन लें।
२. इससे पूरा शरीर आकर्षण युक्त हो जाता है, हर प्राणी और जीव-जन्तु उस व्यक्ति से सम्मोहित हो जाता है।
३. यदि किसी को पूर्णरूप से अपने वश में करना हो, तो इस मुक्तक को तीन बार जल में अमुक व्यक्ति का नाम लेकर वह जल उसे पिला देने से वह व्यक्ति आजीवन वशीभूत हो जाता है।
४. इस लॉकेट को वायें हाथ में रखकर, सामने वाले व्यक्ति पर ५ बार घुमाकर मन में यह भाव देने से, कि इस पर किया गया 'वशीकरण प्रयोग' समाप्त हो जाय, ऐसा करने के पश्चात् उस लॉकेट को दूर दक्षिण दिशा की ओर फेंक देने से वह व्यक्ति उस प्रभाव से मुक्त हो जाता है।
५. यदि व्यापारी इस लॉकेट को अपनी दुकान, फैक्टरी या कारखाने के मुख्य द्वार पर टांग दे, तो कोई भी व्यक्ति उस व्यापारी को हानि नहीं पहुंचा सकता।

### ७. इंगुदी फल–

१. नवरात्रि के किसी भी सोमवार को इंगुदी फल जब दूध के साथ शिवलिंग पर चढ़ाया जाता है, तो व्यक्ति की प्रमोशन निश्चित हो जाती है।
२. इसे बालक के सिरहाने रख देने से हर प्रकार के बाल रोगों से उसकी रक्षा होती है।
३. किसी की कुण्डली में यदि अग्नि भय योग हो, तो इसके स्थापन से वह पूर्णरूप से समाप्त हो जाता है।
४. कैसा भी जहरीले सर्प का दंश हो; यदि इसे पानी में ५ मिनट तक घोल कर उस व्यक्ति को पिला दिया जाय, तो जहर का प्रभाव खत्म हो जाता है, और मरणासन्न व्यक्ति भी स्वस्थ हो जाता है, ऐसा 'तिब्बत के एक ग्रंथ' में कहा गया है।
५. यदि किसी कार्य का शुभारम्भ करने के लिए जाना हो, तो इस फल को चौखट पर रखकर, बायें पैर से दबाकर जाने से वह कार्य शीघ्र ही पूर्ण होता है।

### ८. त्रिरत्ना–

१. ये तीन प्रकार के रत्न होते हैं, जो व्यक्ति को पहले से ही आने वाली दुर्घटना की सूचना दे देते हैं।
२. यदि किसी प्रश्न या समस्या का हल जानना हो, तो उस समस्या को एक कागज पर लिखकर इन रत्नों को उस प्रश्न वाले कागज पर लपेट कर, अपने सिरहाने तकिये के नीचे रखकर सो जाने से स्वप्न में उस समस्या का हल मिल जाता है।
३. बाहर जाते समय यदि किसी प्रकार की दुर्घटना की संभावना हो, तो इन रत्नों को जेब में रखने से वह सम्भावना समाप्त हो जाती है।
४. इन रत्नों को यदि जड़वा कर पहिन लिया जाय, तो जन्मजात रोग भी धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है।

५. पुराना सिर दर्द समाप्त हो जाता है।

## ९. जामवंती फल–

१. इस फल को नवमी के दिन हवन-कुण्ड में डाल देने पर घर से दरिद्रता कोसों दूर भाग जाती है।
२. इस फल के सामने यदि नवरात्रि के किसी भी दिन मन ही मन कोई इच्छा प्रगट की जाय, तो वह पूर्ण होती ही है।
३. यदि किसी मुकदमे में बार-बार हार का सामना करना पड़ रहा हो, तो उसमें विजय प्राप्त हो जाती है।
४. यदि किसी को रात में डर लगता हो, तो सात बार इस फल को उसके ऊपर से घुमाकर यह भावना देते हुए, कि उसका भय समाप्त हो जाय, उसे किसी कुएं में डाल आयें, तो भय समाप्त हो जाता है।
५. इस फल के स्थापन से रुका हुआ धन भी प्राप्त हो जाता है।

## १०. सिद्ध गुटिका

१. इस गुटिका को नवरात्रि के किसी भी दिन घर में किसी भी स्थान पर दबा देने से किसी भी विषैले जन्तु का एक वर्ष तक आना या उससे दंश-भय समाप्त हो जाता है।
२. यदि कोई बच्चा रात्रि को दुःस्वप्न से डरकर रोता है, तो यह गुटिका उसके सिरहाने रखने से उसका रूदन समाप्त हो जाता है।
३. इस गुटिका को शत्रु भय से बचने के लिए दाहिने बाजू में किसी धागे से बांधें।
४. इस गुटिका को अपने किसी पॉकेट या सन्दूक में रख दिया जाय, तो शक्ति का तीव्र प्रभाव कम हो जाता है।
५. पड़ोसियों की दुष्ट प्रवृत्तियों, व्यर्थ के विवादों, कलह आदि से बचने के लिए इस गुटिका को घर की पश्चिम दिशा में किसी गुप्त स्थान पर बांधकर रखने से विवाद शांत हो जाता है।

## ११. सुरक्षा चक्र–

१. सुरक्षा चक्र को अपनी पॉकेट में रखने से घर के बाहर जाते समय एक्सिडेंट या अकाल-मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है।
२. इस चक्र को किसी अभीष्ट मित्र से अनबन होने पर पास रखने से धीरे-धीरे मधुर सम्बन्ध पुनः बनने लगते हैं।
३. इस चक्र को घर में रखने से बच्चों को नजर-दोष या किसी प्रकार के बाह्य प्रयोग से बचाया जा सकता है।
४. इस सुरक्षा चक्र के माध्यम से चोर आदि का भय नहीं रहता।
५. इस चक्र को घर, फैक्टरी व ऑफिस में स्थापित करने से जान या माल दोनों की सुरक्षा एक वर्ष तक होती रहती है।

## १२. कुबेर कुंदी–

१. कुबेर कुंदी को अपने घर में पैसे रखने के स्थान पर रखने से घर में आकस्मिक धन प्राप्ति की संभावना कुछ दिनों के भीतर बनती ही है।
२. घर में धन का आगम समुचित होने पर भी यदि रुपये-पैसे घर में न टिक सकें, तो अवश्य ही आपको नवरात्रि के दिन इस कुंदी को पूजागृह में रखकर, कुंकुम, अक्षत से पूजन करके कुछ दिन रखने से यह विघ्न दूर हो जाता है।
३. नवरात्रि के तीसरे दिन इस कुबेर कुंदी को अपनी फैक्टरी या दुकान में प्रातः ८ से १० बजे के बीच **"ॐ धनाधिपतये नमः"** मंत्र को ११ बार पढ़कर, किसी बर्तन में कुछ दिन तक ढककर रखने से और प्रतिदिन धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजा करते रहने पर बहुत लाभ की स्थिति बनने लगती है।
४. नवरात्रि के दिनों में इसे अपने पास घर में या फैक्टरी में बांध देने से व्यापार बंध की स्थिति समाप्त हो जाती है।
५. शेयर मार्केट के व्यापारियों को यह कुबेर कुंदी राम-वाण की तरह अचूक प्रभाव देती ही है।

उपरोक्त सभी प्रयोगों की सामग्री विशेष तिथि और मुहूर्त में विशिष्ट चैतन्य मंत्रों के द्वारा प्राण-प्रतिष्ठित की गई है। ये प्रयोग विशेषकर आने वाली नवरात्रि के दिनों में **२५ सितम्बर से ३ अक्टूबर विजय दशमी** तक विशेष लाभकारी एवं प्रभावशाली होंगे। अन्य तिथियों पर यह सामग्री प्रयुक्त की जा सकती है, किन्तु वह उतनी तीक्ष्ण लाभकारी सिद्ध नहीं होगी, जितनी कि नवरात्रि के उन विशिष्ट नौ दिनों में सम्भव है।

ऐसी सामग्रियां सिद्ध औघड़ किस्म के भ्रमणशील साधु और सिद्धों के द्वारा संस्था को प्राप्त होती हैं, जो कि बहुत ही दुर्लभ और सीमित होती हैं। कई बार कई वस्तुएं कई साधकों को नहीं मिल पातीं, इसलिए यथा उचित समय में सामग्री को मंगाने का प्रयास करना चाहिए।

ये दुर्लभ प्रयोग, जो कि अत्यंत प्रभावशाली और शीघ्र लाभ देने वाले हैं, इस नवरात्रि की विशिष्टता के कारण ही दिये जा रहे हैं, क्योंकि पहली बार ही ऐसे योग बन रहे हैं, जिससे ये सामग्रियां दुगुनी और निश्चित प्रभाव युक्त बन गई हैं, अतः यह आपके जीवन का सौभाग्य होगा, क्योंकि ये प्रयोग लघु होते हुए भी वृहद लाभकारी हैं।

सामग्री न्यौछावर :

अक्षव्य गुटिका - ७५/-, भेदिनी चक्र - १००/-, कमलिनी - ६०/-, मश्मीना - १२०/-, इमृता फल - १६०/-, मोहिनी मुक्तक - १५०/-, इंगुदी फल - ६०/-, त्रिरत्ना - १२०/-, जामवंती फल - ६०/-, सिद्ध गुटिका - १००/-, सुरक्षा चक्र - १२०/-, कुबेर कुंदी - ७५/-

# साधना-सफलता

## साधना में सिद्धि पाइये

☆ जीवन में ऐसा कोई कार्य नहीं, जो साधना द्वारा सम्पन्न न किया जा सकता हो, यदि इच्छित साधना में सिद्धि प्राप्त हो जाय, तो प्रत्येक साधना में चाहे वह योगी हो, संन्यासी हो, तपस्वी हो या गृहस्थ, सफलता मिलती ही है, किन्तु कभी-कभार कुछ कारणोंवश साधक के बार-बार प्रयत्न करने पर भी वह साधना में सिद्धि प्राप्त नहीं कर पाता, ये उसके जीवन के कर्म-दोषों के फलस्वरूप ही होता है, अतः जब तक वे दूर नहीं हो जाते, तब तक वह साधना में सफलता भी प्राप्त नहीं कर पाता।

— और इन्हें दूर करने का एकमात्र उपाय है, **''गुरु मंत्र-जप''**। गुरु मंत्र ही मात्र वह चैतन्य-शक्ति क्रिया युक्त है, जिसमें दोषों को समाप्त करने की क्षमता है, यह अपने-आप में सर्वश्रेष्ठ मंत्र कहलाता है, अतः इसका उठते-

बैठते, चलते-फिरते निरन्तर जप प्रत्येक व्यक्ति व साधक को करना ही चाहिए, ऐसा करने पर स्वतः ही दोष समाप्त होने लगते हैं, और विभिन्न साधनाओं में भी सफलता एवं सिद्धि मिलने लगती है।
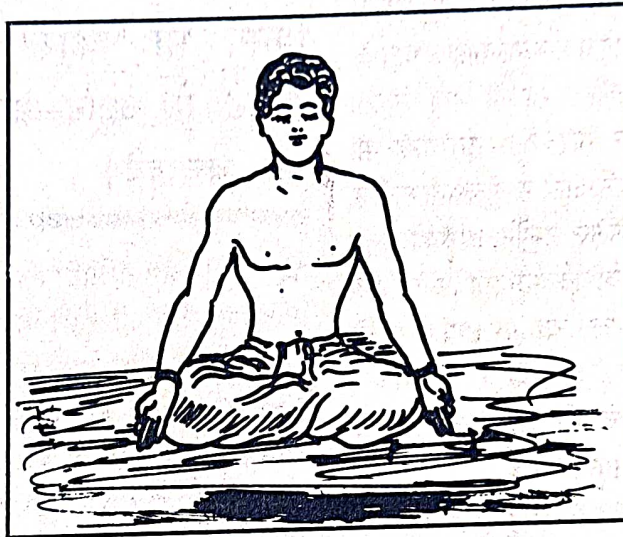
यह माह साधनात्मक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है, अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए, कि उसे जब भी समय मिले, धर से बाहर जाते समय, दफ्तर में या विश्राम के समय वह निरन्तर मन ही मन गुरु मंत्र का जप करता रहे, तभी साधना में सिद्धि प्राप्त हो सकेगी।

## आप-अपनी जवानी को हमेशा कायम रखिये!

☆ यौवन तो एक ऐसी उमड़ती घटा है, जो जीवन में पता नहीं कहां से आकर बरसती है और जीवन को भिगो कर चली जाती है, इसकी कसक पूछिये उनसे, जिन पर यह घटा बरस कर जा चुकी हो। मन का नैराश्य व्यक्ति को असमय ही बूढ़ा कर देता है, वह ढूंढता रहता है, कि जीवन में नये स्वप्न मिलें, नयी आशायें मिलें और वह उन सपनों को मूर्त रूप दे सके, लेकिन उसके शरीर और मानस के तन्तु उसे ऐसा घटित नहीं करने देते, जीवन की उस घटाटोप स्थिति में कोई भी विज्ञान, कोई भी समाज शास्त्र या विधि शास्त्र आगे बढ़ कर व्यक्ति की मदद नहीं कर सकता।

''आप-अपनी जवानी

को हमेशा कायम रख सकते हैं'', सामान्यतः यह शीर्षक पढ़ कर शायद आपको विश्वास न हो, मगर हमारे योगियों और ऋषियों ने इस प्रकार के नुस्खे को ढूंढ निकाला है, जो अभी तक अज्ञात था, मगर यदि हम अपने अन्दर की जितनी भी शिथिल नाड़ियां हैं, मांसपेशियां हैं, उन्हें पुनः अनुकूल बना सकें, उन्हें नियंत्रित कर सकें, तो वापिस जवानी लौट सकती है। **'महर्षि च्यवन'** ने भी इसी प्रकार पुनः यौवन को प्राप्त किया था।

इसका सर्वश्रेष्ठ उपाय यह है, कि कम-से-कम भोजन करें, अन्न का आहार कम लें तथा तरल पदार्थ ज्यादा लें, जिससे आप अन्नमय कोष की अपेक्षा प्राणमय कोष में ज्यादा जाग्रत रह सकेंगे, तथा कैलोरी भी आपकी उतनी ही हो, जो आपके शरीर को हर समय सुव्यवस्थित एवं स्वस्थ रख सके, और धीरे-धीरे अन्नमय कोष की अपेक्षा प्राणमय कोष में अपने-आप को स्वस्थ रखते हुए निम्न मंत्र का प्रातःकाल ५ बजे स्नान करने के पश्चात् **एक घंटा जप** कर लें, तो निश्चय ही आपकी सदाबहार जवानी लौट सकती है और साथ ही वह व्यक्ति रोग मुक्ति भी प्राप्त कर लेता है।

**मंत्र**

**''ॐ श्रीं अश्विन्यै नमः''**

## अब परिवार में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही नहीं सकता!

☆ इसके लिए ६० देशों के वैज्ञानिकों ने निरीक्षण किये हैं, और उसके आधार पर ही वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं, कि यदि प्रातःकाल घर में **''अग्निहोत्र''** हो, तो घर में किसी प्रकार का कोई अभाव या तकलीफ रह ही नहीं सकती और घर की समस्याएं भी अपने-आप ही सुलझती रहती हैं, इसीलिए उन्होंने अग्निहोत्र को आवश्यक माना है। अग्निहोत्र के लिए यह आवश्यक है, कि इसे ठीक सूर्योदय के समय करें, न उससे पहले और न ही उसके बाद।

आप स्नान आदि क्रियाओं से निवृत्त होकर, एक तांबे के कुण्ड में छोटी-छोटी लकड़ियां जलाकर तथा केवल आधी मुट्ठी चावल और दो चम्मच घी मिला करके **५ बार** निम्न मंत्र पढ़कर आहुति दें—

**१. ॐ अग्नये नमः स्वाहा।**
**२. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा।**
**३. ॐ प्रजापतये नमः स्वाहा।**
**४. ॐ विष्णवे नमः स्वाहा।**
**५. ॐ सर्वकार्य सिद्ध्यर्थं नमः स्वाहा।**

यदि यह कार्य ठीक सूर्यास्त के समय हो और नियमपूर्वक हो, तो निश्चय ही आपकी समस्याओं का समाधान होगा ही।
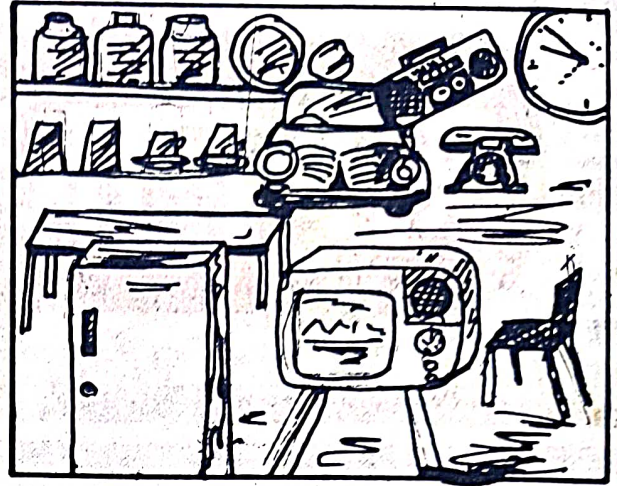
## किसी भी प्रकार के संकट से अपने-आप को बचाइये!

☆ संकट तो प्रतिपल-प्रतिक्षण आते ही रहते हैं, और यदि इन संकटों, बाधाओं या अड़चनों से व्यक्ति विचलित होने लगे, तो बड़ी समस्या की स्थिति उत्पन्न होने लगती है, और वह चाह कर भी अपने-आप को उन संकटों से बाहर नहीं निकाल पाता। वस्तुतः इन संकटों से अपने-आप को बचाने के लिए रामायण की एक उक्ति है—

**दीन दयालु विरुद संभारी।**
**हरहु नाथ मम संकट भारी।।**

इसका आप केवल **११ बार उच्चारण करें** और रात को सोते समय भी यदि हाथ जोड़ कर इसका ११ बार उच्चारण करें, तो आप देखेंगे कि दिन भर आपका बिना संकटों के गुजरेगा, क्योंकि ये दो पंक्तियां अपने-आप में मंत्रमय हैं, और इसका ११ बार से ज्यादा उच्चारण करने की आवश्यकता भी नहीं है।

व्यक्ति नित्य ११ बार **''चाक्षुषोपनिषद स्तोत्र''** का पाठ कर ले, तो निश्चय ही कुछ समय के बाद उसकी नेत्र ज्योति में वृद्धि होने लगती है, और धीरे-धीरे आंखों की बीमारी से भी उसे मुक्ति मिल जाती है।

चाक्षुषोपनिषद स्तोत्र पिछले अंकों में हम दे चुके हैं, और पुनः अगले अंक में हम इसे प्रकाशित कर रहे हैं।

## केवल स्त्रियों के लिए

☆ प्रत्येक स्त्री अपने-आप को सौन्दर्यमय बनाये रखना चाहती है, और यह आवश्यक भी है। 'सौन्दर्य' और 'स्त्री' तो एक-दूसरे के पर्याय ही माने जाते हैं, और प्रत्येक स्त्री ऐसा सौन्दर्य प्राप्त करने की आकांक्षा रखती ही है, जिसे देख कर कोई भी ठगा-सा खड़ा रह जाय।

ब्यूटी पार्लर तथा लेप, क्रीम, पाउडर इत्यादि कुछ क्षणों के लिए तो सौन्दर्य प्रदान कर सकते हैं, किन्तु स्थाई रूप से सौन्दर्य नहीं दे सकते, मगर स्त्रियां मासिक धर्म समाप्त होने के बाद स्नान कर व बाल धोकर, सूर्योदय के समय **पूर्व की ओर मुंह करके सूर्य देवता को अर्घ्य दें, तथा फिर उस जल की सात बार प्रदक्षिणा करें** और उसके बाद ही दैनिक कार्यों में लगें तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

**मंत्र**

**''ॐ घृणिं सूर्याय नमः''**

ऐसा सात बार उच्चरित करें और सात बार प्रदक्षिणा करें, तो कुछ ही दिनों के बाद वे अनुभव करेंगी, कि उनमें उत्साह, जोश, जवानी और सौन्दर्य में वृद्धि होने लगी है।

## अब नेत्रहीन व्यक्ति भी देख सकते हैं

☆ एक नेत्रहीन व्यक्ति के लिए सारा जीवन अंधकारमय ही होता है, ऐसे ही दुर्भाग्य से पीड़ित लोगों के हृदय में प्रकाश की किरण जगाने का बेजोड़ उपाय, जिसके माध्यम से अब नेत्रहीन व्यक्ति भी देखने में पूर्णतया समर्थ हो सकता है। यद्यपि यह कठिन है, मगर फिर भी उच्चकोटि के संन्यासियों ने, तपस्वियों ने वह युक्ति ढूंढ निकाली है — यदि एक अन्धा

## आप जितना चाहें अपना वजन घटाइये

☆ वजन घटाने के लिए आज पूरे भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु पूरे विश्व में ही अलग-अलग प्रकार से प्रयत्न किये जा रहे हैं, परन्तु प्रयत्न करने पर भी इसका कोई सफल उपाय नहीं मिल पाया है।

चिकित्सा शास्त्र में भी ऐसी कोई औषधि अभी तक प्राप्त नहीं हुई, जिससे कि इस समस्या को दूर किया जा सके, और जो हैल्थ क्लीनिक जगह-जगह खुले हुए हैं, वे भी परहेज के द्वारा, योग आदि क्रियाओं के माध्यम से वजन को कम करने का उपाय बताते हैं, उससे कुछ समय के लिए तो इस समस्या से मुक्ति मिल जाती है, किन्तु थोड़े दिन पश्चात् ही सब किये-कराये पर पानी फिर जाता है, क्योंकि उन्हें भली-भांति उन क्रियाओं का ज्ञान नहीं है, जिनके माध्यम से वजन घटाया जा सके।

वजन कम खाने या दौड़ने से नहीं घटता, वरन् इसके लिए योगियों ने बताया है, कि यदि प्रातःकाल उठकर **''प्राणायाम क्रिया''** की जाय और सूर्योदय से पहले-पहले **''भस्त्रिका''** की जाय, भस्त्रिका का तात्पर्य है, बहुत धीरे-धीरे सांस
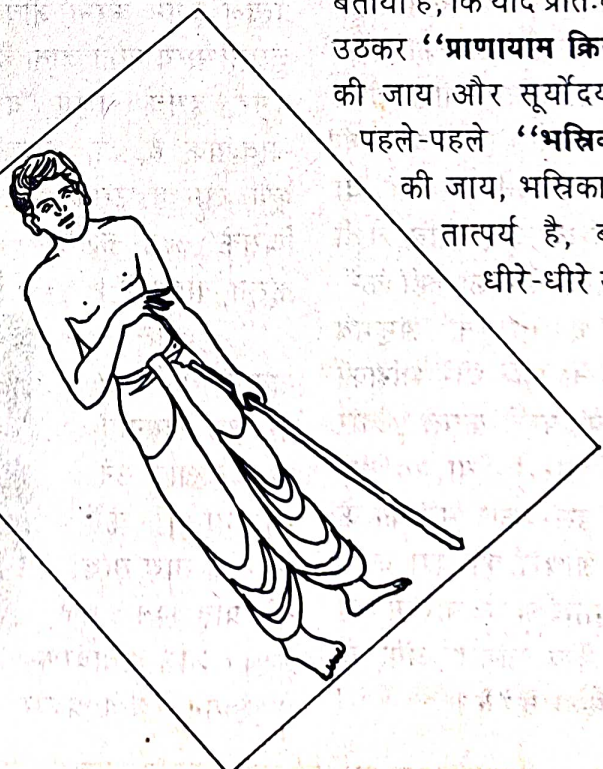
अन्दर की ओर लेना तथा बहुत तेजी के साथ सांस को बाहर फेंकना, इस प्रकार केवल ६० बार करने पर एक भस्त्रिका का क्रम पूरा होता है।

यदि उस समय तक इस भस्त्रिका का अभ्यास करें, तो धीरे-धीरे आपके शरीर की चर्बी कम होती जायेगी और आपका शरीर छरहरा, सुन्दर और स्वस्थ बना रहेगा। हृदय के रोगी तथा गर्भवती स्त्रियां या अत्यधिक वृद्ध व्यक्ति तेजी के साथ भस्त्रिका नहीं करें, जब वे समर्थता अनुभव करें, तो धीरे-धीरे भस्त्रिका बढ़ायें, पहले केवल ५ बार करें, फिर १५ या २० बार करें, इस प्रकार भस्त्रिका के एक आवृत्त को पूरा करें। इस भस्त्रिका के बारे में भी हम लेख अगले अंक में प्रकाशित करेंगे।

## इस बार नवरात्रि पर जगदम्बा के प्रत्यक्ष दर्शन कीजिए

☆ जगदम्बा के प्रत्यक्ष दर्शन करना या किसी देवी-देवता अथवा अपने इष्ट के प्रत्यक्ष दर्शन करना जीवन का सौभाग्य माना जाता है, मगर इसके लिए यह आवश्यक है, कि आपकी पूर्ण आस्था उसमें हो, जिसके आप दर्शन करना चाहते हैं।

हमने इस अंक में नवरात्रि पर्व पर कुछ साधनाएं दी हैं। आप उन साधनाओं को करने के साथ-साथ, यदि प्रातःकाल ४ बजे उठकर शांत वातावरण में सामने किसी प्रकार का चित्र नहीं हो, उस समय **"नवार्ण मंत्र"** का एक घंटे तक जप कर लें और यदि आपकी उसमें पूर्ण आस्था है, तो निश्चय ही भगवती जगदम्बा के साक्षात् दर्शन होते हैं, और वह पूर्णरूप से हृदय में स्थापित हो जाती है, फिर आप जब भी आंख बंद करेंगे, आपको भगवती जगदम्बा हृदय में प्रत्यक्ष स्थापित दिखाई देगी ही।

**मंत्र**

**"ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"**

## रुकिये, सफलता के लिए सम्मोहन की विधि अपनाइये

☆ **"सम्मोहन"** शब्द ही अपने-आप में सम्पूर्ण आकर्षण को समेटे है, क्योंकि यह शब्द सुनते ही हमारे अन्दर एक विद्युत प्रवाह सा हो जाता है, और प्रत्येक की यही कामना, आकांक्षा होती है, कि वह एक अद्वितीय, सम्मोहक व्यक्तित्व का स्वामी हो, और इसके लिए अनेकों विधियां प्रचलित हैं, किन्तु अभी तक जो विधियां हैं, वे सब पुरानी पड़ चुकी हैं, क्योंकि आज सम्मोहन की एक नयी पद्धति को प्रयोग में लाया जा रहा है, जो कि उच्चकोटि के संन्यासियों व योगियों ने खोज निकाली है, वह है— **"त्रिकूट ध्यान"**।

**त्रिकूट ध्यान का तात्पर्य है, आप अपनी दोनों भौंहों के बीच एक लाल बिन्दी लगाकर उसे देखने का प्रयास करें, और ऐसा २ या ३ मिनट तक करें,** मगर इसके लिए यह आवश्यक है, कि पहले अपने किसी नजदीकी डॉक्टर से परामर्श कर लें, तभी इस क्रिया को सम्पन्न करें।

आप बिना हाथ लगाये दोनों हाथों को ऊपर उठा करके लाल बिन्दी को देखने का प्रयत्न करें, कुछ दिनों के प्रयास के बाद वह लाल बिन्दी आपको दिखाई देने लग जायेगी. . .और जब वह दिखाई देने लग जाय, तो आप समझ लीजिये, कि आपकी आंखों में वह तेज, वह आकर्षण पैदा हो गया है, जिससे आप किसी को भी देख कर उसे पूर्णतः अपने अनुकूल बना सकते हैं। मगर इसका नित्य २ या ३ मिनट से ज्यादा अभ्यास नहीं करना चाहिए।
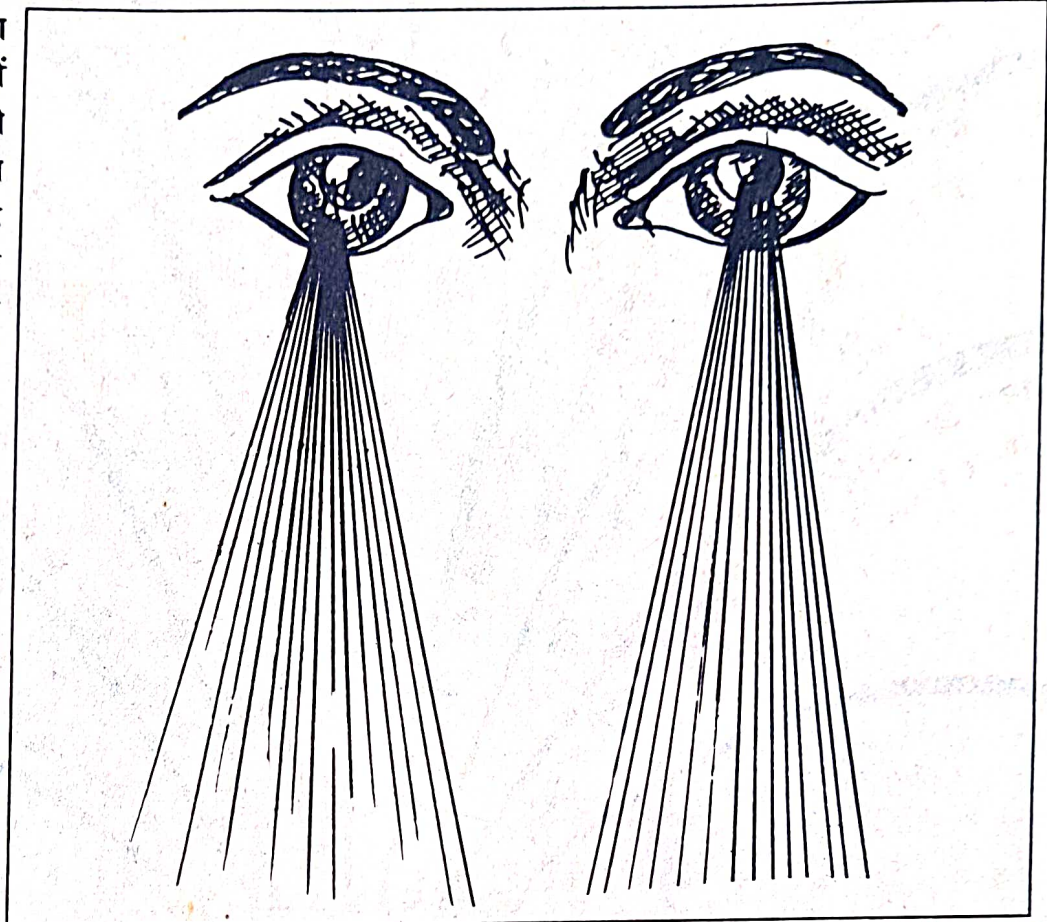
## अब आप-अपने पति पर नियंत्रण कायम कर सकती हैं

☆ यह गोपनीय नुस्खा है और आजमाया हुआ है। पति पर नियंत्रण प्राप्त करने का मतलब है—सुखी गृहस्थ जीवन, पति पर नियंत्रण प्राप्त करने का मतलब है—घर में तनाव से मुक्ति, पति पर नियंत्रण प्राप्त करने का मतलब है— समाज में सम्मान, सुरक्षा और श्रेष्ठता।

प्रत्येक स्त्री चाहती है, कि उसका वर्चस्व अपने पति पर बना रह सके, इसके लिए प्रत्येक स्त्री को केवल **गुरुवार** के दिन पीली साड़ी व पीली कंचुकी पहिन कर, सूर्योदय के आस-पास पालथी मारकर बैठ जाना चाहिए और निम्न मंत्र का केवल **१० मिनट तक उच्चारण** करना चाहिए—

**मंत्र**

**''ॐ रत्यै कामदेवाय नमः''**

इसमें किसी माला की आवश्यकता नहीं होती, और यह मंत्र प्रयोग सप्ताह में केवल गुरुवार के दिन ही किया जा सकता है।

साधना काल में केवल एक समय भोजन करें और उसमें बेसन से बनी चीज अवश्य खाएं।

**के**वल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे।

केवल **7777/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में ) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

**नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल 3,000/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।**


**सम्पर्क :** **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209 फेक्सः0291-32010
**गुरुधाम,** 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34 फोनः011-7192248, फेक्सः011-7186700

# हनुमान साधना सिद्धि

## संसार की सर्वश्रेष्ठ सिद्धियों में से एक है. . .और वह गोपनीय, अमोघ मंत्र, जब बजरंग बली साक्षात् प्रगट होते हैं।

---

**प्रातः स्मरामि हनुमन्त मनन्तवीर्यं,**
**श्रीरामचन्द्र चरणाम्बुज चंचरीकं।**
**लंकापुरी दहननन्दित देव वृन्दं;**
**सर्वार्थसिद्धि सदनं प्रथित प्रभावम्।।**

– अर्थात्, "मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के चरणारविन्दों के प्रति भ्रमर के समान मुग्ध प्रेमी, जिन्होंने रावण की नगरी लंका को जला कर दुःखी देवगणों को आनन्दित किया, जिनकी सिद्धि व बल-वीर्य से समस्त विश्व परिचित है, ऐसे भक्तवत्सल श्री हनुमान को मैं प्रातः बेला में अनन्य भक्ति-भाव से नमन करता हूं, जिससे वे कृपा कर अपने समान हमें भी पराक्रमी बनने का वरदान दें।"
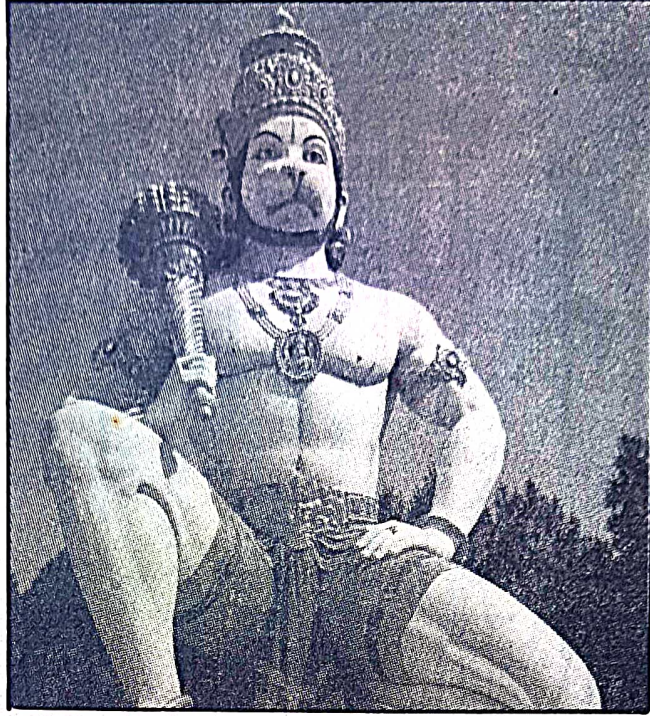
● संकट तें हनुमान छुड़ावै, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
● कौन सौ काम कठिन है जग में, जो कछु होय सके नांहि तुमसे।।
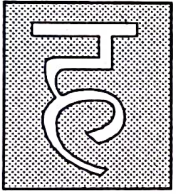
**हनुमान वीरता और बल के प्रतीक हैं, इसलिए इनका एक नाम "संकटमोचन" भी है अर्थात् ये संकटों को हरने वाले, रोग-शोक, व्याधि, पीड़ा, संताप का प्रशमन एवं शत्रुओं का दमन करने वाले एकमात्र देव हैं, जो संसार की सर्वश्रेष्ठ सिद्धियों में से एक माने जाते हैं।**

पुराणों के अनुसार वीर और दास इन दोनों रूपों में उपासकों ने अपनी-अपनी भावनानुसार इनकी पूजा-अभ्यर्थना की है। वीर के रूप में ये विघ्नविनाशक माने जाते हैं; और सुख-लाभ को प्राप्त करने के लिए इनके दास रूप की उपासना की जाती है। शास्त्रों में दोनों ही रूपों का ध्यान, मनन व चिन्तन दिया गया है। वीर के लिए राजसिक और दास के लिए सात्विक उपचारों का उल्लेख है।

शास्त्रवचनानुसार इन्हें "पवनसुत" और "अंजनी पुत्र" के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस सम्बन्ध में उद्धृत है, कि एक बार शाप भ्रष्ट हो 'पुंजिकस्थला' नाम की एक अप्सरा को वानरी रूप में अवतरित होना पड़ा, जब वह पूर्ण यौवनवान थी, उस समय अत्यंत दिव्य वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हो पर्वत पर विचरण कर रही थी, कि तभी उसे लगा, जैसे कोई उसके आस-पास है, अतः वह तीक्ष्ण स्वरों में बोली— "कौन है, जो पतिव्रता को स्पर्श करके अपना सर्वनाश करने के लिए दुराग्रही हो रहा है?"

अंजनी के क्रोधमय वचनों को सुनकर, उसके पास में विचरण कर रहे वायुदेव बोले— "हे देवी! करुणा के आगार, निराकार भगवान इस पृथ्वी लोक पर मनुष्य देह धारण कर अवतरित हो रहे हैं, जिससे कि वे असुरों का नाश कर पृथ्वी पर शांति स्थापित कर सकें, अतः उनकी सेवा के लिए भगवान शिव अपने ग्यारहवें रुद्र स्वरूप में मनुष्य देह धारण कर आना चाहते हैं। उनके अवतरण को सहज बनाने के लिए ही तुम्हारा और मेरा मिलन होना आवश्यक है, क्योंकि तुम्हारे गर्भ से ही पुत्र रूप में जन्म लेने का योग है"; और तभी से ये अंजनी पुत्र और पवनसुत के नाम से विख्यात हो गये।

पूरे भारतवर्ष में श्री हनुमान जी की पूजा-उपासना पूर्ण निष्ठा-भाव से की जाती है, विशेषकर पुरुष व बालक इनकी पूजा-उपासना करते देखे गये हैं, जिससे कि वे भी उनकी तरह ही सर्वगुण सम्पन्न बन सकें।

आज पृथ्वी पर अर्थ और काम धर्म से नियंत्रित नहीं हैं, जिसके कारण ही विभिन्न दोष पल्लवित, फलित हो रहे हैं, जिसमें फंसकर व्यक्ति देश, राष्ट्र व समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य से विमुख होता जा रहा है, और जो थोड़ी बहुत आध्यात्मिकता का अंश मात्र शेष है भी, वह भी झूठे, ढोंगी, दम्भी, पाखण्डियों की दुष्प्रवृत्तियों के कारण दूषित होता जा रहा है। ऐसी दुःखद स्थिति में, जबकि चारों ओर दुष्प्रवृत्तियों का ही बोलबाला है, और व्यक्ति पतन की गर्त में धंसता ही चला जा रहा है, ऐसे में उसके लिए तथा समाज

व देश के हितार्थ ही यह **"हनुमान साधना सिद्धि"** परमावश्यक मानी गई है।

चारों पुरुषार्थों को नियन्त्रित करने की क्षमता श्री हनुमान की उपासना से ही प्राप्त होती है, क्योंकि वे अष्ट सिद्धियों व नवनिधियों के दाता हैं, कुमति को समाप्त करने वाले हैं, सुमति को प्रदान करने वाले हैं।

**जन्ममृत्युभयहननाय सर्वक्लेशहराय च।**
**नेदिष्ठाय प्रेत भूत पिशाच भयहारिणे।।**

अर्थात् "श्री हनुमान जन्म और मृत्यु के भय को समाप्त करने वाले हैं, सम्पूर्ण कष्टों व बाधाओं का हरण करने वाले हैं। भूत, प्रेत, राक्षस आदि श्री हनुमान के नाम के प्रताप से ही भाग जाते हैं और मनुष्य भय रहित हो जाता है।

**श्री हनुमान साधना करने पर साधक को निम्न लाभ प्राप्त होते हैं–**

१. भगवान हनुमान की साधना करने पर साधक को बल, बुद्धि, वीर्य प्राप्त होने लगता है।
२. उसे साधना में संलग्न रहने पर समस्त लौकिक व परालौकिक सिद्धियां प्राप्त होने लग जाती हैं।
३. रोगों का शमन होता है।
४. मानसिक दुर्बलता की स्थितियों में उनसे सहायता प्राप्त होती है।
५. अहंकारियों का गर्व समाप्त हो जाता है।

**श्री हनुमान दीनों का क्लेश हरने के लिए दारुण दावानल के समान हैं, सर्वकाम पूरक हैं, संकट रूपी प्रलयघनघटा को विदीर्ण करने वाले और सर्वव्यापी हैं, ऐसे देव की साधना–उपासना करना ही सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य की प्राप्ति है।**

उपरोक्त फलों से फलीभूत कर देने वाली साधना सभी साधकों के सुख-लाभार्थ के लिए आवश्यक सिद्ध होती है तथा समस्त संकटों का विध्वंस करने में सहायक है।

## साधना विधिः

१. सर्वप्रथम साधक तारक मंत्र से प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य **"हनुमान सिद्धि यंत्र"**, **"मूंगा माला"** एवं **"हनुमत् कल्प"** प्राप्त कर लें।
२. इसके पश्चात् साधक चौकी पर लाल वस्त्र बिछा कर किसी भी ताम्र अथवा स्टील के पात्र में **रंगे हुए लाल चावलों की ढेरी पर** "हनुमान सिद्धि यंत्र" स्थापित कर लें।
३. पंचामृत से यंत्र स्नान एवं धूप, दीप, पुष्प, अक्षत आदि समर्पित करें। यंत्र के चारों कोनों में चार बिन्दियां लगाकर यंत्र-पूजन करें।
४. साधक स्वयं लाल अथवा संतरी रंग की धोती पहिनें तथा ऊपर गुरुनामी चादर ओढ़कर **पीले आसन** पर बैठ जायें।
५. ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए भूमि शयन करें। शुद्ध एवं सात्विक आहार एक समय ग्रहण करें।
६. इस साधना में दिशा **पूर्व या उत्तर** ही रखें।
७. साधना प्रारम्भ करने से पूर्व **गुरु-पूजन** एवं ४ माला गुरु मंत्र का जप एवं साधना के पश्चात् १ माला गुरु मंत्र का जप सम्पन्न कर साधना की पूर्णता एवं सफलता के आशीर्वाद की मांग पूज्य गुरुदेव से करें।
८. यह साधना **प्रातः ४ बजे से ७ बजे के मध्य एवं सायं ६ बजे से रात्रि १० बजे से पूर्व** सम्पन्न कर लेनी चाहिए।
९. इस साधना को किसी भी **मंगलवार** या **शनिवार** से प्रारम्भ किया जा सकता है।
१०. "मूंगा माला" से मंत्र-जप करते समय "हनुमत् कल्प" को अपने बायें हाथ में दबाये रखें, जिससे किसी भी प्रकार की विघ्न-बाधा साधना काल में साधक पर प्रभावी न हो सके।
११. यह साधना **तीन दिवसीय** है।
१२. इस साधना में साधक को मूल मंत्र का प्रतिदिन **५ माला मंत्र-जप** करना चाहिए।

**मंत्र**

**ॐ हुं हुं ह्सौः हनुमते हुं।**

१३. मंत्र-जप समाप्ति के पश्चात् बेसन के लड्डू का भोग श्री हनुमान जी को लगायें और प्रसाद को वितरित कर दें।
१४. ध्यान रखें, साधना काल में तीनों दिन तक तेल का दीपक लगातार जलता रहे।
१५. तीन दिन के पश्चात् यंत्र व माला अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें, एवं **२१ दिन तक उक्त मंत्र का जप एक माला** प्रतिदिन करें, तथा २१ दिन के पश्चात् यंत्र व माला किसी नदी अथवा तालाब में प्रवाहित कर दें।
१६. प्रतिदिन साधना के पश्चात् **हनुमान आरती** एवं **गुरु आरती** सम्पन्न करें।

**निश्चय ही यह साधना उन व्यक्तियों के लिए अत्यन्त ही लाभप्रद सिद्ध होगी, जो अपने-आप को शारीरिक एवं मानसिक रूप से दुर्बल समझते हैं। जिनका घर भूत-प्रेत बाधा से एवं तंत्र-प्रयोग से ग्रसित हो, ऐसी स्थिति में साधक इस साधना को सम्पन्न कर, अपने घर को तथा अपने-आप को पूर्ण दोष मुक्त बना सकते हैं। यदि इसी साधना को साधक सवा पांच लाख मंत्र-जप के अनुष्ठान के रूप में सम्पन्न करें, तो निश्चय ही सर्व सिद्धि प्रदायक महावीर हनुमान के साक्षात जाज्वल्यमान दर्शन प्राप्त होते ही हैं।**

सामग्री न्यौछावर :
हनुमान सिद्धि यंत्र - २४०/-, मूंगा माला - १५०/-
हनुमत् कल्प - ६०/-

# विशेष
# तंत्र रक्षा कवच
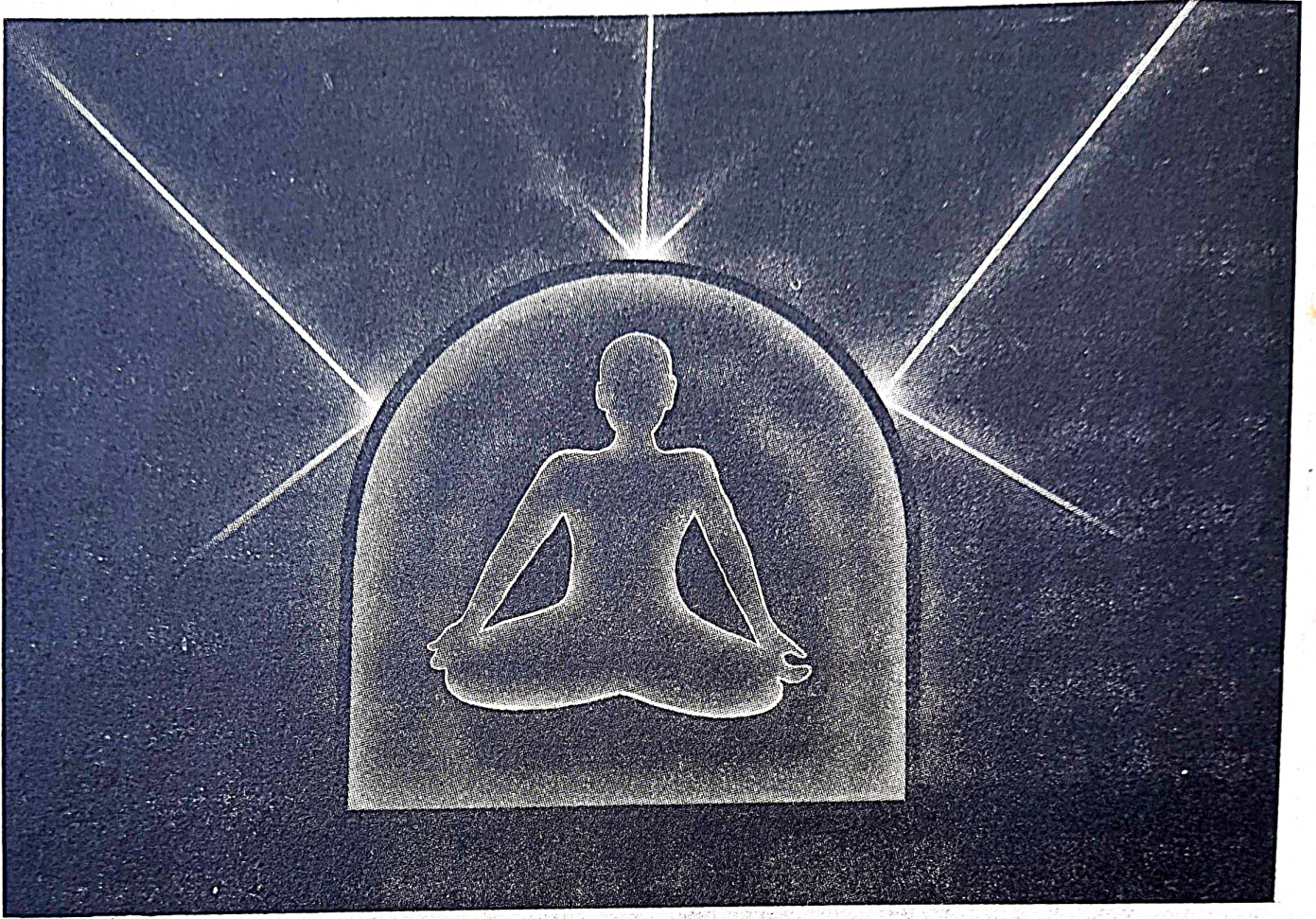
**जब जीवन में विष घुल जाता है और समस्याओं के
हल सही नहीं सूझते. . .यदि किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग करवा दिया जाए**

* कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो
* शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हों
* पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति बनना
* विवाह में बात बन - बनकर बिगड़ जाए
* घर या किसी निर्माण कार्य में बात न बन पाना
* ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो
* निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता चला जाना
* बार - बार ट्रांसफर की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हों

या फिर झगड़े- झंझटों में बार- बार फंस जाना, मुकदमेबाजी, जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं। **तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।**

संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्र सिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास. . .

**(न्यौछावर - ११०००/- मात्र) जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।**

**सम्पर्क :** **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः०२९१-३२२०९
**सिद्धाश्रम,** ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोनः०११-७१८२२४८, फैक्सः०११-७१८६७००

जीभ पर नवगंध
से सरस्वती बीजमंत्र
चांदी की शलाका से लिखा. . .
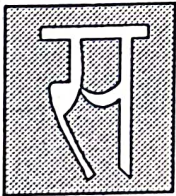
**स**रस्वती. . . ज्ञान और बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी. . . जिसने उस वालक के पूरे जीवन को ही संजा-संवार दिया, अपने ही रंग-रूप की भांति. . . अव तो वह जो कहता है, वह सटीक होता है और खरा उतरता है हर कसौटी पर. . . क्योंकि उस बालक के मन में साधना का वीज जो अंकुरित हो चुका है. . . क्या कुछ नहीं है उसके पास. . . यश, सम्मान, प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, समृद्धि सभी कुछ तो है. . . और आपके पास भी हो सकता है, यदि इस दिवस पर विशेष मुहूर्त में आप इस अद्वितीय प्रयोग को सम्पन्न कर लें तो. . .!

हमारे शास्त्रों आदि गें हर देवी-देवता के पूजन-विधान को भली-भांति सम्पन्न करने के लिए अलग-अलग दिन निर्धारित कर दिये गए हैं, जिसका प्रभाव उस दिवस विशेष में किये गए कार्यों पर पड़ता ही है, यदि उस दिवरा की विशिष्टता को समझकर कोई कार्य या पूजन-विधान सम्पन्न किया जाय, तो उससे सम्बन्धित देवी या देवता निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होते ही हैं।

**. . .और फिर उस बालक ने तो अल्प आयु में ही ज्ञान को अपने में आत्मसात् कर लिया था. . . जब वह बोलता है तो. . . शब्द ऐसे फूटते हैं, जैसे सरस्वती स्वयं ही उसके कण्ठ**

में विराजमान हो गई हो. . . उसने तो छोटी-सी आयु में ही चारों वेदों, ग्रंथों, उपनिषदों को कण्ठस्थ कर लिया था. . . जब, जिस विषय पर बोलना होता, शब्द स्वतः ही उसकी जिह्वा से उच्चरित होने लगते और सामने वाला आश्चर्यचकित रह जाता. . . किसी भी विषय पर धाराप्रवाह बोल देना, मानो वह उसमें सिद्धहस्त हो. . . ऐसा ही साबित होता है उस बालक को देखकर।

वह जो कह देता है, वही वेद वाक्य हो जाता है, वह जो बोल देता है, वही उपनिषद बन जाता है, वह जो समझा देता है, वही शास्त्रोक्त ज्ञान हो जाता है. . . तभी तो आज वह सर्वत्र पूजनीय है, वन्दनीय है।

— और नाम भी पड़ गया "ज्ञानानन्द", जैसा नाम वैसे ही गुण भी, यह तो पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद और चमत्कार का ही परिणाम है, जो वह आज सर्वश्रेष्ठ योगी के रूप में एक प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति है. . . और पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धानत् है।

याद आता है, जब वह घर छोड़कर भटकता हुआ पूज्य गुरुदेव की शरण में पहुंचा, उसके रहने का भी कोई ठिकाना नहीं, और न ही खाने-पीने की कोई उचित व्यवस्था. . . किन्तु कुछ पाने की अभिलाषा और दृढ़ संकल्प, इस खजाने से वह मालामाल था। पूज्य गुरुदेव ने भी अपने पास रहने की स्वीकृति उसे प्रदान की, और उसकी दृढ़ता की कठोर परीक्षा ली, किन्तु वह हर परीक्षा में उत्तीर्ण होता चला गया. . . शायद वह गुरुदेव के स्नेह और ममतामयी दृष्टि का ही प्रभाव था, जिसने उसे विजयी किया. . .

और वह क्षण भी आ गया, जब गुरुदेव ने प्रसन्नचित्त हो ज्ञान के आलोक को उसके भीतर समाहित कर दिया. . . वह तो स्वयं आश्चर्य में पड़ गया। यह तो गुरुदेव की उस पर असीम

**अद्वितीयेन बीजेन, रजताभिशलाकया।**
**नवगंधमशीं कृत्वा जिह्वायां लिख्यते यदि।।**
**मेधां दिव्यां समालभ्य ज्ञान भारनुतः सदा।**
**ज्ञानानन्द वदाभासः बालकः तदुपासकः।।**

**अर्थात् "सरस्वती के बीजमंत्र को चांदी की शलाका से जिह्वा में लिखा जाय, तो अलौकिक मेधा से सम्पन्न दिव्य ज्ञान के भार से विनम्र वह बालक ज्ञानानंद की तरह मेधावी और ज्ञान सम्पन्न होगा ही।**

कृपा थी, जो उन्होंने उसे आशीर्वाद प्रदान कर उस विशिष्ट क्रिया को सम्पन्न किया. . . किसी के भी सामने यदि वह अपने मनोभावों को व्यक्त करने का प्रयास करता, तो एक-दो शब्द बोलते ही उसकी आंखों से अश्रुधारा बहने लगती. . . क्योंकि आज वह जो कुछ भी है, उस बीजमंत्र के प्रभाव से ही है, जिसे गुरुदेव ने उसकी जीभ पर चांदी की शलाका से अंकित किया था।

गुरुदेव की डायरी से प्राप्त इस घटनांश को यहां पाठकों और साधकों के लाभार्थ हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे कोई भी बालक ज्ञानानन्द बन सकता है. . . और यदि जीवन में सुबुद्धि, सुमार्गी पुत्र या पुत्री की अभिलाषा हो तथा बालक की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने के लिए यह प्रयोग विशेष रूप से लाभदायक सिद्ध होगा ही, यदि गुरुदेव के प्रति उसका हृदय पूर्ण विश्वास के साथ श्रद्धानत् हो, तो शीघ्र ही यह प्रयोग प्रभावकारी सिद्ध होता है।

इस प्रयोग को माता-पिता दोनों में से कोई भी सम्पन्न कर सकता है, जिससे कि वह बालक पूर्व संस्कारित हो सके. . . और डॉक्टर, इंजीनियर, कुशल वक्ता आदि बनकर, उनकी मनोकामनाओं को पूर्ण कर, उनके सपने को साकार कर सके, वह समाज में ही नहीं, अपितु देश-विदेश में भी प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति के साथ-साथ श्रेष्ठ ज्ञानी एवं विद्वान् बन सके!

. . .और क्या चाहिए उन माता-पिता को, उनके लिए तो इससे ज्यादा प्रसन्नता की और कोई बात हो भी क्या सकती है, और उस बालक के स्वयं के लिए भी। पूज्य गुरुदेव की अनुमति के पश्चात् ही इस **सरस्वती सिद्धि प्रयोग** को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है, जो अपने-आप में ही अद्भुत और आश्चर्यजनक है।

## प्रयोग विधिः

१. **सरस्वती माला, ( 2" X 2" ) सरस्वती यंत्र, मेधिनी गुटिका, चांदी का पतला-सा तार** इस सामग्री को, जो कि प्राण-प्रतिष्ठा युक्त एवं मंत्रसिद्ध होनी आवश्यक है, साधक पहले से ही मंगवा कर रख लें।
२. **२६/०६/६५ सरस्वती पंचमी, शुक्रवार या अन्य किसी भी शुक्ल पक्ष के सोमवार के दिन** इस प्रयोग को सम्पन्न करें।
३. **प्रातः ४.३० से ७ बजे के मध्य** इस प्रयोग को सम्पन्न करें।
४. **पूर्व या उत्तर दिशा** की ओर मुख करें।
५. साधकों को चाहिए, कि वे स्नान आदि क्रियाओं से निवृत्त होकर, पीले वस्त्रों को धारण कर तथा गुरु चादर ओढ़कर **पीले आसन** पर बैठ जायें।
६. अपने सामने एक छोटी चौकी पर, पीला कपड़ा बिछाकर एक प्लेट पर "सरस्वती यंत्र" को स्थापित करें।
७. यंत्र को जल से स्नान कराकर उस पर चन्दन या केसर से तिलक करें।
८. फिर पवित्रीकरण, आचमन आदि क्रिया कर साधक प्राणायाम करें।
९. प्राणायाम करने के बाद यथाविधि **"दैनिक साधना विधि"** पुस्तक के अनुसार **गुरु-पूजन** कर एवं **गुरु मंत्र-जप** अपनी इच्छानुसार सम्पन्न करें।
१०. इसके बाद अक्षत, धूप, दीप से यंत्र का पूजन करें।
११. इसके पश्चात् पहले "भगवती सरस्वती" का भावपूर्ण हृदय से ध्यान करें—

**शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमामायां जगद्व्यापिनीं,**
**वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।**
**हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां;**
**वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।**

अर्थात् "स्वच्छ वस्त्र धारण किये हुए ब्रह्ममयी, शक्तिरूपिणी, सर्वत्र व्याप्त, वीणा और पुस्तक हाथों में धारण किये हुए, अभय मुद्रा युक्त अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने वाली, एक हाथ में स्फटिक माला धारण किये हुए, पद्मासन में विराजमान, बुद्धिदायिनी भगवती सरस्वती को मैं नमन करता हूं।

१२. "मेधिनी गुटिका" को यंत्र के दाहिनी ओर स्थापित करके उसका भी गंध, अक्षत से पूजन करें।
१३. इसके बाद नवगंध (कस्तूरी, केसर, सिन्दूर, विन्दार, जवाकुसुम, प्रोवाच्य, हरिद्रा, रसोद्भूत, चन्दन) से "चांदी की शलाका" द्वारा साधक या बालक की जिह्वा पर सरस्वती बीज को अंकित करें।
१४. इसके पश्चात् दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प लेते हुए, अपने नाम-गोत्र एवं मनोकामना (उत्कृष्ट बुद्धि और ज्ञानवर्द्धन के लिए) की पूर्ति हेतु मैं इस सरस्वती मंत्र का जप कर रहा हूं, ऐसा कहकर जल को जमीन पर छोड़ दें।
१५. उपरोक्त "सरस्वती माला" से निम्न मंत्र का **११ माला** जप करें—

**मंत्र**

**ॐ ऐं वाग्वादिन्यै ऐं ॐ।**

१६. मंत्र-जप के पश्चात् उस गुटिका को बालक या साधक अपने गले में लाल धागे से पिरोकर पहिन लें।
१७. यह एक दिन का प्रयोग है।
१८. इस मंत्र का प्रतिदिन एक माला जप करना चाहिए, इससे और अधिक लाभ की सम्भावना बनती है।
१९. यंत्र को आने वाली पूर्णमासी के दिन प्रातः नदी या तालाब में विसर्जित करें।

इस प्रयोग को प्रत्येक पढ़ने वाले बच्चों को अवश्य करना चाहिए, इससे उनकी बुद्धि, ज्ञान और चेतना की वृद्धि अवश्य होती ही है, क्योंकि यह प्रयोग सुपरीक्षित है।

सामग्री न्यौछावर :
सरस्वती माला - ३००/-, सरस्वती यंत्र (2" X 2") - १२०/-,
मेधिनी गुटिका - ६०/-

**पूज्य गुरुदेव की वाणी में साधना के एक-एक रहस्य को उजागर करते ये अद्वितीय कैसेट्स. . . जिनके माध्यम से हजारों साधकों ने साधना में सफलता प्राप्त की है. . . . यह मात्र कैसेट ही नहीं, आपके जीवन की धरोहर है, आने वाली पीढ़ियों के लिये धरोहर है।**

***पूज्य गुरुदेव द्वारा साधना शिविरों में कराये गये ये प्रयोग***

**चैत्र नवरात्रि 1995, कराला**

चामुण्डा प्रयोग
महाकाली प्रयोग
महालक्ष्मी प्रयोग
कूष्माण्ड प्रयोग
तारा महाविद्या प्रयोग
कात्यायनी प्रयोग
गुरु हृदय स्थापन प्रयोग
आरती संग्रह
भजन संग्रह

**कौस्तुभ जयन्ती 1995, इलाहाबाद**

पूर्ण पौरुष प्राप्ति प्रयोग
काल ज्ञान विवरण
काल ज्ञान प्रयोग
पूर्णत्व सिद्धि
पूर्णत्व ब्रह्म दीक्षा
षोडशी त्रिपुर साधना
सशरीर सिद्धाश्रम प्राप्ति प्रयोग
राजयोग दीक्षा
मनोकामना पूर्ति प्रयोग एवं गुरु पूजन

**वीडियो कैसेट**

नवरात्रि शिविर 1995
कौस्तुभ जयन्ती 1995
शिव पूजन
कुण्डलिनी
शक्तिपात
हिप्नोटिज्म रहस्य
साधना, सिद्धि एवं सफलता
लक्ष्मी मेरी चेरी

**ऑडियो प्रति कैसेट : 30/-** **वीडियो प्रति कैसेट : 200/-**

**सम्पर्क**

**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010
**सिद्धाश्रम,** 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7186700

भगवान श्रीकृष्ण ने पूर्ण पुरुष और महामानव के रूप में
धर्म पालन, अध्यात्म विचार, ज्ञान-विज्ञान मैत्री, गुरु भक्ति,
मातृ-पितृ भक्ति, पत्नी प्रेम, स्त्री जाति के प्रति आदर,
राजनीति, रण कौशल, विविध कला निपुणता,
अत्याचार तथा अत्याचारियों का आदि शमन,
समस्त क्षेत्रों में अपना आदर्श कार्य प्रस्तुत
कर मानवता का महान आदर्श सम्पूर्ण
जगत् के समक्ष प्रस्तुत किया है।

# दुर्विज्ञेयं सुविज्ञेयं श्रीकृष्णं प्रणमाम्यहम्

संन्यासीप्रवर
श्री आद्यशंकराचार्य
ने जब अपनी
माता की मुक्ति के लिए
भगवान श्रीकृष्ण
से प्रार्थना की,
तो वे
शंख, चक्र, गदा, पद्म
तथा समस्त निज गुणों
से युक्त हो श्री सम्पन्न
रूप में उनके सामने
प्रकट हुए व
उन्हें कृतार्थ किया।
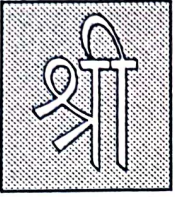
कृष्ण जन्मोत्सव का महान पर्व १८.८.९५ को अत्यधिक धूमधाम से सम्पूर्ण आर्यावर्त में ही नहीं, पूरे विश्व में मनाया जाता है। आज ही के दिन सच्चिदानन्द स्वरूप समस्त अवतारों के मूल अवतारी पूर्ण पुरुषोत्तम, योगीश्वर भगवान श्रीकृष्ण का पूर्णाविर्भाव अपने समस्त अंशों सहित हुआ।

यह उनकी अहैतु की कृपा है, जो उन्होंने सारस्वत कल्प में अपनी सम्पूर्ण कलाओं के साथ इस भूमण्डल को सौभाग्यशाली व पुण्य प्रदायक बनाया।

किसी भी कल्प में आविर्भाव हुए भगवान की वस्तुतः न तो कर्मजनित, रजोवीर्यसम्भूत पंचभौतिक देह होती है, न ही प्राकृत जीवों की तरह जन्म होता है। भगवान की मंगलमय श्री देह त्रिविध मायिक देह नहीं होती। उनका दिव्य शरीर न कभी बनता है, न कभी नष्ट होता है, उनका न कभी जन्म होता है, न मरण होता है।

हां! इतना अवश्य है, कि उनकी दिव्य देह, जो नित्य सत्य भगवद देह है, वह जन्म लेती हुई सी अन्तर्ध्यान होती प्रतीत होती है, यही कारण है, कि उन्हें अजन्मा, अविनाशी कहा गया है।

इन्हीं अजन्मा, अविनाशी भगवान को विभिन्न श्रुतियों ने, ऋषियों ने, योगियों ने विभिन्न विशेषणों से अलंकृत कर अपनी-अपनी ज्ञान-क्षमता के आधार पर विवेचन करने का प्रयास किया है।

सबका आदिकरण, सृष्टि, स्थिति तथा प्रलय का आधार, सर्वज्ञ, सर्वमय, अजन्मा, सर्वाधार, परिपूर्णतम, अद्वितीय, एक परम गूढ़, परम ज्योति स्वरूप, सर्वशक्तिमान, सर्वशक्त्याधार कहा गया है।

भगवान शिव, ब्रह्मा, नारद, व्यास देव, भीष्म पितामह आदि असंख्य महानुभावों ने भगवान श्रीकृष्ण के पूर्ण पुरुषोत्तम होने का वर्णन कर उनकी आराधना तथा पूजा को अपने जीवन का परम सौभाग्य माना है।

''श्रीमद्भगवद् गीता'' में स्वयं भगवान के वाक्य हैं—

**''अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।''**

अर्थात् मैं ही समस्त जगत् का प्रभव और प्रलय हूं, सबका आदिकरण हूं।

**''बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।''**

अर्थात् समस्त जीवों का, समस्त भूतों का सनातन बीज मैं ही हूं।

**''अहं सर्वस्व प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते।''**

अर्थात् मैं ही सभी के उत्पत्ति का कारण हूं और मुझसे ही समस्त जगत् गतिशील है।

**अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।**
**प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया।।**

अर्थात् मैं अजन्मा, सर्वव्यापक, समस्त भूतों में ईश्वर रूप से निवास करता हूं; और स्वयं की प्रकृति से अधिष्ठित होता हुआ अपनी ही योग माया से आविर्भूत होता हूं।

श्रीमद्भगवद् गीता में अनेकों ऐसे उद्धरण हैं, जिनसे भगवान श्रीकृष्ण की विराटता व सम्पूर्णता का पूर्ण आभास होता है। गीता में ही श्री **'रुद्र देव'** कहते हैं—

**''त्वं हि ब्रह्म परं ज्योतिर्गूढ ब्रह्माणि. . .''**

अर्थात् आप ही परमब्रह्म, परम ज्योति स्वरूप हैं, आपका स्वरूप परम गूढ़ है।

इसी प्रकार **''महाभारत''** में भीष्म पितामह ने श्रीकृष्ण के महत्त्व का वर्णन करते हुए कहा है—

**कृष्ण एव हि लोकानामुत्पत्तिरपि चाव्ययः।**
**कृष्णस्य हि कृते विश्वमिदं भूतं चराचरम्।।**

अर्थात् श्रीकृष्ण ही समस्त लोकों की उत्पत्ति तथा प्रलय के आधार हैं, यह सम्पूर्ण विश्व और समस्त प्राणी श्रीकृष्ण की क्रीड़ा के हेतु हैं। श्रीकृष्ण ही सनातन कर्ता हैं, सभी भूतों से परे, अव्यक्त प्रकृति एवं अच्युत हैं, अतः सबके पूज्यतम हैं।

महाभारत में ही **'सर्वज्ञ देवर्षि नारद'** का कथन है—

**कृष्णं कमलपत्राक्षं नार्चयिष्यन्ति ये नराः।**
**जीवनमृतास्तु ते ज्ञेया न सम्भाष्याः कदाचन।।**

अर्थात् जो लोग कमलनयन श्रीकृष्ण की पूजा नहीं करते, वे जीवित ही मृतवत होते हैं, और उनके साथ वार्तालाप भी नहीं करना चाहिए।

— ऐसे अनेक वाक्य विभिन्न असंख्य स्थानों पर कहे गये हैं। श्रीकृष्ण के भक्तों, संतों के जो प्रत्यक्ष अनुभव हैं, वे सर्वथा अकाट्य तथा प्रमाण स्वरूप हैं।

श्रीकृष्ण का अवतार अत्यन्त गूढ़ और जटिल बन गया है, क्योंकि विभिन्न भक्तों ने अपनी-अपनी भावना के अनुसार देखा और वर्णन किया है— कोई उन्हें चतुर्भुज नारायण का अवतार कहता है, तो कोई उन्हें समस्त देवता का सम्मिलित अंश स्वरूप कहता है, तो कोई उन्हें नारायण ऋषि का अवतार कहता है।

**''ब्रह्मवैवर्त पुराण''** में स्पष्ट किया है— जब भगवान श्रीकृष्ण का अवतार हुआ, तो उस समय चतुर्भुज नारायण पृथ्वीपति विष्णु और नारायण ऋषि लीन हो गये। इन्हीं सब कारणों से यह कहा गया है, कि जो भगवान के दिव्य जन्म और कर्म के तत्त्व को जान लेता है, वह शरीर-त्याग के बाद भगवान में लीन हो जाता है।

**ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।**
**ज्ञान वैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा।।**

अर्थात् ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छः का नाम ''भग'' है, और ये जिसके स्वरूपभूत होते हैं— वह ''भगवान'' है।

**ऐश्वर्य** – उस सर्ववशीकारिता शक्ति को कहते हैं, जो सभी पर निर्बाध रूप से अपना प्रभाव स्थापित कर सके।

**धर्म** – उसका नाम है, जिससे सभी का मंगल और उद्धार होता है।

**यश** – अनन्त ब्रह्माण्डव्यापिनी मंगल कीर्ति 'यश' है।

**श्री** – ब्रह्माण्ड की समस्त सम्पत्तियों का जो एकमात्र मूल स्वरूप महान शक्ति है, उसे 'श्री' कहते हैं।

**वैराग्य** – साम्राज्य, शक्ति, यश आदि में जो स्वाभाविक अनासक्ति है, वह 'वैराग्य' है।

**ज्ञान** – ज्ञान तो स्वयं भगवान का दिव्य स्वरूप ही है। सर्वकाल की समस्त वस्तुओं के साक्षात्कार को 'ज्ञान' कहते हैं।

इन सभी गुणों से सहज सम्पन्न हैं ''श्रीकृष्ण'', जिन्होंने एक आदर्श मानव की तरह जीवनयापन किया और निष्काम भाव का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया।

किन्तु भगवान श्रीकृष्ण मात्र ऐश्वर्य रूप ही नहीं हैं, वे मधुर रूप भी हैं, उनमें सम्पूर्ण ऐश्वर्य और सम्पूर्ण माधुर्य का पूर्ण प्रकाश है, इसीलिए वे 'पूर्ण' हैं और 'भगवान' हैं।

श्रीकृष्ण में प्रकारान्तर से चौंसठ गुण बताये गये हैं। इनमें से पचास तो उच्चभूमि पर आधारित जीवों में भगवत कृपा से प्रकट हो सकते हैं, किन्तु इसके अतिरिक्त पांच गुण ऐसे हैं, जो श्री रुद्र में ही होते हैं, पांच गुण श्रीपति में प्रकट हैं।

किन्तु चार ऐसे गुण हैं, जिनका पूर्ण प्राकट्य केवल मात्र श्रीकृष्ण में ही है। वे गुण हैं— **लीला माधुरी, प्रेम माधुरी, रूप माधुरी** और **वेणु माधुरी** इन चारों दिव्य गुणों के कारण ही श्रीकृष्ण 'मधुरातिमधुर' हैं।

भारतवर्ष में ऐसी कोई भाषा नहीं है, जिसमें श्रीकृष्ण का वर्णन न हो। जितने भी प्रसिद्ध साधु, संत हुए हैं, सभी पर श्रीकृष्ण भक्ति का प्रभाव देखने में आता है।

हमारी प्राचीन भाषा संस्कृत में श्रीकृष्ण पर विशद साहित्य तो है ही, हिन्दी, बंगला, मराठी, उड़िया, आसामी, कन्नड़, तेलगू, तमिल आदि भाषाओं के साहित्य भी श्रीकृष्ण के गुणगान से भरे हुए हैं।

भारतवर्ष के वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य तो श्रीकृष्ण के भक्त हैं ही, साथ ही अद्वैत वेदान्त के प्रवर्तक भगवतपाद आदिशंकराचार्य ने भी श्रीकृष्ण की आराधना को जीवन का सौभाग्य मान कर इतने अधिक भावपूर्ण स्तोत्रों की रचना की है, जिनका पठन कर मन श्रीकृष्ण के माधुर्य में आसक्त हो उठता है।

भगवान शंकर नित्य श्रीकृष्ण की मानस पूजा करते थे, जिसका विधान उन्होंने "भगवत मानस पूजा" नाम से लिखा है, इसके अतिरिक्त उन्होंने श्री कृष्णाष्टक, श्री गोविन्दाष्टक और श्री अच्युताष्टक आदि अनेक स्तोत्रों की रचना की। श्री शंकराचार्य जो ध्यान किया करते थे, वह इस प्रकार है—

**हृदम्भोजे कृष्णः सजलजलदश्यामलतनुः,**
**सरोजाक्षः स्रग्वी मुकुटकटकाद्याभरणवान्।**
**शरद्राकानाथप्रतिमवदनः श्रीमुरलिकां;**
**वहन् ध्येयो गोपीगणपरिवृतः कुंकमचितः।।**

अर्थात् कमलवत आसन पर सजल जलधर के समान श्याम तन वाले कमलनयन श्रीकृष्ण विराजमान हैं, उनके गले में वैजयन्ती माला, शीश पर मुकुट, हाथों में कंकण और प्रत्येक अंग में विविध आभूषण शोभायमान हैं। उनका श्रीमुख शरद चन्द्र के समान मनोहारी है, उन्होंने अपने हाथ में मुरली धारण कर रखी है, केसर युक्त चन्दन से वे श्रृंगारित हैं, और उन्हें गोप तथा गोपरमणियों ने चारों तरफ से घेर रखा है।

**"प्रवोध सुधाकर"** नामक ग्रंथ में 'श्री शंकर' ने यह स्पष्ट किया है, कि— भगवान श्रीकृष्ण न तो अंशावतार हैं, न एकदेशीय अपितु वे तो समस्त अवतारों के प्रवर्तक, सर्वगत, सर्वात्मा, साक्षात् परब्रह्म हैं। वे भगवान श्रीकृष्ण को ब्रह्मा, विष्णु, महेश से सर्वथा पृथक, विकार रहित और सर्वश्रेष्ठ एक सच्चिन्मयी नीलिमा बताते हैं— **"कृष्णो वै पृथगस्ति कोऽप्यविकृतः सच्चिन्मयी नीलिमा।"**

शांकर सिद्धान्त के प्रख्यात अनुयायी **"स्वामी श्री मधुसूदन सरस्वती जी',** जिन्होंने "अद्वैत सिद्धि" नामक वेदांत ग्रंथ की रचना की, वे भगवान श्रीकृष्ण के अतिरिक्त किसी अन्य तत्त्व के अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं करते हैं— "जिनके हाथ वंशी से सुशोभित हैं, जो पीताम्बर से सुशोभित हैं, जिनका मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान सुशीतल है और जिनके नयन कमलवत हैं, उन श्रीकृष्ण से परे अन्य कोई तत्त्व मेरी समझ से तो है ही नहीं।

भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी प्रत्येक लीला में सर्वथा निष्काम भाव का पालन करके आसक्ति कामना से रहित कर्मयोगी का और अहंकार रहित समत्वपूर्ण व्यवहार करके समदर्शी ब्रह्मज्ञानी का आदर्श मात्र वाणी से नहीं, स्वयं के आचरण से प्रस्तुत किया।

अनिवर्चनीय, अचिन्त्यानन्त, परस्पर विरुद्ध गुण धर्माश्रयी श्रीकृष्ण के अनंत गुण हैं। उनका जितना स्मरण किया जाय, उससे कहीं ज्यादा मंगल होता है। उनके प्राकट्य दिवस पर उनका स्मरण कर उनसे प्रार्थना करते हैं—

"हे परिपूर्ण ब्रह्म! हे परमानन्द!! आपकी महिमा का वर्णन तो महान योगी भी न कर सके, तो मैं तो मात्र एक रजकण के समान हूं। आप बहुत महान हैं, जो आपने मुझ जैसे नगण्य को अपना आश्रय प्रदान किया। मेरे अन्दर प्रेम, माधुर्य, त्याग, समर्पण कोई भी गुण नहीं है। तुम्हारी मधुर छवि निहारते हुए मन में सिर्फ एक यही भाव आता है, कि कभी तुमसे अलग न रहूं। चाहे समस्त सुखों का भी मुझे त्याग करना पड़े, तब भी मुझे कोई कष्ट नहीं है, यदि तुम्हारी चरण-धूलि में आश्रय मिल जाय। यदि अपने समीप नहीं रख सकते, तो इतनी कृपा कर दो, कि यह तन कहीं भी रहे, किन्तु मेरा मन निरन्तर तुम्हारी मुरली की धुन पर नृत्य करता रहे, और मेरे नेत्र हर पल तुम्हारे रूप-रस का पान करते रहें।"

# कलौ चण्डी विनायकौ

## पूरे नौ दिन
## अद्भुत सिद्धिदायक हैं
## पूरे वर्ष के लिए आश्चर्यजनक, उन्नतिदायक, श्रेष्ठ एवं पूर्ण सफलता प्रदायक
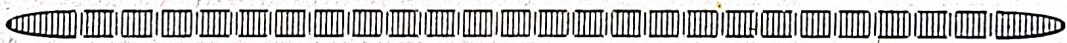
अनन्त शक्ति सम्वलित जगज्जननी भगवती दुर्गा, जो अपने समस्त रूपों में वरदायिनी स्वरूप से आपूरित होकर समस्त विश्व के कल्याण के लिए नवरात्रि की शुभ बेला पर भक्तों को अभीष्ट प्रदान करने के लिए अपने करुणामयी स्वरूप में स्थित रहती ही है. . . ऋषियों, मुनियों और योगियों के द्वारा सतत उपास्या और आराध्या मां दुर्गा साधकों के लिए सिद्धिदात्री होती ही है।
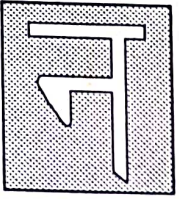
नवरात्रि तो रात्रि का पर्व है, जैसा की इसके शब्द से ही स्पष्ट है। रात्रि का अर्थ है— जीवंतता, चैतन्यता, उल्लासमयता. . . और यह प्राप्त हो सकता है साधनात्मक बल से प्राप्त संचित शक्ति को अपने अन्दर समाहित करने पर।

शक्ति को जानना ही पर्याप्त नहीं होता, शक्ति को जीवन में परिचय कराना ही पर्याप्त नहीं होता, शक्ति को जीवन में उतारना और उतारने के साथ-साथ उसे किस प्रकार से नियंत्रित किया जाय, यह आवश्यक है।

नवरात्रि का अर्थ यह नहीं है, कि हम रात्रि को जागरण करें, भजन-कीर्तन आदि करके दिन काट दें, रात्रि का तात्पर्य है, जब प्रकृति निस्तब्ध हो, शांत हो, उन क्षणों का हम भली-भांति उपयोग करें, उन क्षणों को अपने जीवन में उतारें, और वह सब कुछ प्राप्त कर लें, जो सामान्यतः प्रयत्नपूर्वक भी सम्भव नहीं हो पा रहा हो।

**शास्त्रों में कहा गया है, कि साधक इस शक्ति पर्व पर वह सब कुछ प्राप्त कर ले, जो उसके भाग्य में नहीं लिखा है, क्योंकि हम ऋषि पुत्र हैं, शक्ति पुत्र हैं, अगर ऐसा न होता, तो नवरात्रि रची ही नहीं जाती, दुर्गा के विग्रह की पूजा-अर्चना क्यों की जाती. . . यह प्रतीक है, हमें स्मरण दिलाने का, कि हम शस्त्र धारिणी दुर्गा के तेजस्वी पुत्र हैं, और हमें इस नवरात्रि पर्व पर साधना रूपी शस्त्र को उठाकर अपने जीवन के दुःखों को जड़ से काट देना है. . . और हम समर्थ हैं, यदि नौ दिन तक विशिष्ट मुहूर्तों का लाभ उठाकर उन शस्त्रों के माध्यम से जीवन के अभावों से मुक्त हो सकें।**

१. जीवन में सुख हो, पूर्णतः स्वस्थ हों।
२. धनागम के स्रोत खुल सकें— व्यापार में वृद्धि हो, नौकरी में उन्नति प्राप्त हो।
३. पुत्र-सुख की प्राप्ति हो।
४. भवन निर्माण एवं वाहन सुख की प्राप्ति हो सके।
५. शत्रु परास्त हों।
६. स्त्री-पुरुष दोनों ही अखण्ड भाग्यवान बन सकें
७. भाग्यदोय हो।
८. राज्य सम्मान, राजनीतिक श्रेष्ठता व सफलता प्राप्ति के अवसर प्राप्त हो सकें।
९. समस्त मनोवांछित कार्यों की पूर्ति हो।

उपरोक्त नौ बिन्दु ही सही अर्थों में नवरात्रि की भावना हैं। नवरात्रि का तो एक-एक दिन प्रयोग करने वाला है, जब साधनाओं में सफलता मिलने लगती है. . . और वह सब कुछ भी पूरा होने लगता है, जैसा आप चाहते हैं।

केवल मात्र नौ दिनों तक एक ही मंत्र-जप को जपने से यह सब कुछ प्राप्त नहीं हो जाता, उसके लिए तो दुर्गा के नौ रूपों— **१. शैलपुत्री, २. ब्रह्मचारिणी, ३. चन्द्रघंटा, ४. कूष्माण्ड, ५. स्कन्द माता, ६. कात्यायनी, ७. कालरात्री, ८. महागौरी, ९. सिद्धिदात्री** की साधना-उपासना करनी ही होगी, तभी वह सब कुछ प्राप्त हो सकेगा, जो जीवन में आवश्यक है, महत्त्वपूर्ण है।

आज जो नवरात्रि मनायी जाती है, उसमें "जय अम्बे-जय अम्बे" करते-करते हम नौ दिन यूं ही काट देते हैं, और उसका कोई अर्थ ही नहीं रह जाता. . . अगर इसको सार्थक बनाना है, तो साधना के पक्ष को लेना ही होगा. . . तभी जीवन में जीवंतता व जाग्रति आ सकेगी, तभी आनन्द प्राप्त हो सकेगा।

नवरात्रि की इन्हीं सद्भावनाओं को एक समृद्धि पर्व बना देने के लिए, अपने जीवन में उतार लेने के लिए और स्थायी रूप से घटना बना देने के लिए, साधक को चाहिए, कि वह इस पर्व का लाभ उठाकर अपने जीवन को पूर्ण कर ले. . . और जब ऐसा हो जाता है, तब समस्त भौतिक स्थितियां उस साधक के सामने हाथ बांधे खड़ी रहती हैं।

इसके लिए **साधकों को चाहिए, कि वे पहले से ही इन साधनाओं को सम्पन्न करने हेतु नवरात्रि पैकेट, जोकि मंत्रसिद्ध व प्राणश्चेतनायुक्त हो, मंगवाकर रख लें, वैसे तो इस सामग्री पैकेट का मूल्य ४०००/- रु० है, किन्तु गुरुदेव से प्रार्थना कर और पाठकों व साधकों के लाभार्थ हेतु, जिससे कि अधिक से अधिक व्यक्ति इन प्रयोगों को सम्पन्न कर अपने जीवन के अधूरेपन को पूर्ण कर सकें, इसका मूल्य ४५०/- रु० कर दिया गया है।**

ये पैकेट बहुत ही कम उपलब्ध हो पाये हैं, अतः जिसका भी पत्र पहले पहुंच जायेगा, उसे ही यह दुर्लभ, विशिष्ट पैकेट प्राप्त हो सकेगा, अन्यथा हम क्षमा प्रार्थी हैं।

## नवरात्रि प्रयोगः

नवरात्रि के पैकेट में उपलब्ध सामग्री है— **१. गोमती चक्र, २. कल्पवृक्ष फल, ३. शंख, ४. नवशक्ति यंत्र, ५. रुद्राक्ष, ६. बिल्ली की नाल, ७. लाल हकीक माला, ८. पारद गुटिका, ९. लघु नारियल।**

साधकों को चाहिए, कि वे प्रातः या रात्रि, किसी

एक समय को निश्चित करके ही इन प्रयोगों को सम्पन्न करें। इसके पश्चात् स्नान आदि से निवृत्त होकर **पश्चिम** या **उत्तर** दिशा की ओर मुख कर **पीले आसन** पर, पीले वस्त्र यदि न हों, तो अन्य किसी भी रंग के वस्त्रों को धारण कर, गुरुनामी चादर ओढ़कर ही प्रयोग सम्पन्न करें।

इसके बाद सामने एक **चौकी पर लाल वस्त्र** बिछाकर, उस पर एक चावल की ढेरी बनाकर "नवशक्ति यंत्र" को जल से शुद्ध करके स्थापित कर दें, इसी प्रकार चावल की अलग-अलग ढेरियां बनाकर अन्य सामग्री को भी स्थापित कर दें, फिर कुंकुम, धूप, दीप, फूल, फल आदि से पूजन सम्पन्न कर, अपने बायीं और कुंकुम व अक्षत से "स्वस्तिक" का चिन्ह बनाकर, उस पर जल से भरा कलश स्थापित कर, उसमें **५ या ११ आम के या अशोक के पत्ते** लगाकर, **एक नारियल को कलावे से बांधकर** उस पर स्थापित कर दें, तथा कलश और नारियल पर भी कुंकुम से 'स्वस्तिक' का चिन्ह बनाकर, तत्पश्चात् शुद्ध घी का दीपक प्रज्वलित कर प्रयोग प्रारम्भ करें।

ध्यान रहे, कि दीपक शुद्ध घी का हो, और अखण्ड रूप से नौ दिन तक जलता रहे, बुझे नहीं, यह आवश्यक है।

साधक पूरे नौ दिन तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें, एक समय ही भोजन करें, जमीन पर ही सोयें, दिन में निद्रा अधिक न लें, यथासम्भव बातचीत कम ही करें, तो ज्यादा उचित रहेगा।

यह नवरात्रि पर्व तो अपने-आप में ही एक दिव्य पर्व होता है समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करने का, यह मां दुर्गा द्वारा उत्पन्न नौ शक्तियों से सम्बन्धित दिवस है, जिनकी साधना करने से शीघ्र लाभ होता ही है। शास्त्रों में भी दुर्गा के स्वरूपों की विवेचना करते हुए कहा गया है—

**प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी,**
**तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्;**
**पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च,**
**सप्तमं कालरात्रि च महागौरीति चाष्टमम्;**
**नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिताः।**

साधना सम्पन्न करने से पूर्व सर्वप्रथम साधक अपने इष्ट का ध्यान करें, फिर गणपति का स्मरण करें तथा हाथ में जल लेकर मनोकामना पूर्ति हेतु संकल्प लें, फिर साधना सम्पन्न करें।

## १. शैलपुत्री प्रयोग

यह दुर्गा का प्रथम उदात्तमयी शक्तिपुञ्ज स्वरूप है, जो साधकों को अभीष्ट प्रदान करती है। अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति के लिए तथा स्त्री-पुरुष दोनों के लिए यह प्रयोग उपादेय है, अतः इसीलिए इसे "अखण्ड सौभाग्यवती दिवस" भी कहा गया है। साधकों को चाहिए, कि वे निम्न मंत्र का एक माला जप करें—

**मंत्र**

**ॐ ऐं अखण्ड सौभाग्यं शैलपुत्रीं देहि साधय स्वाहा।**

## २. ब्रह्मचारिणी दुर्गा प्रयोग

कई बार कई कारणों से व्यक्ति को कठोर परिश्रम करने के उपरांत भी अपने कार्यों में सफलता नहीं मिलती, वह जो भी कार्य अपने हितार्थ के लिए करता है, उसका विपरीत ही फल उसे प्राप्त होता है, और अंत में वह हताश हो अपने जीवन को भार स्वरूप समझने लगता है।

ऐसे व्यक्तियों के लिए शास्त्रों में विशिष्ट ब्रह्मचारिणी दुर्गा का प्रयोग वर्णित है, जिसके द्वारा व्यक्ति सहज ही कठिनाइयों को पार करता हुआ पूर्ण भाग्योदय लाभ प्राप्त करता है।

**मंत्र**

**ॐ श्रीं पूर्णभाग्योदयं ब्रह्म चारिण्यै श्रीं नमः।**

## ३. चन्द्रघंटा प्रयोग

व्यक्ति के पास धन भले ही न हो, किन्तु स्वास्थ्य आवश्यक है, क्योंकि स्वस्थ होने पर ही वह समस्त भोगों को भोग सकता है, अस्वस्थ व्यक्ति को सभी लोग भार मानते हैं, और उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, इस कारण से बीमार व्यक्ति जहां शारीरिक रूप से कमजोर रहता है, वहीं जीवन में सफलता भी प्राप्त नहीं कर सकता।

मां दुर्गा से उत्पन्न चन्द्रघंटा शक्ति की साधना सभी रोग और व्याधियों को नष्ट करने में सहायक है, जो व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न कर लेता है, निम्न मंत्र का एक माला जप कर लेता है, वह अरोग्य हो पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है।

**मंत्र**

**ॐ क्लीं रोगान् रोधय चन्द्रघण्टायै क्लीं फट्।**

## ४. कूष्माण्ड सिद्धि प्रयोग

कूष्माण्ड, ब्रह्माण्ड भेदन प्रयोग है अर्थात् ब्रह्माण्ड से सब कुछ प्राप्त कर लेना। ब्रह्माण्ड से जो रश्मियां निकलती हैं, इस निम्न मंत्र की एक माला जप करने पर

उनसे शरीर सौन्दर्य युक्त हो जाता है, उसके शरीर का पूर्णरूप से कायाकल्प हो जाता है. . . जिसके शरीर में सौन्दर्य नहीं है, आकर्षण नहीं है, वह व्यक्ति अभागा ही है।

**मंत्र**

**ॐ क्लीं कूष्माण्डे कायाकल्पं क्लीं ॐ।**

## ५. स्कन्द माता सिद्धि प्रयोग

यदि किसी के पुत्र उत्पन्न नहीं हो रहा हो, तो समाज उस स्त्री को जीने नहीं देता, और उसे घृणा की नजरों से देखता है, और यह भी कोई जरूरी नहीं, कि पुत्र-प्राप्ति पर सुख प्राप्त हो ही, इसीलिए शास्त्रों में, वेदों में इस प्रयोग का गोपनीय ढंग से उल्लेख किया गया है, वही प्रयोग यहां पाठकों के लाभार्थ हेतु दिया जा रहा है, जिसे नवरात्रि के पांचवें दिन, जो कि "पुत्रेष्टि दिवस" के नाम से प्रसिद्ध है, सम्पन्न करने पर पुत्र-सुख प्राप्त होता ही है।

**मंत्र**

**ॐ ऐं ह्रीं पुत्रान् देहि ह्रीं ऐं फट्।**

## ६. कात्यायनी सिद्धि साफल्य प्रयोग

कात्यायनी प्रयोग अपने-आप में अत्यधिक तीक्ष्ण एवं दिव्यतम प्रयोग है, जिसका प्रयोग करने पर निश्चित लाभ होता ही है, इस प्रयोग को किये हुए सैकड़ों साधक साक्षी हैं, जो इससे लाभान्वित हुए हैं। कात्यायनी पूर्ण सौन्दर्यमयी हैं, इच्छाओं की पूर्ति करने वाली हैं अर्थात् साधक जो सोचे, वह हो जाय, इसके लिए निम्न मंत्र का एक माला जप सम्पन्न करें।

**मंत्र**

**क्रीं कात्यायनी क्रीं नमः।**

## ७. कालरात्रि दुर्गा प्रयोग

शत्रु का होना जीवन में सबसे दुःखदायी है, एक के रहते हुए भी जीवन कंटकाकीर्ण हो जाता है। जीवन में शत्रु का होना स्वाभाविक है, और ऐसी स्थिति में इस प्रयोग की आवश्यकता होती ही है? क्योंकि कालरात्रि दुर्गा शत्रु संहार करने वाली देवी हैं, जो कि साधक को बल प्रदान कर शत्रुओं से उसकी रक्षा करती हैं, तथा शत्रुओं को परास्त करने में सहायक सिद्ध होती ही हैं, अतः नवरात्रि के सातवें दिन इस निम्न मंत्र का एक माला जप साधक को करना ही चाहिए।

**मंत्र**

**ॐ फट् शत्रून् साधय घातय ॐ।**

## ८. महागौरी सिद्धिदायक प्रयोग

दुर्गा की आठवीं शक्ति पूर्ण महालक्ष्मी स्वरूपा हैं, जो साधक को वाहन, भवन निर्माण एवं नवनिधियों की प्राप्ति कराने में सहायक हैं।

यह भगवती दुर्गा की सौम्य साधना है, जो सरलता से निम्न मंत्र की एक माला जप कर सम्पन्न की जा सकती है।

**मंत्र**

**ॐ नवनिधि गौरी महादेवायै नमः।**

## ९. सिद्धिदात्री प्रयोग

हर व्यक्ति की यह आकांक्षा होती है, कि वह उच्च-से-उच्च पद को प्राप्त करे, जहां पर भी वह कार्यरत है, उसका नाम समस्त देश में फैले; और वह कुछ ऐसा करे, जिससे उसकी कीर्ति दिनोंदिन बढ़ती ही जाय।

जो लोग राजनीति में हैं, उन्हें भी अपना भाग्य अनिश्चित सा लगता है, कब, क्या स्थिति उत्पन्न हो जाय कुछ कहा नहीं जा सकता, अतः यश, सम्मान, ऐश्वर्य प्राप्ति, उच्च पद प्राप्ति हेतु शास्त्रों में इस महत्त्वपूर्ण साधना का उल्लेख किया गया है।

नवरात्रि का यह अंतिम दिवस "सिद्धिदायक श्रेष्ठ तांत्रिक दिवस" के रूप में भी मनाया जाता है, अतः इस दिन कैसी भी तंत्र साधना हो, सफलता मिलती ही है। साधकों को चाहिए, कि वे निम्न मंत्र का एक माला जप करें—

**मंत्र**

**ह्रीं ऐं ऐं ह्रीं सिद्धिदात्र्यै स्वाहा।**

जहां ये साधनाएं भौतिक मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु सहायक हैं, वहीं ये आध्यात्मिक स्तर पर भी साधक के लिए विशेष लाभदायक सिद्ध होती हैं। इन साधनाओं को सम्पन्न कर साधक अध्यात्म की श्रेष्ठ ऊंचाइयों को भी छू लेता है।

इन साधनाओं में नित्य एक माला मंत्र-जप ही पर्याप्त है, यदि साधक की इच्छा हो, तो वह ११ या २१ माला मंत्र-जप भी सम्पन्न कर सकता है, यदि उसके कार्यों में रुकावट न आ रही हो।

साधना काल में साधक दुकान, फैक्टरी आदि किसी भी स्थान पर स्वतंत्र रूप से आ-जा सकता है, ऐसा कोई नियम नहीं है, कि घर में ही रहकर नौ दिन तक साधना सम्पन्न करनी है, वह अपने सभी कार्य भली-भांति पूर्ण कर सकता है, किन्तु साधना का समय निश्चित होना चाहिए, और साधना-समाप्ति के पश्चात् २१ दिन तक उस सामग्री को लाल कपड़े में बांध कर रखने के पश्चात् २२ वें दिन किसी तालाब, नदी या कुएं में उसे विसर्जित कर दें। यदि ऐसा सम्भव न हो, तो किसी मंदिर में चढ़ा आयें। इस साधना को घर का कोई भी सदस्य सम्पन्न कर सकता है, उसे लाभ प्राप्त होगा ही।
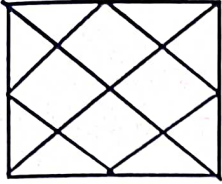
# ज्योतिष प्रश्नोत्तर

**प्रश्न– मुझे प्रेत दोष है या पितृ दोष, क्या उपाय करूं?**
**उत्तर–** आप दैविक समस्या से ग्रस्त हैं, पूज्य गुरुदेव से मिलें।

**रमेश, जालन्धर**

**प्रश्न– अचानक धन-प्राप्ति कब तक?**
**उत्तर–** अभी कोई योग नहीं है, **''आकस्मिक धन प्राप्ति साधना''** सम्पन्न करें।

**ओम प्रकाश, हिसार**

**प्रश्न– मुझे सरकारी नौकरी कब तक मिलेगी, सन् सहित बतायें।**
**उत्तर–** १९९७ में, परन्तु कठिनाइयों के साथ।

**अरुण कुमार माहेश्वरी, कोटा**

**प्रश्न– मैं विदेश जाना चाहता हूं, क्या मेरी इच्छा पूरी होगी?**
**उत्तर–** निकट भविष्य में कोई योग नहीं।

**सूरज प्रकाश, मंडी**

**प्रश्न– मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, कब सुधरेगी?**
**उत्तर–** शीघ्र ही, तीन माह के अन्दर-अन्दर।

**बब्बर भान डुलगच, दिल्ली**

**प्रश्न– पांच लड़कियां हैं, पुत्र प्राप्ति का उपाय बतायें।**
**उत्तर–** पूज्य गुरुदेव से मिलें।

**नरेन्द्र कुमार, पटना**

**प्रश्न– नौकरी कब लगेगी?**
**उत्तर–** शीघ्र ही।

**उमेश चौहान, बकतारा, सीहोर**

**प्रश्न– बिजनेस में सफलता नहीं मिलती, क्या करूं?**
**उत्तर–** नौकरी तथा **''बगलामुखी साधना''।**

**सुरेन्द्र कुमार वर्मा, लुधियाना।**

**प्रश्न– मैं जिससे प्यार करती हूं, क्या उससे मेरी शादी हो जायेगी?**
**उत्तर–** कम सम्भावनाओं के बावजूद भी सफलता मिलेगी।

**पूजा रौतेला, ग्वालियर**

**प्रश्न– मुझे पुत्र-प्राप्ति होगी या नहीं? होगी, तो कब और कैसे?**
उत्तर– **''पुत्र-प्राप्ति अनुष्ठान''** सम्पन्न करें, सफलता मिलेगी।

**श्रीमती साधना, बिलासपुर**

**प्रश्न– क्या नौकरी में प्रमोशन एवं ट्रांसफर की सम्भावना है?**
**उत्तर–** नहीं।

**प्रमोद कुमार महन्ति, जमशेदपुर**

**प्रश्न– नौकरी या व्यापार करूं, बतायें?**
**उत्तर–** नौकरी।

**संजीव गंगवार, शाहजहांपुर**

**प्रश्न– मुझे मर्चेन्ट नेवी में नौकरी मिलेगी, कब?**
**उत्तर–** सम्भावनाएं अत्यन्त क्षीण हैं, फिर भी प्रयास करें।

**नीरज भसीन, रानीताल, नाहन**

**प्रश्न– गृहस्थ आश्रम के पूर्णरूपेण संचालन एवं १०८ दीक्षाओं हेतु धन कब प्राप्त होगा?**
**उत्तर–** अभी योग क्षीण हैं, धैर्य रखें।

**अवधेश कुमार झा, वेलारी, समस्तीपुर**

**प्रश्न– सरकारी नौकरी मिलेगी या नहीं? मिलेगी तो कब तक?**
**उत्तर–** सम्भावनाएं कम हैं, आप व्यापार आदि में रुचि लें।

**भरतलाल सोनी, पिथौरा**

**प्रश्न– न्यायालय के प्रकरण में विजय मिलेगी या नहीं?**
**उत्तर–** मिलेगी, प्रयास करें।

**नूतन कुमार, टिमरनी**

**प्रश्न– कर्ज अतिशय है, कैसे निवारण होगा?**
उत्तर– **''कर्ज मुक्ति अनुष्ठान''** के द्वारा।

**हुकमीचंद, भागलकोट**

**प्रश्न– मैं बड़ी होकर डॉक्टर बनना चाहती हूं, क्या करूं?**
**उत्तर–** आपको अत्यन्त ही कठोर परिश्रम करना होगा एवं अनुष्ठान सम्पन्न करायें।

**कु० अलका लोम्बरे, छिंदवाड़ा**

**प्रश्न– सरकारी नौकरी कब तक?**
**उत्तर–** सम्भावनाएं अत्यन्त क्षीण, दो वर्ष तक इंतजार करें।

**देवी सिंह, टीकमगढ़**

**प्रश्न– मेरा विवाह कब होगा?**
**उत्तर–** निकट भविष्य में अर्थात् १५ माह के भीतर।

**नीलिमा, भंडारा**

**प्रश्न– नौकरी कब लगेगी?**
**उत्तर–** निकट भविष्य में।

**दिलबाग सिंह, रूड़की**

**प्रश्न– पदोन्नति कब होगी?**
**उत्तर–** ३ वर्ष के अन्दर।

**गनपतलाल नाथ, राजगढ़**

**प्रश्न– अपार धन-सम्पत्ति की प्राप्ति किस वर्ष में?**
**उत्तर–** अपार धन-सम्पत्ति तो नहीं, किन्तु ३० माह के अन्दर-अन्दर अनुकूलता प्राप्त होगी।

**जी० टी० पुरनाइक, चण्डीगढ़**

**प्रश्न– मैं एम० बी० बी० एस० में अध्ययनरत हूं, स्वतः धनोपार्जन कब से प्रारम्भ होगा?**
**उत्तर–** एक से डेढ़ वर्ष के अन्दर।

**दिलीप चौरसिया, इंदौर**

**प्रश्न– मुझे किस सौन्दर्य साधना में सफलता मिलेगी?**
**उत्तर–** आप **''किन्नरी साधना''** सम्पन्न करें, सफलता कुछ विलम्ब से प्राप्त होगी।

**हरविन्दर शर्मा, लुधियाना**

**प्रश्न– भाग्योदय कब होगा?**
**उत्तर–** शीघ्र ही, **''ग्रह-दोष निवारण दीक्षा''** प्राप्त करें।

**बालकृष्ण कौशिक, पामगढ़**

**( कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे)**

नाम :-.............................................

जन्म तिथि :- ......................महीना ..................सन्..............

जन्म स्थान :- ............................ जन्म समय ...............

पता (स्पष्ट अक्षरों में ) :-..................................................

..................................................

आपकी केवल एक समस्या :- ..................................................

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

**– ज्योतिष प्रश्नोत्तर –**
**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान कार्यालय**
**306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034**

## मेष - 

चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

सड़क पर वाहन प्रयोग के समय सावधानी बरतें, दुर्घटना का योग प्रबल है। घर में अनुष्ठान, साधना आदि से अप्रिय योगों को टाला जा सकता है। आती हुई मामूली सी अड़चनें स्वजन के सहयोग से दूर होंगी। धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी एवं यात्रा के योग बनेंगे। दाम्पत्य जीवन में तकरार की स्थिति बनी रहेगी। आकस्मिक धन-प्राप्ति का योग नहीं, अतः व्यर्थ व्यय न करें। सामाजिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। कारोबारी मामलों में शिथिलता न बरतें। मान-सम्मान की स्थिति बनेगी। राज्य पक्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें। जमीन-जायदाद के मामलों को लेकर उलझनें बढ़ेंगी । अनुकूल तारीखें ७, ६, १६, १८, २२, २७ एवं ३० रहेंगी।

## मिथुन - 

का, की, कु, घ, ङ., छ, के, को, ह

यह माह आपके लिए सामान्यतः अनुकूल ही सिद्ध होगा, परन्तु समय आलस्य से भरा होगा। कारोबारी मामलों में आलस न करें। जीवनसाथी से सम्बन्धों में मधुरता आयेगी। कारोबारी क्षेत्र में कार्य व स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। धार्मिक प्रसंगों में यात्रा का योग बनेगा। अड़चनों से खिन्नता होगी। मित्रों के सहयोग से समस्या का समाधान होगा। अधिकारियों से चला आ रहा वैचारिक मतभेद समाप्त होगा। राजकार्य आसानी से पूरे होंगे। शत्रु आपके पक्ष में होंगे, परन्तु विश्वासघात की स्थिति से सावधानी बरतें। इंटरव्यू में सफलता संदिग्ध। प्रेम-प्रसंगों को लेकर हड़बड़ाहट न करें। अनुकूल तारीखें ५,१२,१४,२३,२८, रहेंगी।

## सिंह - 

मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

घर में अनुष्ठान आदि के योग बनेंगे। मामूली सी अड़चनें आयेंगी, परन्तु स्वजनों के सहयोग से उनमें सुधार होगा। कारोबारी मामलों में शिथिलता न बरतें। बाजारी स्थिति ऊहापोह की रहेगी। साझेदारी के मामले में सतर्कता बरतें। अधिकारियों से व्यर्थ वाद-विवाद न करें। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें, समाज में असम्मान की स्थिति बनेगी। दाम्पत्य जीवन में अनुकूलता प्राप्त होगी। कोई दुःखद समाचार प्राप्त होगा। सूझ-बूझ एवं विवेकपूर्ण निर्णय लेकर ही कार्य आरम्भ करें। प्रेम विवाह अनुकूल रहेगा। साधनात्मक दृष्टि से समय शुभ एवं सफलतादायक रहेगा। जमीन-जायदाद को लेकर उलझनें बढ़ेंगी। इंटरव्यू में सफलता के अवसर प्राप्त होंगे। अनुकूल तारीखें १,८,१०,१६,२५ एवं २६ रहेंगी।

## वृषभ - 

इ, उ, ऐ, ओ, बा, बी, बु, बे, बो

राज्य पक्ष से क्षोभ की स्थिति रहेगी, अनुकूलता बनाये रखें। व्यापारी वर्ग संयम से काम लें, लालच में हानि हो सकती है। प्रथम सप्ताह नवीन व्यवसाय में रुचि न लें। जमीन-जायदाद के क्रय-विक्रय में लाभ होगा। अपने धन को अचल सम्पत्ति में परिवर्तित करें। वाहन के क्रय-विक्रय का योग। श्रमिक वर्ग में प्रसन्नता रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। मांगलिक व धार्मिक कार्यों में यात्रा सम्भव। शिक्षक वर्ग में शिथिलता रहेगी। व्यापार का चुनाव करते समय संयम से काम लें। पुराने अनुबंध लाभप्रद सिद्ध होंगे।

## कर्क - 

ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

इस माह का प्रथम सप्ताह आपके लिए अत्यन्त ही अनुकूल सिद्ध होगा। अतिथियों के आगमन से प्रसन्नता होगी। प्रेम-प्रसंगों में न्यूनता रहेगी । बेरोजगार वर्ग के व्यक्तियों के लिए नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय अधिक फलप्रद सिद्ध रहेगा। धन के उधार लेन-देन से बचें। साधक वर्ग के लिए समय अनुकूल चल रहा है, साधनात्मक कार्यों में रुचि लें। खान-पान पर ध्यान दें, स्वास्थ्य में गिरावट होगी। परिवार के किसी सदस्य को लेकर चिंता रहेगी। राज्य पक्ष से सुखद समाचार प्राप्त होंगे। अधिकारियों से मधुर सम्पर्क बनेंगे।

## कन्या - 

टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

तुरंत निर्णय लेने की स्थिति से बचें। अदालती मामलों में व्यस्तता रहेगी। नये व्यवसाय आरम्भ करने की योजना अनुकूल एवं फलप्रद रहेगी। गृहस्थ-सुख में वृद्धि होगी। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। अतिथियों के आगमन से कोई पुराना विवाद उखड़ेगा। मांगलिक कार्यों में खर्च बढ़ेगा तथा व्यस्तता रहेगी। जीवनसाथी के विचारों में अनुकूलता बनाये रखें तथा संतान के प्रति उत्तरदायित्वों की उपेक्षा न करें। आकस्मिक धन-प्राप्ति के योग नहीं हैं, अतः व्यर्थ में धन व्यय न करें। जमीन-जायदाद के मामलों में विशेष ध्यान दें।

## तुला -

रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

व्यापारिक कार्यक्षेत्रों में विस्तार होगा। आर्थिक स्थिति सामान्यतः कमजोर ही रहेगी। नये अनुबंधों पर जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। राजकार्य में अड़चनें आयेंगी। नये व्यवसाय प्रारम्भ करने के उचित अवसर रहेंगे। घरेलू जिम्मेदारियों की उपेक्षा न करें। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतें। पड़ोसियों एवं मित्रों से मतभेद की दशा में सावधानी बरतें। साधनात्मक दृष्टि से समय आपके लिए अनुकूल रहेगा। प्रेम-प्रसंगों के मामलों में रुचि न लें। अध्यात्म के प्रति झुकाव होगा। धार्मिक प्रसंगों में यात्रा योग अनुकूल। शुभ तारीखें ६,१२,१५,२२,२४ एवं २८ रहेंगी।

## धनु -

ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

कारोबार में विस्तार से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। रुका हुआ धन प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी। किया हुआ वायदा निभाने में अड़चनें आयेंगी। पड़ोसियों से विवाद की स्थिति में सावधानी बरतें। जो कार्य आपने हाथ में लिया है, पहले उसे पूरा करें। राज्य पक्ष की ओर से आती बाधाओं में सुधार होगा। मित्रों से सहयोग व मेलजोल बनाकर चलें। किसी के बहकावे में न आयें, निर्णय स्वयं की सूझ-बूझ से लें, लाभ होगा। पुराना अनुबंध लाभदायक रहेगा। नये सम्पर्क भविष्य में लाभदायक सिद्ध होंगे। जीवनसाथी से मतभेद होगा, संयम रखें।

## कुंभ -

गू, गे, गो, सा, सु, से, सो, दा

माह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं, अतः जो भी करना है, सोच-समझ कर करें, जल्दबाजी में हानि होगी। हृदय में राष्ट्रीयता की भावनाओं का विकास होगा। कार्यालय में स्थिति सम्मानजनक होगी। जीवनसाथी से चला आ रहा मतभेद समाप्त होगा। संतान की ओर से सुखद सूचना प्राप्त होगी। मित्रों में आपसी अनबन होने से मन में खिन्नता रहेगी। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा एवं दाम्पत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। प्रेम-प्रसंगों को लेकर सावधानी बरतें। नीलम धारण करने से अनुकूलता प्राप्त होगी। साधनात्मक दृष्टि से समय आपके अनुकूल चल रहा है, लाभ प्राप्त करें।

## वृश्चिक -

तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू

आपसी मतभेद भुलाकर आगे बढ़ें, नवीन सम्पर्क लाभप्रद सिद्ध होंगे। कारोबारी एवं धार्मिक प्रसंगों को लेकर की गई यात्रा फलप्रद सिद्ध होगी। भवन तथा भूमि आदि के क्रय-विक्रय के योग बनेंगे। नये व्यापार करने वाले जल्दबाजी न करें, इस माह में मध्यान इस दृष्टि से अनुकूल सिद्ध होगा। कारोबारी मामलों में महिलायें अधिक लाभ अर्जित कर पायेंगी। रचनात्मक वस्तुओं का क्रय-विक्रय लाभप्रद रहेगा। वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें।

## मकर -

भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

मित्रों पर विश्वास न करें। प्रेम विवाह के मामले में सफलता प्राप्त होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। स्थानान्तरण के आसार नहीं। आपसी मतभेद में मित्रों का साथ छूटेगा। जीवनसाथी की उपेक्षा से घर में तनाव होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर चिन्ता रहेगी। पड़ोसियों से वैचारिकता बनाये रखें। कारोबारी मामलों में नियंत्रण रखें, जल्दबाजी में हानि होने की सम्भावना। राज्य पक्ष की ओर से अनुकूलता प्राप्त होगी।

## मीन -

दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

समय अनुकूल चल रहा है, सूझ-बूझ के साथ निर्णय लेंगे तो लाभ होगा। व्यापार स्थल में पारद लक्ष्मी अथवा पारद श्रीयंत्र की स्थापना करें, अनुकूलता प्राप्त होगी। नये एवं पुराने अनुबंध लाभप्रद सिद्ध होंगे। जीवनसाथी से सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। घर के किसी वृद्ध सदस्य को लेकर चिन्ता रहेगी। अधिकारी पक्ष आपके लिए अनुकूल होंगे। नये सम्पर्क भविष्य में लाभप्रद सिद्ध होंगे। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

## व्रत पर्व एवं त्यौहार

| | | |
|---|---|---|
| ०१/०८/९५ | श्रावण शुक्ल पक्ष ५ | नाग पंचमी |
| ०२/०८/९५ | श्रावण शुक्ल पक्ष ६ | कल्कि जयन्ती |
| ०६/०८/९५ | श्रावण शुक्ल पक्ष १० | सर्वार्थ सिद्धि योग |
| ०८/०८/९५ | श्रावण शुक्ल पक्ष १२ | प्रदोष व्रत |
| १०/०८/९५ | श्रावण शुक्ल पक्ष १५ | रक्षा बन्धन |
| ११/०८/९५ | भाद्रपद कृष्ण पक्ष १ | सिद्धि योग |
| १३/०८/९५ | भाद्रपद कृष्ण पक्ष ३ | कजली तीज |
| १४/०८/९५ | भाद्रपद कृष्ण पक्ष ४ | गणेश चतुर्थी |
| १८/०८/९५ | भाद्रपद कृष्ण पक्ष ८ | कृष्ण जन्माष्टमी |
| १९/०८/९५ | भाद्रपद कृष्ण पक्ष ९ | अमृत सिद्ध योग |
| २१/०८/९५ | भाद्रपद कृष्ण पक्ष ११ | अमृत योग |
| २३/०८/९५ | भाद्रपद कृष्ण पक्ष १३ | प्रदोष व्रत |
| ०६/०९/९५ | भाद्रपद शुक्ल पक्ष १२ | वामन द्वादशी |
| ०७/०९/९५ | भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३ | प्रदोष व्रत |
| ०८/०९/९५ | भाद्रपद शुक्ल पक्ष १४ | अनन्त चतुर्दशी |
| ०९/०९/९५ | भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५ | पितृ पक्षारम्भ |
| १२/०९/९५ | आश्विन कृष्ण पक्ष ४ | गणेश चतुर्थी |
| १४/०९/९५ | आश्विन कृष्ण पक्ष ५ | सिद्ध योग |
| १६/०९/९५ | आश्विन कृष्ण पक्ष ७ | अमृत सिद्ध योग |
| १७/०९/९५ | आश्विन कृष्ण पक्ष ८ | महालक्ष्मी अष्टमी |
| २२/०९/९५ | आश्विन कृष्ण पक्ष १३ | प्रदोष व्रत |
| २४/०९/९५ | आश्विन कृष्ण पक्ष ३० | श्राद्ध समाप्त |
| २५/०९/९५ | आश्विन शुक्ल पक्ष १ | नवरात्रि आरम्भ |
| २९/०९/९५ | आश्विन शुक्ल पक्ष ५ | सरस्वती पंचमी |

# एक बूंद उछली और समुद्र बन गई

**अथाह. . . अगाध. . . असीमित, विस्तृत एवं रत्न गर्भा. . .विशाल और देवता सदृश. . . अपने अंक में हजारों-लाखों शिष्यों रूपी सरिताओं को समेट कर देवता सदृश बना देने की योग्यता रखने वाले . . .**

**जब ''श्री अरविन्द कुमार श्रीमाली जी'' ने ब्रह्मपात क्रिया को पूर्णता के साथ आत्मसात् कर लिया . . .**

**पिछले सैकड़ों वर्षों में पहली बार ''ब्रह्मपात क्रिया'' सम्पन्न की थी बड़े गुरुदेव ने, पूज्य श्रीयुत अरविन्द कुमार श्रीमाली जी पर. . .**

एक बूंद में जितनी आतुरता, जितनी व्यग्रता, जितनी तीव्रता होती है समुद्र के आगोश में सिमट जाने की, उतनी ही व्याकुलता समुद्र को भी होती है. . . वह भी चाहता है, कि बूंद मुझमें विसर्जित होकर अपना अस्तित्व खो दे, अपने-आप को समाहित कर दे, जब बूंद ऐसा कर सकेगी. . . तभी तो समुद्र उसे अपने में समाहित कर सकेगा, एकाकार कर सकेगा. . . और तब वह समुद्र की ही भांति विशाल. . .अगाध. . .अथाह. . .असीमित बन पायेगी. . .और जब ऐसा होगा, तब वह बूंद मात्र बूंद न रह कर समुद्र बन जायेगी और समुद्र की ही भांति अपने अंक में सरिताओं को आत्मसात् करने की क्षमता प्राप्त कर लेगी।

— और यह क्रिया. . . जो लघु से महान बन जाने की क्रिया है, सम्पूर्ण हो जाने की क्रिया है, यह क्रिया. . .जो एक शिशु को पूर्ण यौवनवान बना देने की क्षमता से युक्त है, वह है— **''ब्रह्मपात''**।

**''ब्रह्मपात'' का तात्पर्य है— ब्रह्म ज्ञान को शिष्य के हृदय में स्थापित कर उसे पूर्ण ब्रह्म स्वरूप प्रदान कर देना. . .और जब ऐसा होगा, तभी तो वह शिष्य अपने सदृश्य बन पाने की क्षमता अन्य को प्रदान कर सकेगा। ऐसी ही क्रिया सम्पन्न की पिछले दिनों पूजनीय गुरुदेव ने ''श्रीयुत अरविन्द श्रीमाली जी'' पर; जिससे वे पूर्ण हो, पूर्णता प्रदान कर सकें साधकों को, शिष्यों को।**

जिसे 'ब्रह्मत्व' का ज्ञान नहीं होगा, वह बता भी क्या सकेगा इस विश्व को. . . जिसने उसे देखा है, अपने-आप में आत्मसात् किया है, वही दूसरों को भी उसका ज्ञान प्रदान कर सकता है।

—और आज इस युग में पूज्य गुरुदेव की अनुकम्पा प्राप्त हुई छोटे गुरुदेव को। अपने अथक परिश्रम द्वारा साधना की ऊंचाइयों को स्पर्श कर, उन्होंने वह योग्यता प्राप्त की है, और इस धरा पर व्याप्त ऋषि परम्परा में आगे बढ़कर अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कर दिखाया है।

अपनी पात्रता, कठिन परिश्रम और योग्यता के बल पर ही वे इस दिव्य, तीव्र व तीक्ष्ण ब्रह्मपात को सहन कर पाने में सक्षम हो सके, उसे आत्मसात् कर पूर्ण समुद्रवत बन सके।

कोयले की खान से निकला हीरा, जब तक कुशल जौहरी के हाथों में नहीं पड़ता है, तब तक वह अपने अन्दर अनमोल बनने की समस्त क्षमताओं को समेटे रहने के बाद भी एक सामान्य

चमकीले से पत्थर की तरह ही दृश्यमान होता है, और जब यही पत्थर किसी कुशल जौहरी के हाथों में पड़ जाता है, तो वह जौहरी हीरे की विशेषताओं से परिचित होने के कारण, बहुत यत्न से अनेकों फलक तराश कर उसमें ज्योत्स्नित हो जाने की क्रिया का प्रस्फुटीकरण कर देता है. . . और वह अनघड़ हीरा 'अनमोल' हो जाता है।

ठीक उसी प्रकार सद्गुरुदेव अपने शिष्य के अन्दर निहित क्षमताओं को परख कर उसे अपनी तपस्या-ऊर्जा शक्तिपात द्वारा प्रदान करते हैं, जिसके माध्यम से वह शिष्य ऊर्ध्वपात की तेजस्वी तरंगों को आत्मसात् कर सके, और जब शिष्य ऊर्ध्वपात को आत्मसात् कर लेता है, तब उस पर अनेकों योगियों और संन्यासियों की दृष्टि सदैव लगी रहती है, वे अत्यन्त सूक्ष्मता से ऊर्ध्वपात प्राप्त शिष्य के क्रियाकलाप और साधनाओं को परखते रहते हैं, और एक निश्चित अवधि के उपरान्त समस्त कसौटियों पर जब वह शिष्य खरा उतरता है, तब वे समस्त योगी, सिद्धाश्रम के विशिष्ट ऋषि निर्णय कर उस शिष्य को 'ब्रह्मपात क्रिया' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं, क्योंकि **'ब्रह्मपात' वह तीक्ष्णतम क्रिया है, जिसको सम्पादित करने हेतु इतनी तीव्र ऊर्जा तरंगों का प्रहार किया जाता है, कि वह प्रहार यदि किसी विशाल पर्वत पर गिरे, तो उसे भी क्षत-विक्षत कर दे. . .ऊर्ध्वपात और अति विशिष्ट साधनाओं को सम्पन्न कर लेने के कारण शिष्य का अंतर-बाह्य अत्यधिक दृढ़ता से दिव्य शक्तियों द्वारा आबद्ध रहता है, जिसके कारण 'ब्रह्मपात' प्राप्त करने वाले शिष्य का बाल भी बांका नहीं होता।**

गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली

कुछ लोगों के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हो सकती है, कि अपने दैहिक पुत्रों पर ही उन्होंने ब्रह्मपात क्रिया क्यों की, क्या मानस पुत्र (शिष्य) इस क्रिया को प्राप्त नहीं कर सकते?

— गुरुदेव इससे पहले भी पांच लोगों को ब्रह्मपात प्रदान कर चुके हैं, जिसमें दो संन्यासी हैं, एक 'श्री कैलाश चन्द्र जी गुरुदेव' हैं, एक 'डॉ० वेंकट स्वामी रंगाचार्य' हैं, जो मद्रास में रहते हैं, एक हिमाचल प्रदेश के 'श्री हरगोविन्द' हैं, और इस प्रकार सिर्फ पांच लोगों को जब बहुत कठोरता से, योग्यता से परखा गया, तब उन्हें ब्रह्मपात प्रदान किया गया।

जब गुरुदेव ऊर्ध्वपात या ब्रह्मपात प्रदान करते हैं, तो उनके सामने पुत्र या शिष्य अलग-अलग रूप में नहीं होते, वे जब उनको अपनी कसौटी पर परख कर, उनके चिंतन को समझ लेते हैं. . . और फिर सिद्धाश्रम से प्राप्त संदेश. . . महत्त्वपूर्ण तथ्य तो यही है, कि जब सिद्धाश्रम से कोई संकेत प्राप्त होता है, कि अमुक शिष्य पर यह क्रिया सम्पन्न करनी है, तभी वे इस दिव्य ऊर्जा को प्रदान करते हैं।

**ऊर्ध्वपात सम्पन्न व्यक्ति देवतुल्य हो जाता है, और ब्रह्मपात सम्पन्न व्यक्ति देवतुल्य बना देने की क्षमता युक्त हो जाता है। ब्रह्मपात क्रिया का मतलब है— एक छोटी-सी बूंद का अपने-आप में सम्पूर्ण समुद्र को समाहित कर लेना, एक छोटे-से कण का अपने-आप में पूर्ण पृथ्वी के गुणों से युक्त बन जाना, एक छोटी-सी गौरय्या का अपने-आप में मानसरोवर का हंस बन जाना, एक छोटी-सी धारा का अपने-आप में सम्पूर्ण गंगा की दिव्यता समाहित कर लेना।**
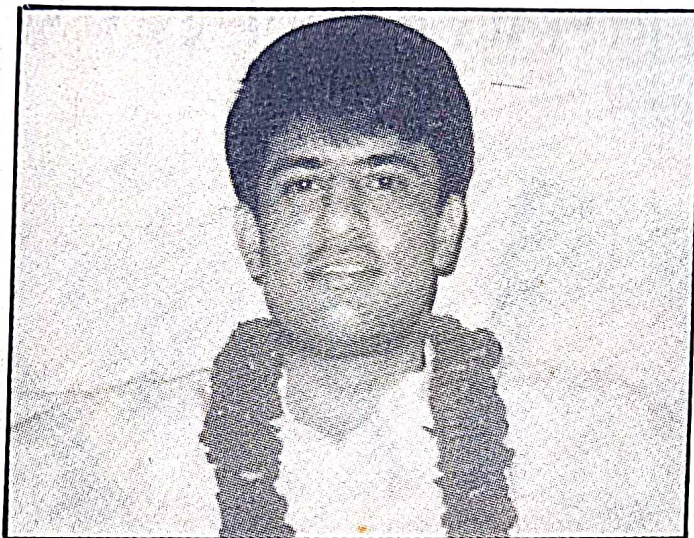
ऊर्ध्वपात दीक्षा या ब्रह्मपात दीक्षा का उम्र से कोई सम्बन्ध नहीं होता, उसका आयु से कोई सम्बन्ध नहीं होता, छोटे और बड़े से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

कुछ लोगों के मन में अवश्य ही यह विचार आ रहा होगा, कि वे जो २३, २५, २६ साल के युवक हैं, क्या वे इतनी बड़ी दीक्षा लेने के अधिकारी हैं, क्या वे इतनी तीव्र ज्वाला झेलने के अधिकारी हैं?

तो यहां मुझे स्मरण आ रहा है 'शुकदेव ऋषि' और उनके पिता का। शुकदेव तो केवल ११ साल के बालक ही थे, उस समय नैमिशारण्य वन में अट्ठासी हजार ऋषि एकत्र हुए थे, जिनमें दो-दो हजार वर्ष की आयु प्राप्त योगी, संन्यासी भी थे. . . और डेढ़ सौ वर्षों की आयु प्राप्त उनके पिताश्री भी उस सभा में उपस्थित थे। जब इस बात पर चर्चा चली, कि उन अट्ठासी हजार ऋषियों में से किसको व्यास पीठ पर बिठाया जाय, तब सब ने एक स्वर से कहा— ''शुकदेव उच्चकोटि के ज्ञानी हैं, योगी हैं, वे ही व्यास पीठ की गद्दी पर बैठने के सक्षम अधिकारी हैं'', और उन

ऋषियों की वाणी को सहर्ष स्वीकार करते हुए शुकदेव व्यास गद्दी पर बैठे।

कई ऋषियों ने आपत्ति की– ''यह गलत है, अन्याय है, यह सामाजिक मर्यादा के विपरीत है, कि पिता नीचे जमीन पर बैठे और पुत्र व्यास गद्दी पर बैठे, यह एक पिता का घोर अपमान है, मानवोचित दृष्टि से भी अपमान है, मर्यादा की दृष्टि से भी अपमान है, हिन्दुत्व की दृष्टि से भी अपमान है और आर्य संस्कृति की दृष्टि से भी अपमान है।''

–तो 'महर्षि याज्ञवल्क्य' ने उत्तर दिया–

**''आयु वृद्धोऽपि न वृद्धः ज्ञान वृद्धोऽपि वृद्ध''**

– ''आयु से कोई ज्ञानवान (वृद्ध) नहीं बनता है, ज्ञान से वृद्ध बनता है, ज्ञानवान बनता है और उच्चकोटि का बनता है, जिसमें जितना ज्ञान है, वह उतना ही उच्चकोटि का व्यक्तित्व है।''

यदि ११ साल का बालक व्यास गद्दी पर बैठकर अट्ठासी हजार ऋषियों का संचालन कर सकता है, तो गुरुदेव अरविन्द श्रीमाली जी भी ब्रह्मपात प्राप्त करने की क्षमता से युक्त हो सकते हैं। यद्यपि यौवन उनके सामने है, फिर भी उनका एक ही लक्ष्य, एक ही ध्येय, एक ही चिन्तन और विचार है, कि मैं शिष्यों को वह सब कुछ दूं, जो उनके लिए हितकारी है। मैं अपने पिता से भी आगे बढ़कर कार्य करूं, उनसे भी ज्यादा श्रेष्ठतम कार्य करके दिखाऊं, मैं उनका योग्य पुत्र बन सकूं. . . और गुरुदेव ने कहा– ''तुम मेरे पुत्र नहीं हो, जब मैंने तुम्हें दीक्षा दी, तो पुत्र और पिता का भाव समाप्त हो गया, अब तुम केवल मेरे शिष्य हो।''

ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार 'मैत्रेयी' ने अपने पति 'वशिष्ठ' को कहा– ''मैं आपसे ''ब्रह्म दीक्षा'' प्राप्त करना चाहती हूं।''

वशिष्ठ ने उत्तर दिया– ''मैत्रेयी! तुम ब्रह्म दीक्षा प्राप्त नहीं कर सकतीं, तुम ब्रह्म दीक्षा तब प्राप्त कर सकोगी, जब तुम पत्नी के भाव से हटोगी और शिष्या बनोगी. . . और जब पूर्णरूप से शिष्या बन जाओगी, तब मैं तुम्हें ब्रह्म दीक्षा दे पाऊंगा। जब तक तुम मेरी पत्नी हो, जब तक तुम्हारे मन में पत्नी भाव है, तब तक मैं तुम्हें ब्रह्म दीक्षा, ब्रह्म रहस्य, ब्रह्म का ज्ञान दे ही नहीं सकता।''

उसी क्षण मैत्रेयी ने हाथ में जल लेकर कहा– ''मैं आज से आपकी पत्नी नहीं हूं, सहचरी नहीं हूं, मैं आज से आपकी पूर्णरूप से शिष्या हूं. . . और जिस प्रकार शिष्या के साथ एक गुरु का व्यवहार होता है, उसी प्रकार से कठोर या मृदु जो भी व्यवहार मेरे लिए उचित हो, आप मेरे साथ करें''. . .और तब वशिष्ठ ने, जो ब्रह्मर्षि थे, ब्रह्म का उपदेश, ब्रह्म का ज्ञान और ब्रह्म दीक्षा मैत्रेयी को दे दी।

– और इसी क्रम में श्री अरविन्द जी ब्रह्म दीक्षा के अधिकारी बने, उन्होंने शादी करने से दो टूक मना कर दिया था– ''मैं जीवनपर्यन्त शादी नहीं करना चाहता हूं, मैं विवाह-बन्धन में बंधना ही नहीं चाहता हूं, मैं जीवन में केवल वह कार्य करना चाहता हूं, जो शास्त्रोचित है, मर्यादोचित है, मैं शास्त्रों को छानना चाहता हूं, शास्त्रों के मूल अर्थ को समझना चाहता हूं. . . और मेरे पिता पूज्य गुरुदेव जी का जो काम अधूरा है, उसे पूरा करना चाहता हूं।

जिस प्रकार संन्यासी जीवन में रहते हुए भी 'पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी' ने विभिन्न उच्च दीक्षाएं ली थीं और अब पत्नी, पुत्र, बंधु-बांधव, परिवार, समाज में रहते हुए भी अपने-आप में निर्लिप्त हैं, ठीक जनक की तरह, सीता के पिता विदेह की तरह, राजपाट, धन-दौलत, यश-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, राग-रंग, दास-दासियां सब कुछ उनके पास था, उसके बावजूद भी वे निर्लिप्त थे, यहां तक कि अपनी देह को भी वे देह नहीं समझते थे, इसीलिए उनका नाम ''विदेह'' पड़ा, उन्हें इस बात की चिंता ही नहीं थी, कि देह टूट रही है, बिखर रही है, जल रही है, समाप्त हो रही है या क्षीण हो रही है, इस बात का उन्हें भान ही नहीं था, क्योंकि वे ब्रह्म तक पहुंचे हुए थे, और पहुंचे हुए होने की वजह से ही वे विदेह कहलाये।

ठीक उसी प्रकार जब परिवार वालों ने बहुत अधिक विरोध किया, तो श्री अरविन्द श्रीमाली जी ने विवाह किया, किन्तु विवाह करने के उपरान्त भी वे अपने-आप में वीतरागी बने रहे। वे सामाजिक कार्यों के उत्तरदायित्व को तो निभा रहे हैं, वे अपने पिता की आज्ञा से सब कुछ प्राप्त करते जा रहे हैं, मगर उनके अन्दर एक लौ है, एक लगन है, कि मैं उन कार्यों को सम्पन्न करूं, जो अपने-आप में अद्वितीय हैं, श्रेष्ठ हैं, जो भारतीय मर्यादाओं से पूर्ण हैं।

*– और जब सिद्धाश्रम से यह निर्देश प्राप्त हुआ, कि वे पूर्वजन्म में भी उच्चकोटि के योगी रहे हैं, और इस समय वे उस स्थान पर हैं, जहां उनको ब्रह्म दीक्षा दी जा सकती है, तब पूजनीय गुरुदेव ने सिद्धाश्रम के योगियों की आज्ञा का पालन करते हुए उन्हें यह दीक्षा प्रदान की।*

**कुछ विशिष्ट अवसरों पर ही जब सिद्धाश्रम से प्राप्त तरंगों के माध्यम से क्षण विशेष में ब्रह्म दीक्षा को प्राप्त**

**कर लेने के बाद जब-जब वे तरंगें प्राप्त होती हैं, तब-तब उनके द्वारा दिया गया आशीर्वाद फलदायी हो जाता है. . . और श्राप दे दें, तो सामने वाले के पुण्य भस्म हो जाते हैं, वे जिसके सिर पर हाथ रख दें, वह सम्पूर्ण बन जाता है।** यह सिद्धि सिद्धाश्रम की दिव्य तरंगों से समय-समय पर प्राप्त होती है, ठीक वैसे ही, जैसे बालक स्वयं बड़ा होता चला जाता है, क्योंकि प्रकृति अपने-आप अपना कार्य करती रहती है, ठीक उसी प्रकार ब्रह्म क्रिया सम्पन्न करने के बाद में वे पूर्णरूप से शिष्यों के लिए समर्पित हो जाते हैं, गृहस्थ धर्म का पूर्णरूप से पालन करते हुए भी।

मगर अब शिष्यों की यह मांग आने लगी है, कि हम इतने उच्चकोटि के विद्वान् से भी दीक्षा प्राप्त करें, वे हमारे आज्ञा चक्र को स्पर्श करें, वे अपनी वाणी से उन मंत्रों का घोष करें, जिससे हम लाभान्वित हो सकें।

इसलिए जब मैं इस सम्बन्ध में छोटे गुरुदेव अरविन्द श्रीमाली जी से मिला, तो उन्होंने बताया— ''इस पथ पर चलना अत्यन्त ही कठिन और कठोर है, फिर भी मुझे यह रास्ता प्रिय है, मैं चाहता हूं कि इस रास्ते पर गतिशील होऊं और पूर्णता प्राप्त करूं तथा उस कार्य को आगे बढ़ाऊं, जो कार्य अपने-आप में ''पूर्णमदः पूर्णमिदं'' कहलाता है।''

उन्होंने कहा— ''पूज्य गुरुदेव मेरे लिए पूजनीय हैं, वंदनीय हैं, क्योंकि उन्होंने मुझे ब्रह्म दीक्षा प्रदान की।''

ज्योंही ब्रह्म दीक्षा सम्पन्न हुई, उसका प्रभाव वहां उपस्थित लोगों ने अपनी आंखों से स्वयं देखा, ललाट दिप्-दिप् करता हुआ चमकने लगा था, चेहरे से एक तेजस्विता प्रकट होने लगी थी, ऐसा लगने लगा, जैसे शुभ्र प्रकाश फैल गया हो, क्योंकि दो साल पहले बड़े गुरुदेव ने १९९३ में अपने तीनों पुत्रों को शक्तिपात दीक्षा दी थी, मगर जिसमें जितनी योग्यता बढ़ती गई, गुरुदेव उनको उतना ही आगे बढ़ाते रहे, और आगे जो भी इस प्रकार का योग्य शिष्य होगा, गुरुदेव उसे भी यह दीक्षा प्रदान करते रहेंगे।

—और पिछले जीवन के पुण्य, पिछले जीवन की तपस्या, पिछले जीवन के कार्य भी उनके साथ जुड़े हुए आते हैं. . . और कोई न कोई ऐसे पुण्य उन्होंने जरूर किये होंगे, जिसकी वजह से उन्होंने गुरुदेव के घर में जन्म लिया होगा. . . उनका जन्म लेना अपने-आप में एक हेतु है. . . कोई न कोई धारणा अवश्य है इसके पीछे, कोई न कोई विचार या इस ब्रह्माण्ड की इच्छा बलवती होगी, तभी तो उन्होंने मां भगवती के गर्भ से जन्म लिया है।

इसके पीछे एक बहुत बड़ा रहस्य छिपा है. . . और वह रहस्य तब प्रकट हुआ, जब इस छोटी-सी उम्र में भी उन्होंने उस ब्रह्म दीक्षा को आत्मसात् कर लिया, यह दीक्षा यदि किसी अधूरे शिष्य को दी जाती, तो उसका शरीर फट जाता, उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते और वह उस तेजस्विता को नहीं झेल पाता. . . क्योंकि बहुत कठिन तपस्या के बाद ही यह सम्भव होता है।

इसीलिए प्रश्न न छोटी-बड़ी उम्र का है, न राजसी भोग-विलास का। विश्वामित्र अपने-आप में पूर्ण ऐश्वर्य के साथ जीवित रहे, वशिष्ठ अपनी दोनों पत्नियों के साथ गृहस्थ जीवनयापन करते रहे, मगर उसके बाद भी वे ''ब्रह्मर्षि'' कहलाये. . . फिर गृहस्थ जीवन में रहना या नहीं रहना कोई मायने नहीं रखता. . . मायने रखता है— ''क्या सिद्धाश्रम से आज्ञा प्राप्त हुई है? क्या शिष्य में उसे ग्रहण कर पाने की योग्यता है।''

. . .और सबसे बड़ी प्रसन्नता की बात यह है, कि उन्होंने इस क्रिया को पूर्णतः आत्मसात् कर लिया, और जब मैंने पूछा— ''आपको कैसा लगा?''

तो उन्होंने कहा— ''जैसे शरीर के भीतर हजारों-हजारों परमाणु विस्फोटित हो रहे हों, अणु-अणु टूट रहे हों, बिखर रहे हों. . . और फिर ऐसा लगा, जैसे अब मैं बिखरता हुआ ही पूर्णता के साथ जुड़ता जा रहा हूं, चारों तरफ फैल रहा हूं, सारा ब्रह्माण्ड मुझमें समाहित हो रहा है. . . और वह समस्त ब्रह्माण्ड मैं अपनी आंखों के सामने स्पष्ट होता देख रहा हूं. . . कुछ क्षणों के लिए तो मैं कहां हूं, किस प्रकार से हूं, इसका मुझे कुछ भान ही नहीं रहा, किन्तु १५ मिनट बाद ही मुझमें एक अलौकिक भाव आ गया था, और यही चिन्तन आया, कि मैं भारतीय मर्यादाओं और शास्त्रों को पूर्णता के साथ ऊंचाई तक पहुंचाऊं, और यही मेरी इच्छा है।''

—और समस्त शिष्य उन्हें अपने बीच उपस्थित देखने के लिए चातक की तरह निहार रहे हैं, कि वे आयें और ऐसे उच्चकोटि के व्यक्तित्व से हमें, जो ब्रह्म दीक्षा प्राप्त योगी हैं, दीक्षा लेने का सौभाग्य प्राप्त हो, वे हमारे आज्ञा चक्र को जाग्रत करें और हमें ऊंचा उठायें, जिससे कि हम भी उस क्रिया को प्राप्त करने के लिए सक्षम अधिकारी बन सकें, और अपने-आप में पूर्णता प्राप्त कर सकें।

वास्तव में ही यह अपने-आप में एक ऐतिहासिक घटना थी, एक ऐसी घटना, जब एक नन्हीं सी बूंद उछल कर अपने-आप में पूर्ण समुद्र बन गई।

**— सुभाष शर्मा**

# जिसका ध्येय साधक को पूर्ण भौतिक आनन्द प्रदान करना है। एक अत्यंत गोपनीय, दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण प्रयोग : ऐसा प्रयोग-दिवस वर्ष में एक बार ही तो आता है।

'अप्सरा' शब्द का अर्थ ही है प्रेम, आनन्द, माधुर्य, सौन्दर्य आदि गुणों से युक्त होना। अप्सरा चाहे कोई भी हो, चाहे वह उर्वशी हो या रम्भा, सौन्दर्य और प्रेम रस की प्रतिमूर्ति होती है. . . और जहां यौवन गर्विता हो, वहां तो अन्य सभी अप्सरायें उसके दिप्-दिप् करते सौन्दर्य के समक्ष फीकी हो जाती हैं।

**यौवन गर्विता अप्सरा, जो धन, वैभव, ऐश्वर्य, सम्पन्नता प्रदान करती है उस साधक को, जिसने उसे सिद्ध कर लिया हो, मंत्रबद्ध कर लिया हो। इस साधना के निम्नांकित लाभ हैं, जो इस प्रकार हैं –**

१. यह अत्यन्त ही सरल साधना है, इसमें किसी प्रकार का कोई जटिल विधि-विधान नहीं है।
२. यह साधना सिद्धिप्रद एवं फलदायी है।
३. इससे साधक को किसी भी प्रकार की कोई हानि नहीं पहुंचती, अपितु लाभ ही पहुंचता है।
४. इस अप्सरा साधना को सम्पन्न करने पर यौवन गर्विता जीवन भर सुन्दर एवं सौम्य रूप में साधक के वश में बनी रहती है, और साधक के समस्त मनोरथों को पूर्ण करने में सहायक होती है।
५. यौवन गर्विता का ध्येय ही यह होता है, कि वह साधक को समस्त भौतिक आनन्द प्रदान कर सके।

६. वह सुन्दर बन सके, एक ऐसा सौन्दर्य उसे प्राप्त हो, जिसे देखते ही सामने वाला खुद-ब-खुद खिंचा चला आये, क्योंकि इस अप्सरा साधना से उसे ऐसे ही आकर्षक, चुम्बकीय व्यक्तित्व की प्राप्ति होती है।
७. उसके शरीर से रोग, जर्जरता स्वतः ही समाप्त होने लग जाती है।
८. वृद्धावस्था भी यौवनावस्था में परिवर्तित होने लगती है, ठीक उस यौवन से भरपूर शरीर ही उस साधक को प्राप्त होता है, जिसे देखकर आंखें ठहर सी जायें।
९. वह सलाहकार के रूप में साधक को निरन्तर सहयोग प्रदान करती रहती है।
१०. वह साधक को शारीरिक और मानसिक रूप से तुष्टि प्रदान करती है।
११. मुसीबत पड़ने पर वह साधक की तन-मन-धन से सेवा करती रहती है।
१२. वह दृश्य और अदृश्य दोनों ही रूपों में साधक के साथ हर क्षण बनी रहती है।

यह जीवन की श्रेष्ठ साधनाओं में से एक है, जहां इसे देवताओं ने सिद्ध किया, वहीं इसे योगियों, संन्यासियों आदि ने भी सिद्ध कर सफलता प्राप्त की है।

**यौवन गर्विता अप्सरा का तात्पर्य है, ऐसी देव वर्ग की स्त्री, जो सौन्दर्य की दृष्टि से अनुपमेय हो, न केवल चेहरे की सुन्दरता, वरन् शारीरिक सौन्दर्य, वाणी, नृत्य, संगीत, काव्य, हास्य, विनोद समस्त प्रकार के सौन्दर्य से भरपूर हो. . . और फिर ऐसा सौन्दर्य, जो असमय बूढ़े पड़ गये मन को यौवन से भर दे, एक नयी ताजगी, तरंग, उल्लास, उमंग का उसके जीवन में संचार कर दे।**

पुरुष अपने पौरुष को प्रकट करने और स्त्रियां अपने सौन्दर्य को प्रस्फुटित करने के लिए क्या कुछ नहीं करतीं, ब्यूटी पार्लर में जाती हैं, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक सभी प्रकार की दवाओं का सेवन कर अपने सौन्दर्य को निखारने का प्रयास करती हैं, किन्तु इससे बनावटी और नकली सौन्दर्य ही प्राप्त होता है, और वह कुछ समय तक ही रहता है, इसीलिए, अप्सरा साधना ही वह दिव्य और वास्तविक सौन्दर्य प्रदान करने में सहायक होती है, जिसे सिद्ध कर लेने पर साधक को अर्थात् स्त्री व पुरुष को कहीं भी भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

**अप्सरा साधना करना जीवन का परम सौभाग्य माना जाता है। हमारे विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि श्रेष्ठ ऋषियों ने भी इस साधना की महत्ता और दिव्यता को प्रतिपादित किया और इससे सम्यक् लाभ अपने जीवन में उठाने का प्रयत्न किया।**

हकीकत में देखा जाय, तो सम्पूर्ण प्रकृति के सौन्दर्य को समेट कर जो साकार रूप दिया जाता है, उसे 'नारी सौन्दर्य' कहते हैं, अतः यौवन गर्विता अप्सरा अत्यधिक सुंदर, तेजस्वी और सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है, जो अत्यंत नाजुक, कमनीय और षोडश वर्षीया युवती के रूप में साधक के सामने बनी-ठनी रहती है।

सुन्दर मांसल शरीर, अत्यन्त उन्नत वक्षस्थल, काले, घने, लम्बे बालों का सौन्दर्य, बोलती हुई आंखों का जादू, मन को मुग्ध कर देने वाली मुस्कान, हृदय को छू लेने वाली शैली, दिल को गुदगुदा देने वाला अंदाज. . . सभी कुछ तो है उसमें, अपने-आप में पूर्ण यौवन के भार से लदी हुई, जिसे देखकर कोई बच नहीं सकता, उसके शरीर से प्रवाहित होती दिव्य गंध से देवता भी आकर्षित होते रहते हैं।

**यौवन गर्विता सम्पूर्ण गुणों से युक्त सम्पूर्ण सौन्दर्य को अपने-आप में समेटे एक ऐसी अप्सरा है, जो साधक को हर पल-हर क्षण आनन्दित करती रहती है, कभी अपने सौन्दर्य के माध्यम से, तो कभी अपने भावों के माध्यम से, तो कभी अपने कार्यों व गुणों के माध्यम से, क्योंकि इसका ध्येय ही है साधक को पूर्ण आनन्द प्रदान करना।**

सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित, चिरयौवना, जो प्रेमिका या प्रिया के रूप में साधक के समक्ष रहती ही है, यदि इसे पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ सिद्ध कर लिया जाय तो।

"यौवन गर्विता अप्सरा साधना" स्त्री और पुरुष दोनों में से कोई भी कर सकता है, क्योंकि जितनी यह पुरुष वर्ग के लिए लाभदायी है, उतनी ही यह स्त्री वर्ग के लिए भी श्रेष्ठ साधना है, अतः साधक या साधिका कोई भी इस साधना को सम्पन्न कर पूर्ण भौतिक आनन्द प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है।

## साधना विधि :

१. **अप्सरा यंत्र, यौवन गर्विता माला** तथा **सौन्दर्य गुटिका** पहले से ही मंगवा कर रख लें।
२. इस साधना का विशिष्ट मुहूर्त **७ अगस्त पवित्रा एकादशी है ८.३५ से ११.०० बजे के मध्य या किसी भी शुक्रवार के दिन**।
३. यह **दो दिवसीय रात्रिकालीन साधना** है।
४. इस अप्सरा साधना से पूर्व उस स्थान को, जहां साधना करनी हो शुद्ध, स्वच्छ कर, सुगन्धित अगरबत्ती एवं इत्र आदि से उसे सुखद बना लेना चाहिए और स्वयं भी सुन्दर, सुसज्जित वस्त्र धारण कर लें।
५. **पूर्व दिशा** की ओर मुख करें।
६. सुन्दर, स्वच्छ **गुलाबी आसन** पर बैठें।
७. अपने सामने एक चौकी पर भी नया गुलाबी आसन बिछा लें।
८. फिर उसके मध्य में, गुलाब की पंखुड़ियों के बीच में "अप्सरा यंत्र" को स्थापित कर दें तथा केसर, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प आदि से उसका पूजन करें।
९. उपरोक्त गुटिका को भी यंत्र के दायें भाग में चौकी पर स्थापित करें।
१०. सर्वप्रथम **गुरु-पूजन** सम्पन्न कर साधक इस साधना की सफलता हेतु प्रार्थना करें।
११. इसके पश्चात् एक गुलाब का पुष्प यंत्र के सामने रखकर यौवन गर्विता अप्सरा का निम्न मंत्र पढ़कर आह्वान करें—

**आवाहयामि भो! दीप्ते पूर्ण यौवन संस्तुते।**
**ममाभीष्ट प्रदानाय त्वरितमायाहि रंजिते।।**

अर्थात् "हे यौवन से परिपूर्ण दीप्तियुक्त रंजिते! मुझे अभीष्ट प्रदान करने के लिए, शीघ्र उपस्थित हों।"

१२. इसके पश्चात् दो मिनट तक मौन रहकर, अपना ध्यान एकाग्र कर, शांतचित्त हो मन ही मन अत्यंत दिव्य सौन्दर्य युक्त नारी छवि को अपने मन में उतारने का प्रयास करें।
१३. फिर निम्न मंत्र का "यौवन गर्विता माला" से **११ माला मंत्र-जप** करें—

**मंत्र**

**ॐ श्रीं ह्रीं अप्सरायै ह्रीं श्रीं**

१४. मंत्र-जप के पश्चात् दूसरे दिन भी इसी विधि से साधना सम्पन्न करें।
१५. अंतिम दिन जप आरम्भ करने से पूर्व गुलाब की एक माला पहले से ही लाकर रख लें।
१६. मंत्र-जप पूरा होने के बाद यंत्र पर उस माला से उपरोक्त मंत्र का एक माला जप ५ दिन तक करते रहें तथा सातवें दिन समस्त सामग्री— यंत्र, गुटिका एवं माला को किसी नदी, कुएं या तालाब में प्रवाहित कर दें।

**पन्द्रह दिन बाद से ही साधक को यौवन गर्विता की उपस्थिति का आभास स्वतः ही होने लगेगा। यह साधना सुपरीक्षित है, अनेक साधकों ने इससे लाभ उठाया है, अतः पूर्ण मनोयोग से साधना करने पर अवश्य ही साधक की मनोकामना पूर्ण होती है, तथा उसे अपने व्यक्तित्व में आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखने लगता है।** यह सौभाग्य की बात है, कि इस तरह की साधना पत्रिका में प्रकाशित होती है, जिसका सभी गृहस्थ साधकों को भौतिक जगत् में पूर्णतया उन्नति और सफलता प्राप्ति हेतु लाभ उठाना ही चाहिए।

सामग्री न्यौछावर — अप्सरा यंत्र - २४०/-, यौवन गर्विता माला - १७५/-, सौन्दर्य गुटिका - १०१/-

**छलछलाहट और उमंग से मदमस्त कर देने वाली, अपने सौन्दर्य से साधक को चकाचौंध करने वाली तथा ऐश्वर्य, धन, वैभव, मान-प्रतिष्ठा और समस्त भौतिक सुखों को प्रदान कर पूर्ण आरोग्य प्राप्ति की आधारभूता. . .**

## गुरु मंत्र आरोग्य प्रदाता

मैं अशोक कुमार गुप्ता कोरभी सोनार का रहने वाला हूं, और पूज्य गुरुदेव के चरणों का छोटा-सा दास हूं। एक बार मैं बिलासपुर जा रहा था, तो सफर में गाड़ी के अन्दर मेरे बगल वाली सीट पर "श्री हरीशचन्द्र देवांगन जी" अपनी ३२ वर्षीया पुत्री के साथ बैठे हुए थे। मैंने उनसे बैठने के लिए स्थान मांगा, तो वे बोले— "मेरी पुत्री की तबियत खराब है।"

मैंने पूछा— "क्या बीमारी है इसे?

वे बोले— "इसका मुंह तिरछा हो गया है और यह पानी तक नहीं पी सकती।"

मैंने कहा— "ठीक है, मैं अपने गुरुदेव से विनती करता हूं, और तीन बार गुरु मंत्र से जल अभिमंत्रित कर उसे दे दिया।"

उन्होंने वह जल अपनी लड़की को गुरु का प्रसाद बताते हुए दे दिया। उन्होंने मुझसे पूछा— "आपके गुरु कौन हैं?"

मैंने कहा— "मेरे गुरुदेव जोधपुर में रहते हैं, उनका नाम **"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली"** है।"

उन्होंने कहा— "मेरी लड़की की पुकार सुन ली है गुरु जी ने, आपके गुरु तो साक्षात् शिव हैं।"

उसके बाद वह जल पीने लगी और कुछ ही देर बाद वह लड़की ठीक होने लगी और उसके मुंह से आवाज भी आने लगी, वह सबसे बोली— "जय गुरु बाबा! आपने मेरी पुकार सुन ली, आपको मेरा प्रणाम है। उसके बाद मैं गाड़ी से उतर कर घर आ गया। ठीक दूसरे दिन वे मेरे घर आये और बोले— "मेरी लड़की की बीमारी बिलकुल ठीक हो गई है।"

तभी मेरे मुख से निकला— "हे शिष्यों की लाज बचाने वाले परम आराध्य देव आपको मेरा कोटिश चरण-वन्दन।"

**अशोक कुमार गुप्ता, कोरभी सोनार**

## असाध्य रोग गठियावात से पूर्ण मुक्ति

मैं पिछले पांच वर्षों से गठियावात से पीड़ित थी, जहां भी मालूम हुआ, वहां एलोपैथिक, आयुर्वेदिक इलाज के लिए गई, परन्तु कोई स्थायी लाभ नहीं हुआ। झाड़-फूंक भी बहुत कराई, परन्तु कुछ न हुआ। हर तरफ से निराशा के कारण अविश्वास का उदय हुआ।

सौभाग्य से मुझे गुरुदेव से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने पंचवर्षीय सदस्यता में गुरुदेव से कृपापूर्वक **"रोगमुक्ति दीक्षा"** प्राप्त की। प्रारम्भ में हल्का आराम महसूस हुआ, परन्तु दर्द बढ़ता-घटता रहता, सूजन भी कम-ज्यादा होती रही। विश्वास-अविश्वास में गोते लगाते हुए भी मैंने पति के आग्रह पर **"गुरु साधना"** तांत्रोक्त रूप से सवा लाख गुरु मंत्र-जप कर सम्पन्न की।

एक दिन स्वप्न में भगवत्पाद गुरुदेव एवं जगतजननी माता जी ने दर्शन देकर दीक्षा दी, व्यायाम कराया एवं कुछ निर्देश दिए, जिसमें नियमित अभ्यास करने का कड़ा निर्देश था। माता जी बोलीं, कि यदि ऐसा नहीं किया, तो सभी कहेंगे, कि तुम्हारे गुरुदेव ने तुम्हें ठीक नहीं किया। कुछ ही समय बाद से अब मेरा रोग सूजन एवं दर्द सहित पूर्णरूप से ठीक है।

इतना ही नहीं, कराला शिविर से लौटकर मैं अपने मायके बैरागढ़, भोपाल आ गई, तब स्वप्न में गुरुदेव ने पूर्ण शिव स्वरूप में दर्शन दिए एवं अपनी करुणामयी कृपा-दृष्टि से मुझे धन्य-धन्य कर दिया। यह निश्चित ही हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है, कि ऐसे अद्वितीय, अवतारी सद्गुरु हम सभी को सहज, सुलभ हैं, परन्तु यह हमारी न्यूनता है, कि हम चन्द पैसों का मुंह देखकर, अकारण ही आलोचना कर अपना ही नुकसान कर लेते हैं।

**आशाताम्रकार**

**बैरागढ़, भोपाल (म० प्र०)**

## रोग मुक्ति और गुरु कृपा

अपने पूज्य पिताजी के स्वर्गवास के एक माह बाद मैं गुरुदेव से मिलने दिल्ली आया था। गुरुदेव द्वारा पहली मुलाकात में कहे गये शब्द. . . **"अब तो तुम मेरे पुत्र जैसे हो"**. . . आज भी मेरे कानों में गूंजते रहते हैं, और मैंने देखा है, आज तक गुरुदेव ने मुझे अपना पुत्र समझकर ही स्नेह दिया है।
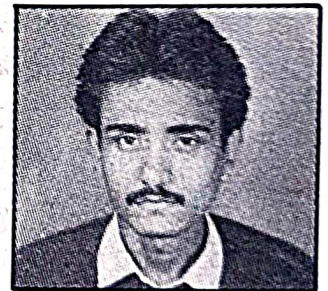
नवम्बर ९३ में मैं **"सामान्य दीक्षा"** और **"विशिष्ट दीक्षा"** लेने दिल्ली आया था, उस समय मेरे आज्ञा चक्र में एक विशेष प्रकार का दर्द शुरू हो गया, जिससे मुझे लगता था, कि कोई मेरे माथे में अन्दर से सूई चुभो रहा है। गुरुदेव से **"शक्तिपात दीक्षा"** लेते ही दर्द धीरे-धीरे जाता रहा। दीक्षा लेने वाले दिन से ही मुझे सद्गुरुदेव के स्वप्न में दर्शन होने लगे थे, लेकिन आज स्थिति यह है, कि मैं हर दूसरे या तीसरे दिन गुरुदेव के स्वप्न में दर्शन करता हूं, और चरण स्पर्श भी। एक-दो बार नहीं, कई बार गुरुदेव ने मुझे स्वप्न में विशेष दीक्षा दी है।

एक बार जब मेरी तबियत कुछ खराब थी, तो मैंने स्वप्न

में देखा गुरुदेव ने आकर हवन किया, सुबह जब उठा, तो मैं बिलकुल ठीक था। मेरा गला अकसर खराब रहता था, जिसकी वजह से मुझे खांसी रहती थी। डॉक्टर को दिखाया, तो उसने महीनों तक इलाज किया, करने के बाद एक दवाई दे दी, और कहा कि जब भी गला खराब हो, इससे गरारे कर लेना, मगर मुझे लगता था, कि यह रोग मेरी मौत के साथ ही जायेगा, क्योंकि मेरे पिताजी को भी यही रोग था।

भोपाल शिविर से लौटने के बाद एक रात मैंने देखा— गुरुदेव ने मुझे दीक्षा दी, जिस वजह से मेरे गले में से मांस के छोटे-छोटे टुकड़े निकले और सुबह जब मैं उठा, तो मेरा गला बिलकुल ठीक था और आज भी मेरा गला बिलकुल सही है।

**मुकेश कुमार सक्सेना, लश्कर,**
**ग्वालियर**

## गुरु कृपा ही केवलम्

मैं विगत कई वर्षों से पूज्यपाद गुरुदेव से जुड़ा हूं। गुरुदेव से मुलाकात होते ही ऐसा प्रतीत हुआ, कि मेरा भी कोई इस दुनिया में है। तत्पश्चात् पत्रों के माध्यम से गुरुदेव से सम्पर्क कर उनकी सान्निध्यता का एहसास करता रहा। एक दिन अचानक बस स्टॉप पर **''हीरक जयन्ती महोत्सव १९९४ की पत्रिका''** बुक स्टॉल से प्राप्त की, जिसमें गृहस्थ साधकों को गुरुदेव का संदेश नामक पत्रोत्तर भी पढ़ा, जिसमें ''कुण्डलिनी जागरण साधना'' के लिए गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

१५ जुलाई ९४ को दिल्ली में **''कुण्डलिनी जागरण दीक्षा''** प्राप्त कर, साधना में संलग्न हो गया, तब से विशेष प्रकार के अनुभव साधना में प्राप्त हो रहे हैं। कभी-कभी तो गुरुदेव एवं माता जी के दर्शन प्राप्त होते हैं, तो कभी-कभी नीला प्रकाश एवं दुधिया प्रकाश ध्यानावस्था में प्रतीत होता है और कभी शिवलिंग के दर्शन होते हैं, तब मैं हाथ-पैर हिलाकर जाग्रतावस्था का एहसास करता हूं, तथा इस तुच्छ पर गुरुदेव की कृपा का एहसास कर बरबस ही रोने लगता हूं।

यही नहीं, जहां आध्यात्मिक-पथ पर मैं पूर्णता की ओर अग्रसर हो रहा हूं, वहीं भौतिक-पथ पर भी मेरी इच्छा पूर्ण हो रही है। उपरोक्त दीक्षा के बाद ही तीव्र गति से स्वास्थ्य लाभ एवं शरीर पूर्णतया निरोग हो गया है, तथा प्रत्येक कार्य में सफलता ही प्राप्त होती है। बहुत दिनों से मुझे पुत्र की कामना थी, गुरुदेव की असीम कृपा से मुझे पुत्र की प्राप्ति हुई, यह समस्या भी मैंने प्रपत्र में भरकर गुरुदेव को भेजी थी। आज मेरा परिवार खुशी से झूम रहा है एवं प्रभु दर्शन के लिए विह्वल हो रहा है।

**श्री गिरीश चन्द्र वाजपेयी**
**लखीमपुर खीरी (उ० प्र०)**

## जगदम्बा तारा ने जल पिलाया

मैंने कभी सोचा भी नहीं था, कि कभी ईश्वरीय शक्ति के साक्षात् दर्शन साधना के द्वारा सम्भव हैं, और न ही मुझे इन बातों पर विश्वास था, परन्तु एक साथी के आग्रह पर मैंने पत्रिका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** की सदस्यता ली।

कराला दिल्ली शिविर में पहली बार भाग लिया तथा कूष्माण्ड साधना, तारा साधना एवं लक्ष्मी साधना सम्पन्न कीं, जिसमें मुझे **''तारा साधना''** घर पर करने की प्रेरणा मिली।

मैं गृह मंत्रालय में चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी हूं एवं मेरी चार लड़कियां हैं। मैंने गुरुदेव की आज्ञा पाकर घर पर पूर्ण साफ-सफाई कर साधना आरम्भ कर दी। पहले दिन मुझे अर्धरात्रि के समय मेंहदी लगे हाथ दिखाई दिए, उसके बाद कुछ क्षणों के बाद मेंहदी वाले पैर दिखाई दिए, चौथे दिन मुझे माता जी का चित्र ध्यान में स्पष्ट दिखाई दिया, जो सुन्दर आभूषणों से युक्त था, साथ में एक काले रंग का कुत्ता भी था, उन्होंने मुझसे कहा, कि— ''तुम जल पी लो, तुम्हें प्यास लगी है।'' मुझे अन्दर से निर्देश मिला, कि तुम जल नहीं पीना और मैं मंत्र-जप करता रहा, तथा मां तारा जल लिए वहीं खड़ी रहीं।

उन्होंने मुझे कई बार डिगाने की कोशिश की, परन्तु मैं आत्मा में गुरु जी से प्रार्थना कर रहा था, कि मेरी साधना किसी भी प्रकार से भंग न हो। मंत्र-जप होने तक माता जी वहीं खड़ी रहीं, तब मैंने गुरुदेव से आज्ञा ली, कि मैं अब क्या करूं, तो गुरु जी ने कहा कि— ''अब तुम माता जी के हाथ से जल पी सकते हो।'' माता जी ने हाथ आगे बढ़ाया, तो उनके हाथ में कलश आ गया, जो काफी सुन्दर बना हुआ था। मैंने भी हाथ बढ़ाकर माता जी से कहा, कि अगर आप मुझे जल पिलाना चाहती हैं, तो कृपया हाथ में जल दीजिए, जैसे ही मैंने जल लेने के लिए हाथ आगे बढ़ाया, उस कलश से जल हाथ में गिरने लगा और मैं उसे पीने लगा।

साधना काल में मुझे कई विघ्नों का सामना करना पड़ा, जैसे— अचानक शरीर में दर्द होना, धन-दौलत का लालच आदि, परन्तु मैं गुरुदेव की आज्ञानुसार मंत्र-जप करता रहा। अन्तिम दिन मंत्र-जप की पूर्णता होने पर गुरुदेव से आज्ञा मांगी, कि माता जी थाल लेकर खड़ी हैं, मैं क्या करूं? तब गुरुदेव ने आज्ञा दी, कि— ''तुम्हें धन की आवश्यकता तो है ही, अतः ले सकते हो,'' और तब मैंने माता जी से धन का थाल ले लिया। माता जी की ही आज्ञानुसार जब भी मैं रात्रि को पूजन कर ११ बार तारा मंत्र का उच्चारण करता हूं, वे मेरे सामने होती हैं। साधना के बाद मुझे कई माध्यमों से धन-लाभ मिला है, अतः परिवार में भी सुख-शांति है।

**राधेश्याम, जय विहार, नयी दिल्ली**

# इस मास में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

**केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना**

दिल्ली और इसके आस-पास रहने वाले साधकों एवं शिष्यों के लिए एक नई योजना प्रारम्भ कर रहे हैं, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली "**गुरुधाम**" में ही **पूज्य गुरुदेव** या **श्री राम चैतन्य जी शास्त्री** के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जायेंगी, जो कि उस दिन **शाम ५ से ८ बजे** के बीच सम्पन्न होंगी।

साधना में भाग लेने वाले को यंत्र, पूजन-सामग्री आदि गुरुधाम से ही निःशुल्क उपलब्ध होगी (केवल धोती और दुपट्टा अपने साथ लावें या न हो तो यहां से प्राप्त कर लें)–

**१५ अगस्त ९५ – बगलामुखी साधना**

जीवन में शत्रु का होना अत्यन्त दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति होती है, जिसके कारण घुट-घुट कर जीने के लिए व्यक्ति मजबूर होता है, उस भयावह एवं घातक परिस्थिति को टालने के लिए यह साधना केवल आपके लिए है।

**१८ अगस्त ९५ – श्री कृष्ण जन्माष्टमी – पुत्र प्राप्ति साधना**

किसी भी साधना को सम्पन्न करने के लिए जन्माष्टमी जैसे शुभ मुहूर्त की साधकों को प्रतीक्षा रहती है, क्योंकि इस दिन "पुत्र प्राप्ति साधना" कर कृष्ण की तरह ही पौरुषवान पुत्र को प्राप्त किया जा सकता है।

**२९ अगस्त ९५ – गणेश जयन्ति – गणपति साधना**

विघ्न विघातक भगवान् गणपति की साधना प्रत्येक साधक के लिए उतनी ही आवश्यक है, जितना की नेत्रहीन के लिए प्रकाश। इस साधना से दुर्भाग्य समाप्त हो तथा सौभाग्य जगे।

**२ सितम्बर ९५ – भुवनेश्वरी साधना**

साक्षात् लक्ष्मी स्वरूपा एवं सौभाग्य को शीघ्र प्रदान करने वाली यह साधना जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है, वह भी पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में . . .

**उपरोक्त दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे–**

१. आप-अपने किन्हीं दो मित्रों या स्वजन को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर प्रत्येक से 180/- रुपये वार्षिक शुल्क तथा 16/- रुपये डाक व्यय इस प्रकार कुल 196/- रुपये प्राप्त कर लें। आप इन दोनों मित्रों का शुल्क ( 196+196 = 392/-) जमा करा कर, कार्यालय से रसीद प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको साधना-सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क "**नवनिधि प्रदायक कुबेर यंत्र**" दिया जायेगा व उन दोनों सदस्यों को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप "**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**" पत्रिका निष्ठापूर्वक प्रतिमाह भेजते रहेंगे।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं दो वर्ष की सदस्यता प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको "**नवनिधि प्रदायक कुबेर यंत्र**" उपहार स्वरूप प्राप्त नहीं हो सकेगा।

३. आप यदि किन्हीं कारणों से दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 360/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।

४. प्रत्येक साधना दिवस का शुल्क 360/- रुपये या दो पत्रिका सदस्य है।

**नोट : इस योजना में आप-अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं करा सकते।**

**सम्पर्क**

**सिद्धाश्रम,** 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

हमारे सौरमण्डल में पृथ्वी के अस्तित्व को कायम रखने के लिए सूर्य का सर्वोपरि स्थान है, यदि सूर्य न हो, तो इस पृथ्वी पर प्रकृति का कोई अस्तित्व नहीं है, क्योंकि सूर्य के प्रकाश से ही सम्पूर्ण धरा आलोकित है, जिसके प्रकाश में व्यक्ति के जीवन से अंधकार को समाप्त कर उसे नवीन चेतना, जागृति से भर देने की क्षमता है।

सूर्य की ही वजह से मनुष्य जीवित है, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे इत्यादि समूची प्रकृति विकसित एवं चलायमान है।

— और यदि सूर्य को ग्रहण लग जाय, तो हवा में कार्बनडाइऑक्साइड गैस की अधिकता हो जाती है, पेड़-पौधे कुम्हलाने लगते हैं, सभी चीजें ग्रहण के दुष्प्रभाव से ग्रसित होने लगती हैं, इसीलिए ग्रहण काल मनुष्य और प्रकृति दोनों के लिए ही हानिकारक एवं अशुभ माना जाता है।

किन्तु इस समय को मांत्रिक-तांत्रिक क्रियाओं द्वारा अपने अनुकूल बनाकर उससे हजार गुना लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

इस दिन की गई छोटी-सी साधना भी सवा लाख मंत्र-जप वाले अनुष्ठान के बराबर होती है, क्योंकि जो फल सवा लाख मंत्र-जप करने से प्राप्त होता है, वही ग्रहण काल

में ५ माला या ११ माला मंत्र-जप करने पर ही प्राप्त हो सकता है।

जो ज्ञानी होते हैं, जो विद्वान् होते हैं, जो उच्चकोटि के योगी, संन्यासी होते हैं, वे ऐसे क्षणों को चूकते नहीं है, वरन् ऐसे क्षणों के लिए प्रतीक्षारत रहते हैं, जिससे कि अल्पकाल में ही वे अपने मनोरथों को पूर्ण साकार रूप प्रदान करने में सक्षम हो सकें।

**बड़े से बड़ा तांत्रिक भी इन क्षणों का उपयोग करने से नहीं चूकता, क्योंकि यही क्षण होते हैं– विशिष्ट तंत्र क्रियाओं में सफलता एवं सिद्धि प्राप्त करने के, यही क्षण होते हैं– अभावों से मुक्ति प्राप्त करने के, यही क्षण होते हैं– सम्पन्नता और श्रेष्ठता प्राप्त करने के. . . और अद्वितीय व्यक्तित्व प्राप्त कर लेने के।**

ग्रहण काल अज्ञानियों के लिए अशुभ और ज्ञानियों के लिए शुभ होता है, क्योंकि वे ऐसे स्वर्णिम क्षणों को हाथ से नहीं जाने देते, जब पूर्णता स्वयं प्राप्त होने के लिए साधक का द्वार खटखटा रही हो, ऐसे व्यक्ति उसका स्वागत कर पूर्ण हो जाते हैं, क्योंकि यह क्षण ही भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों में पूर्णता प्राप्त कर लेने का है, इसीलिए ऐसे व्यक्ति, ऐसे साधक या योगी इस क्षण का लाभ उठाने के लिए बहुत पहले से ही तैयारी शुरू कर देते हैं, जिससे कि वे निश्चित समय पर साधना, मंत्र-जप द्वारा अपने जीवन में सफलता एवं सम्पन्नता प्राप्त कर श्रेष्ठ मानव बन सकें।

**शुभे तीर्थे शुभे काले पुण्ये वासर एव च**
**लक्ष्यं मंत्र जपेनैव हठात् सिद्धिश्च जायते।**
**तदेव पुण्यं सा सिद्धिः सूर्ये च ग्रहणे स्थिते**
**पंच माला जपाच्चैव सिद्धिर्भवति निश्चितम्।।**

**अर्थात् ''पवित्र तीर्थ में, शुभ लग्न में और शुभ दिन एक लाख मंत्र-जप करने से जो पुण्य लाभ होता है, वह सूर्य ग्रहण काल में केवल पांच माला मंत्र-जप करने से स्वतः प्राप्त हो जाता है. . . और साधना सफल हो जाती है।''**

**इस बार शास्त्रों आदि के आधार पर साधनात्मक दृष्टि से यह विशिष्ट दिवस, विशिष्ट क्षण मंगलवार २४ अक्टूबर १९९५ को है। प्रातः ७ बजकर २२ मिनट पर भूमण्डल पर पुनः सूर्य ग्रहण लगने का योग है तथा ९ बजकर ४७ मिनट पर मोक्ष होगा। ग्रहण का मध्यकाल ८ बजकर ३० मिनट पर होगा। ग्रहण का पूर्णकाल २ घंटा २५ मिनट तक रहेगा। तुला राशि व चित्रा नक्षत्र पर यह ग्रहण है।**

सूर्य ग्रहण के समय यदि साधक **''मुण्डकाली प्रयोग''** को सम्पन्न कर लेता है, तो उसके चेहरे पर व्याप्त दुःख, निराशा अपने-आप ही समाप्त हो जाती है, क्योंकि यह प्रयोग समस्त मनोरथों की पूर्ति करने वाला जो है। अलग-अलग प्रयोग-विधानों की अपेक्षा, यदि इस प्रयोग को सम्पन्न कर लिया जाय, तो जीवन से रोग-शोक, चिन्ता, बाधा सब कुछ समाप्त होता ही है, इसमें कोई दो राय नहीं। यह प्रयोग गोपनीय, दुर्लभ और तीक्ष्ण प्रभावकारी है. . . खुद ही आजमा कर देख लीजिए–

**ग्रहण काल में इस प्रयोग को निम्नलिखित कार्यों की पूर्ति हेतु सम्पन्न किया जा सकता है–**

१. यदि व्यक्ति गरीब हो, निर्धन हो और धनागम का कोई स्रोत नहीं हो या लक्ष्मी स्थिर न रहती हो।
२. यदि रोगों से छुटकारा नहीं मिल पा रहा हो।
३. यश, वैभव, मान, सम्मान, ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु।
४. यदि कोई व्यक्ति किसी कारण वश विरोधी हो जाय और उससे हानि होने की आशंका हो, तो उसे निस्तेज और परास्त करने के लिए।
५. किसी भी व्यक्ति को अपने विचारों के अनुकूल बनाकर कार्य पूर्ति हेतु।
६. यदि किसी साधना में बार-बार प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल पा रही हो।

वस्तुतः सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिए ही इस प्रयोग को इन विशिष्ट क्षणों में सम्पन्न करने पर निश्चित लाभ प्राप्त होता ही है।

**प्रयोग विधिः**

१. इस प्रयोग के लिए आवश्यक सामग्री है– **काली यंत्र, मनोकामना चैतन्य माला, मुण्ड फल।**
२. प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर साधक स्नान आदि नित्य क्रियाओं को पहले से ही सम्पन्न कर लें।
३. साधक **पूर्वाभिमुख** होकर बैठें।
४. **पीले आसन** का प्रयोग करें और वस्त्र भी पीले ही धारण करें।
५. अपने सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछा दें तथा सभी पूजा सामग्री को एक जगह एकत्र करके अपने समीप

रख लें।

६. सूर्योदय होने पर किसी लोटे में जल लेकर, उसमें कुंकुम और अक्षत मिला लें, और निम्न मंत्र को ३ बार पढ़कर सूर्य को अर्घ्य दें—

**मंत्र**

**ॐ उदित्यं जातवेदसे नमः**

७. फिर आसन पर बैठकर सामने एक प्लेट में "यंत्र" पर कलावा या मौली बांधकर उस पर कुंकुम या लाल चन्दन से चार बिन्दी लगायें, जो कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्रतीक हैं, फिर यंत्र को प्लेट में स्थापित कर दें।

८. अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य आदि से यंत्र की पूजा करें।

६. यंत्र की दाहिनी ओर चौकी पर कुंकुम से रंगे चावलों की एक ढेरी बनाकर उस पर "मंत्रसिद्ध मुण्ड फल" को स्थापित करें।

१०. मुण्ड फल का कुंकुम से तिलक कर अक्षत, पुष्प से पूजन करें।

११. इसके पश्चात् साधक दाहिने हाथ में जल लेकर अपनी इच्छा की पूर्ति हेतु संकल्प लें, और अपने नाम व गोत्र का उच्चारण कर जल छोड़ दें।

१२. फिर निम्न मंत्र का **७ बजकर ४५ मिनट से लेकर ६ बजकर ४५ मिनट तक** "मनोकामना चैतन्य माला" से जप करें—

**मंत्र**

**ॐ ऐं मुण्डाये सर्वं साधय ऐं नमः**

१३. मंत्र-जप के पश्चात् समस्त सामग्री को बाजोट पर बिछे लाल वस्त्र में बांध कर उसी दिन या अगले दिन सुबह बहते जल अर्थात् नदी या समुद्र में विसर्जित कर दें।

१४. पूरे साधना काल में धूप और दीप प्रज्वलित रहना चाहिए।

यह प्रयोग अपने-आप में दिव्य और शीघ्र फलदायी है, इस ग्रहण काल में जिस मनोकामना की पूर्ति के लिए साधना की जाती है, वह अवश्य पूर्ण होती है।

यह सूर्य ग्रहण इस वर्ष में पहली बार आया है, जो अपने-आप में समस्त सिद्धियों को समेटे हुए है, इसलिए इस क्षण को चूकना, व्यक्ति के दुर्भाग्य का ही सूचक होगा, जो इतने बहुमूल्य क्षण को यों ही गंवा दे।

सामग्री न्यौछावर :
काली यंत्र - २४०/-, मनोकामना चैतन्य माला - १५०/-, मुण्ड फल - ६०/-

# इस मास की विशेष दीक्षा

## हनुमान सिद्धि दीक्षा

## श्रीकृष्ण-शरण दीक्षा

## महाकाली सिद्धि दीक्षा

**दीर्घायुष्यं बलौघं श्रुतिसमुदितं चाथ सौख्यैक हेतुं,**
**सौन्दर्यं मानमनघं लसति च लक्ष्मी सर्वलोकैरगम्या।**
**धान्यं हर्म्यं वशित्वं यशसमपि सुवति राजद्वारे सभायां;**
**धन्या दीक्षाभिधेया मुनिभिरनुमता राजराजेकमान्या।।**

**ऋषियों द्वारा अनुमोदित तथा राजा-महाराजाओं द्वारा अभिनन्दित यह 'दीक्षा' शब्द अत्यन्त पावनतम है, जिसके माध्यम से दीर्घ जीवन, शक्ति, सुख समूह, सौन्दर्य, मान, पावनता, सम्पत्ति, भवन, वशीकरण, राज सम्मान और सब कुछ जो जीवन में आवश्यक है, पाया जा सकता है।**
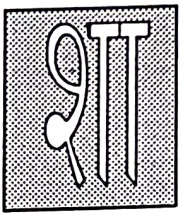
शास्त्रोक्त नियमानुसार 'दीक्षा' गुरु और शिष्य की कड़ी को जोड़ने का एकमात्र आधार है। गुरु दीक्षा के माध्यम से अपने अन्दर निहित ज्ञान के आलोक को जब शिष्य के हृदय में प्रज्वलित कर देता है, तब शिष्य में व्याप्त अज्ञानता रूपी अन्धकार स्वतः ही नष्ट होने लगता है, अतः दीक्षा आत्म-संस्कार का ही दूसरा नाम है।

**दीक्षा का तात्पर्य है– दक्ष होना, सक्षम होना, पूर्ण होना, हर कार्य में, हर क्षेत्र में। दीक्षा शिष्य की निधि है, जो गुरु द्वारा प्रदत्त शक्तिपात क्रिया के माध्यम से प्राप्त होती है, और दीक्षित शिष्य, जिस कार्य हेतु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि यह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एकमात्र लघु उपाय है, जिसके माध्यम से समय और शक्ति दोनों की बचत होती है. . . और मनुष्य को इस प्रगतिशील युग**

**में किसी साधन की आवश्यकता भी क्या है, जब उसके पास दीक्षा जैसा श्रेष्ठतम यंत्र मौजूद है तो। अब यह तो मनुष्य पर निर्भर करता है, कि वह १२० किलोमीटर पैदल अपनी यात्रा पूर्ण करना ज्यादा उत्तम समझता है या यंत्रचालित बस व रेलगाड़ी द्वारा।**

हर माह का अपना एक विशिष्ट महत्त्व होता है, जो कि दैवी शक्ति से आपूरित होता है। यदि मनुष्य को उस शक्ति का, उस तत्त्व का भली-भांति ज्ञान हो जाय, तो वह भी हर कला में पारंगत हो सकता है, और भौतिकता के साथ-साथ अध्यात्म की ऊंचाइयों को छूने की सामर्थ्य भी प्राप्त कर सकता है। दीक्षा जहां आध्यात्मिक पक्ष को पूर्ण करने के लिए उपयोगी है, वहीं भौतिक पक्ष को पूर्ण करने के लिए भी उपयोगी एवं सार्थक है, क्योंकि आज का मनुष्य जब तक अपने भौतिक पक्ष को मजबूत न कर ले, उसमें पूर्णता न प्राप्त कर ले, तब तक वह आध्यात्मिक पक्ष में भी उन्नति प्राप्त नहीं कर सकता।

जो कार्य बड़ी-बड़ी विशिष्ट साधनाओं के सम्पन्न करने पर भी न हो पा रहा हो. . . और वह इसलिए पूर्ण नहीं होता, क्योंकि लम्बे-चौड़े विधानों को पूरा करने पर भी जब साधक को उसमें असफलता ही हाथ लगती है,तो वह उसका कर्मजनित दोष ही कहा जा सकता है, और जब तक उसके उन पाप-दोषों का निवारण नहीं हो जाता, तब तक वह साधना में सफलता भी प्राप्त नहीं कर सकता।

वस्तुतः गुरु अपने शिष्य को उसकी आवश्यकतानुसार बार-बार दीक्षा प्रदान कर उसके उन कर्म-दोषों से उसे मुक्ति प्रदान करने का प्रयास करता है, जिससे कि वह शीघ्र से शीघ्र पाप रहित होकर अपने गन्तव्य को पूर्ण करने में सक्षम बन सके, अतः **दीक्षा दूषित आत्मा के आवरण को समाप्त कर चैतन्यता प्राप्त करने का सरल और सहज उपाय है।**

वैसे तो शास्त्रोक्त मतानुसार हमारे कुल चौरासी करोड़ देवी-देवता माने जाते हैं, किन्तु एक व्यक्ति के लिए सभी देवी-देवताओं की उपासना-साधना करना और वह भी इस कलियुग में, असम्भव सा प्रतीत होता है. . . और हर देवी-देवता का अपना अलग-अलग कार्यक्षेत्र निर्धारित है, उदाहरणतः यदि मनुष्य को बल, पौरुष आदि प्राप्त करना हो, तो लक्ष्मी की साधना-उपासना करने से क्या लाभ, उसके लिए तो हनुमान की ही उपासना करनी होगी।
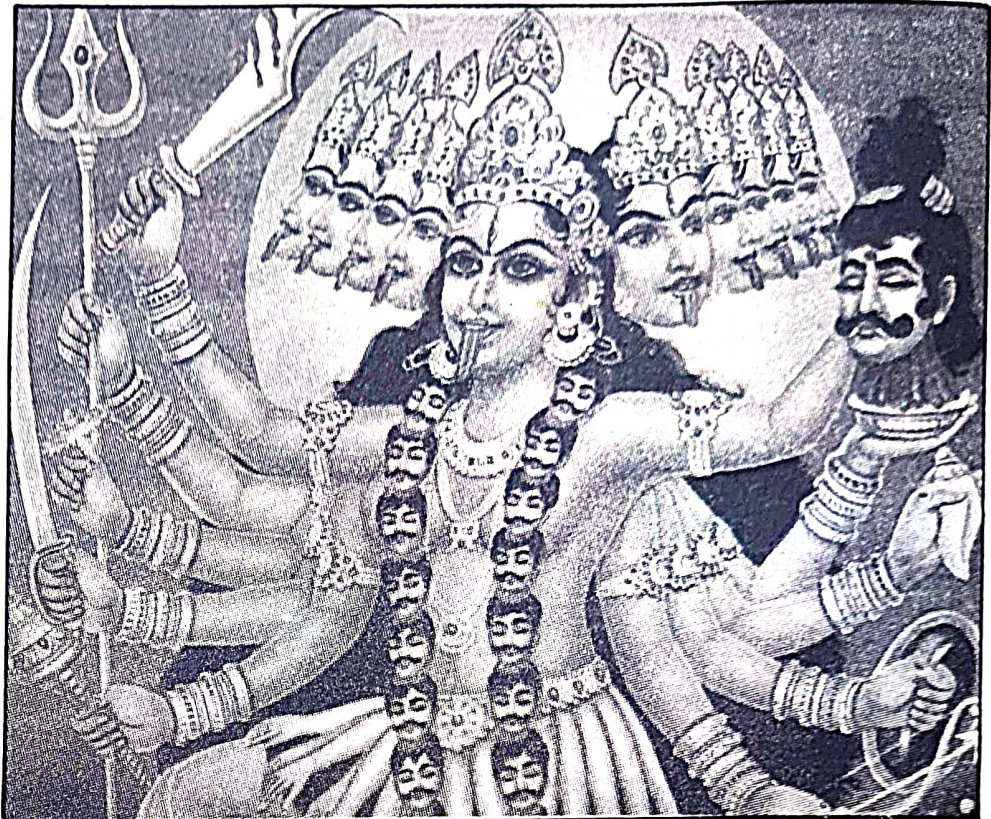
**दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊंचाइयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर लेने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का. . .** तो फिर क्यों न इसके माध्यम से क्षण भर में ही बहुत कुछ प्राप्त कर लिया जाय।

व्यक्ति के जीवन में निरन्तर कोई न कोई बाधा चलती ही रहती है, कभी शत्रु भय, कभी भूत-प्रेत का प्रकोप, तो कभी अकारण क्रोध आना या वीरता और पौरुषता का अभाव होना, जिसके फलस्वरूप वह अनेकों पीड़ादायक स्थितियों से जूझता हुआ अपने जीवन से हताश और निराश हो जाता है. . . और तब वह सहारा लेता है दैवी शक्ति का।

किन्तु हमारे पूर्वजों को यह पहले से ही ज्ञात था, कि आने वाले समय में मनुष्य के पास इतना समय नहीं, कि वह लम्बे-चौड़े अनुष्ठानों को पूर्ण कर सके और यह भी कोई आवश्यक नहीं, कि उससे लाभ प्राप्त हो ही. . . इसलिए उन्होंने युगानुरूप दीक्षा के महत्त्व को प्रतिपादित कर एक समाजोपयोगी रहस्य का उद्घाटन किया, जिससे मनुष्य कम समय में अधिक लाभ प्राप्त कर सके, और वह भी निश्चित रूप से।

यहां व्यक्ति की आवश्यकतानुसार तीन प्रकार की

दीक्षाओं का विवरण दिया जा रहा है, जिसका लाभ प्रत्येक पाठक वर्ग, साधक व शिष्य प्राप्त कर सकता है।

### १. हनुमान सिद्धि दीक्षा

हनुमान तो अपने भक्त की रक्षा करने वाले एकमात्र देव हैं, जो संकट के समय में एवं भूत-प्रेत बाधा को दूर करने तथा बल-वीर्य प्रदान करने वाले हैं। जब हनुमान साधना करने पर भी लाभ की स्थिति न बन रही हो तथा किसी भी प्रकार की भय-बाधा दूर न हो रही हो, तो उसका सीधा, सरल उपाय है–'दीक्षा'।

"हनुमान सिद्धि दीक्षा" को प्राप्त कर साधक को उस साधना में भी सफलता मिलने लग जाती है, साथ ही दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वह स्वयं भी अपने-आप को बलवान, पराक्रमी अनुभव करने लग जाता है, फिर कैसी भी बाधा हो, विपत्ति हो, वह उसका मुकाबला दृढ़ता के साथ, साहस पूर्वक करता है।

**बलमिच्छेच्च दीक्षाभिः, हनुमतः शत्रुदारिणः।**
**बुद्धिं ज्ञानं यया चैव, सर्वं सौभाग्यमीहते।।**

अर्थात् श्री हनुमान शत्रुओं का शमन करने वाले तथा विघ्न विनाशक हैं, अतः यह "हनुमत् दीक्षा" बल, बुद्धि, ज्ञान एवं सौभाग्य को देने वाली है।

### २. श्रीकृष्ण-शरण दीक्षा

मनुष्य की दूषित मनोवृत्तियां ही पुरुषत्व के ह्रास का कारण वनती हैं, फलस्वरूप उनके मन में एक कुण्ठा व्याप्त होने लगती है, जिसे वे संकोचवश कह भी नहीं पाते, किन्तु पुरुषत्व प्राप्त करने के लिए प्रयासरत भी रहते हैं। 'पुरुष' और 'पौरुष' दोनों शब्द एक-दूसरे के पर्याय हैं। जब तक मनुष्य में पुरुषत्व नहीं होगा, प्रेम, सौन्दर्य, माधुर्य आदि गुण नहीं होंगे, तब तक वह पूर्ण पुरुष बन ही नहीं सकता।

मनुष्य वाह्य रूप से तो सौन्दर्य की विषय-वस्तु होता ही है, किन्तु जव वैसा सौन्दर्य, मस्ती, उमंग, जोश, दमखम आंतरिक रूप से न हो, तो व्यक्ति को सोचने के लिए मजबूर होना ही पड़ता है, उसके मस्तिष्क के सैकड़ों सवाल उसे यह विचारने के लिए मजबूर कर देते हैं, कि क्यों ऐसा हो रहा है, आखिर क्या वजह है, कि हमारी आंखों में वह चमक, चेहरे पर वह तेज, आकर्षण नहीं है, जो पौरुषता की पहिचान होती है। फलस्वरूप वह मानसिक रूप से दुर्बल होता जाता है, असमय चिड़चिड़ाहट, अकारण क्रोध जैसे भावों के उद्वेलित होने के कारण वह खुल कर अपनी बात को किसी से कह भी नहीं पाता, उसकी यह वेदना, यह निराशा एक दिन उसे जीवन-लीला को समाप्त करने के लिए प्रेरित करने लगती है।

ऐसे में निराश होने की जरूरत नहीं है, जव आप हर उपाय करके थक जायें, और असफलता ही मिले, तो इस दीक्षा को प्राप्त कर पूर्ण पौरुष प्राप्त किया जा सकता है, तथा असमय पड़ गये बुढ़े मन में रस की, आनन्द की, प्रेम की भावना को जागृत किया जा सकता है।

स्त्री हो चाहे पुरुष, दोनों के लिए यह एक आवश्यक तत्त्व है, अतः दोनों ही इस दीक्षा के माध्यम से पूर्ण सौन्दर्य को प्राप्त कर पौरुषवान् बन सकते हैं।

### ३. महाकाली सिद्धि दीक्षा

यह तीव्र प्रतिस्पर्धा का युग है। आप चाहें या न चाहें विघटनकारी तत्त्व आपके जीवन की शांति, सौहार्द भंग करने का प्रयास करते ही हैं। एक दुष्ट प्रवृत्ति वाले व्यक्ति की अपेक्षा एक सरल और शांत प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के लिए अपमान, तिरस्कार, भय, पीड़ा, कलह के द्वारा खुले ही रहते हैं।

आज ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं, जिसका कोई शत्रु न हो . . . और शत्रु से तात्पर्य किसी मानव मात्र की शत्रुता से ही नहीं, वरन् रोग, शोक, व्याधि, पीड़ा भी मनुष्य के शत्रु ही कहे जाते हैं, जिनसे व्यक्ति हर क्षण त्रस्त रहता है. . . और उनसे छुटकारा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति टोने- टोटके आदि के चक्कर में फंसकर अपने समय और धन दोनों का व्यय करता है, परन्तु फिर भी उन शत्रुओं से छुटकारा नहीं मिल पाता।

किन्तु "महाकाली सिद्धि दीक्षा" के माध्यम से व्यक्ति शत्रुओं को निस्तेज एवं परास्त करने में सक्षम हो जाता है, चाहे वे शत्रु आभ्यन्तरिक हों या बाहरी, इस दीक्षा के द्वारा वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है, क्योंकि महाकाली ही मात्र वे शक्ति स्वरूपा हैं, जो शत्रुओं का संहार कर अपने भक्तों को रक्षा कवच प्रदान करती हैं।

**दीक्षा तो प्रत्येक बालक, स्त्री व पुरुष को लेनी ही चाहिए–जिस प्रकार एक टॉर्च में सेल डाल देने पर वह प्रकाश बिखेरने लगती है, उसी प्रकार दीक्षा भी उस सेल की ही भांति है, जो शिष्य के अन्दर ज्ञान के आलोक को प्रकाशित कर, उसे पूर्ण चैतन्य बना देने की सामर्थ्य रखती है।**

# पाठकों के पत्र

★ महोदय, पत्रिका की विशेषता देखकर मैं अपने-आप को सदस्य बनने से न रोक सका। पिछले वर्ष आपने **''गोपनीय तंत्र विशेषांक''** प्रकाशित किया। उसी प्रकार का अंक इस वर्ष भी प्रकाशित करें, जिससे हम गोपनीय तंत्र के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकें। इस माह का और पिछले माह का विशेषांक देखकर ऐसा लगा, जैसे साक्षात् भगवती दुर्गा एवं महालक्ष्मी स्वयं हमारे घर पधारी हों। यह हमारे जीवन का सौभाग्य है, जो आपकी पत्रिका हमें मिली।

**शैलेष राय, दमन**

★ महोदय, अप्रैल-९५ के अंक में **''गुरु तत्त्व और सद्गुरु रहस्य''** लेख पढ़कर मन में वास्तविक आनन्द की अनुभूति हुई। वास्तव में आप ज्ञान को इतना सरल और सुगम बनाकर प्रस्तुत करते हैं, कि वह हृदय में, मन की गहराइयों में उतरता चला जाता है। आपकी पत्रिका कलियुग में साक्षात् शिव का वरदान स्वरूप है।

**श्रीमती संतोष, शकूरपुर**

★ पत्रिका का **''अप्रैल-९५''** वाला अंक देखकर लगा, कि साधनाओं का खज़ाना ही गुरुदेव के पास है या फिर गुरुदेव ही साधनाओं के जन्मदाता हैं। एक से बढ़कर एक साधना, जिसे गुरु-कृपा प्राप्त कर करने से मानव उच्चतम शिखर पर पहुंच सकता है, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही संसार में, फिर मानव को और चाहिए भी क्या? युग-पुरुष ही हैं **"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी"**, जिनकी छाया तले कितने ही पाठक, साधक व शिष्य स्वच्छन्दतापूर्वक विचरण करते हैं।

**श्यामेन्द्र श्याम,**
**धरयांधी, गिरिडीह**

★ **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका"** निःसन्देह प्रशंसनीय है। मुझे इस पत्रिका को पढ़ने में जो आनन्द आता है, वर्णन नहीं कर सकता, बस पढ़ने लगता हूं, तो पढ़कर ही छोड़ता हूं। **"राजनीतिक भविष्य"** पढ़कर तो अत्यन्त ही आश्चर्य हुआ, ज्योतिष के क्षेत्र में इतनी सत्यता तो कहीं देखी ही नहीं।

**रवि शर्मा,**
**जाबड़िया भील, शाजापुर**

★ पत्रिका का **"सिद्धाश्रम सम्पूर्ण सिद्धि विशेषांक"** दिसम्बर-९४ का अंक देर से प्राप्त हुआ, किन्तु मनोनुकूल लाभ प्रदान करने वाला सामग्रीयुक्त शानदार अंक दिल मोहिनी सिद्ध हुआ। सम्पादकीय की सटीक और सहज रूप में प्रस्तुति ने पाठकों के हृदय को मोह लिया। **"रूपोज्ज्वला अप्सरा साधना"** की शाब्दिक अभिव्यंजना स्वच्छ, सुमधुर आकांक्षा में शुभेच्छादिक पूर्ण आलेख साधना विधियुक्त बेहद भाया, और तो और विघ्नहरण गौरी के नन्दन दरिद्रता विनाशक **"महागणपति साधना"** घर-परिवार के लिए महत्त्वपूर्ण आलेख लगा।

**राधाकृष्ण मिश्र 'कलाकार'**
**लोहरदगा, बिहार**

★ मैंने आपसे **''रोगमुक्ति दीक्षा''** ली थी, जिससे मेरा रोग धीरे-धीरे जाता रहा, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मेरा एक दोस्त, जो पत्रिका का नियमित पाठक है, उसे तंत्र साधना में रुचि है, वह ''सौन्दर्य साधना'' में विशेष रुचि रखता है, क्या उसे पहली बार में सफलता मिल सकती है?

**राम मनोहर, आगरा**

*– सर्वप्रथम तो आपको रोग से मुक्ति मिली, इसके लिए हम आपको बधाई देते हैं। आपका मित्र कोई भी साधना सम्पन्न कर सकता है, उसे सफलता अवश्य मिलेगी, कब मिलेगी, यह उसकी श्रद्धा, विश्वास, दृढ़ निश्चय शक्ति पर ही निर्भर करता है। कई साधकों को पहली बार में ही सफल एवं सिद्ध होते देखा गया है, इसमें किसी भी प्रकार का कोई संशय नहीं है।*

**– उपसम्पादक**

★ पत्रिका में पिछले कई महीनों से आप गुरु तत्त्व की महिमा का वर्णन कर रहे हैं– **"गुरु ही गौरी साधना"**, **"सहज मिले अविनाशी"**, **"त्वदीयं वस्तु निखिलं तुभ्यमेव समर्पयेत्"** आदि लेखों में गुरु तत्त्व का जो वर्णन किया है, उसे हम अगर हृदय में उतार लें, तो आधी साधना स्वतः ही हो जाती है। ये लेख नये साधकों के लिए, नींव के स्वर हैं, अतः आप पत्रिका में साधनात्मक लेखों की अपेक्षा इस प्रकार के लेखों को अधिक स्थान दें।

**दलीप विश्नोई, सादुलशहर**

*प्रिय बन्धु! हमारा पाठक कई वर्गों में बंटा है, और साधना प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य है। यदि यूं कहें, कि हमारी पत्रिका ही साधनात्मक पत्रिका है, तो गलत न होगा, और साधक वर्ग को इनसे कितना लाभ होता है, इसका जवाब तो हमारा साधक पत्रों के माध्यम से देता ही है।*

**उपसम्पादक**

★ पूज्य गुरुदेव, मुझे पता चला है, कि आप जल्दी ही हम लोगों को छोड़कर सिद्धाश्रम के लिए प्रस्थान करेंगे और जहां तक मेरा विश्वास है, आपके जाने पर साधकों में, शिष्यों में, समाज में एक ऐसी क्षति होगी, जो कि शायद हम लोगों के जीवन की सबसे बड़ी क्षति होगी। पूज्य गुरुदेव हमारी गति क्या है, हमारे हजारों-लाखों लोगों के (जो नयोदि शिष्य हैं) दिलों पर क्या प्रतिक्रियाएं होंगी? गुरु जी मेरा व्यक्तिगत विचार यही है, कि आपने जो वचन दिया है, कि आप हमें, हमारे जीवन को पूर्णता दें, जो मशाल नयी पीढ़ी को सौंपी है। गुरु जी इसी हेतु मैं विनती करता हूं, कि आप-अपने हजारों शिष्यों को छोड़कर न जाइयेगा, नहीं तो यह समाज फिर सुषुप्तावस्था में पहुंच जायेगा और हम लोगों के सपने सार्थक नहीं होंगे। हमें जीवन से निराश न करें। गुरुदेव अपना निर्णय बदल लीजिये।

**सुशील कुमार वर्मा, लखनऊ**

★ प्रिय सम्पादक जी,

सादर वन्दन,

आपने मेरे लिए जो **''हनुमान यंत्र''** भेजा था, जिसके प्राप्त होते ही मेरी सर्विस में विशेष रूप से आभा आई है। इस कृपा के लिए मैं आपका बहुत-बहुत अभारी हूं।

**राम प्रसाद पंवार, म० प्र०**

## सूचना

**पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है, कि वे साधना-सामग्री से सम्बन्धित अपना ऑर्डर जोधपुर टेलीफोन नं०-0291-32209 द्वारा लिखाएं, क्योंकि आपके द्वारा भेजा हुआ पत्र कार्यालय को 10 दिन बाद मिलता है, और कार्यालय द्वारा भेजी गई सामग्री आपके पास 10 दिन बाद पहुंचती है। इन 20 दिनों के चक्र में कभी-कभी साधना से सम्बन्धित विशेष दिवस बीत जाता है।**

**अतः आप इस प्रकार की असुविधा से बचने के लिए अपना ऑर्डर जोधपुर कार्यालय में 24 घंटे में कभी भी नोट करा सकते हैं।**

**जोधपुर : टेलीफोन नं० - 0291-32209**
**: फेक्स नं० - 0291-32010**

**पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है, कि ''गुरुधाम'' दिल्ली कार्यालय में लगा फेक्स नं० बदल गया है। अब आप नये नं० में फेक्स करें–**

**पहले फेक्स नं० : 011 - 7186700**
**वर्तमान फेक्स नं० : 011 - 7196700**

४.१०.९५

भारतीय दर्शन इस बात की पुष्टि करता है, कि हमारा जीवन स्वतंत्र नहीं है, अपितु पूर्व जीवन से पूर्णतः जुड़ा हुआ है। शरीर तो मर जाता है, किन्तु उसी प्रकार से क्रमिक विकास की ओर गतिशील रहता है, अब तो वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकारने लगे हैं।

पूर्व जीवन के कार्यों का प्रभाव तो निश्चित रूप से पड़ता ही है, और उसी के आधार पर हमें आने वाले जीवन में पाप-पुण्यों को भोगना पड़ता है, क्योंकि पिछले जीवन के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए ही इस जीवन का सृजन होता है।

**मृत्यु जीवन का अंत नहीं है, अपितु नये जीवन का निर्माण है, फलस्वरूप मनुष्य को मृत्यु के बाद भी छुटकारा नहीं मिलता, उसे अधूरे जीवन को पूर्ण करने के लिए हर बार जन्म लेना ही पड़ता है, और इस प्रकार मनुष्य जन्म-मरण के इस चक्रव्यूह से कभी निकल ही नहीं पाता, अपितु और ज्यादा उसमें उलझता ही चला जाता है।**

यह मानव-जीवन प्राप्त होना ही बहुत बड़े सौभाग्य की बात होती है, क्योंकि यह मानव-जीवन पुण्य कर्मों के आधार पर ही प्राप्त होता है; इसे यूं ही गंवा देना, तो अज्ञानता ही कही जा सकती है।

जब साधक चौरासी लाख योनियों से छुटकारा पाकर इस जीवन में ही साधना एवं सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने में समर्थ होता है।

चौरासी लाख योनियों में भटकने के उपरांत ही मनुष्य को यह जीवन प्राप्त होता है, और वह भी आधा-अधूरा, अपूर्ण रह जाय, तो फिर जीवन का अर्थ ही क्या रह जायेगा! समय रहते व्यक्ति एक गहरी निद्रा में सोया रहता है, उसे अपने खाने-पीने, रहने-सहने, उठने-बैठने के अलावा और कुछ नहीं दिखाई देता, वह सारा समय व्यर्थ के कामों में ही व्यतीत कर देता है, और उसी को जीवन कह देता है, क्योंकि उसे इस बात का कोई महत्त्व, कोई चिन्तन, कोई विचार है ही नहीं, कि जीवन के आने वाले समय में क्या करना है?

*— जीवन का प्रयोजन क्या है?*

*— जीवन का लक्ष्य क्या है?*

*— जीवन की विचारधारा क्या है?*

व्यक्ति अपनी निद्रावस्था में ही चलता रहता है, और अपने पूरे जीवन को उसने नींद में ही स्थापित कर दिया है, इसलिए वह अपने जीवन को व्यर्थ के प्रयोजन में ढो रहा है, जिसका कोई लक्ष्य, कोई मर्म है ही नहीं।

*अब प्रश्न यह उठता है, कि क्या हमारा लक्ष्य इस पूरे जीवन को यूं नींद में ही व्यतीत कर देना है? क्या यही वास्तविक रूप में जीवन है?*

— "नहीं", वह व्यक्ति तो मृतवत ही है, जो अपने कंधों पर अपनी ही लाश को ढोये जा रहा है. . . और दुःख, विषाद, मलीनता को ही जीवन मान बैठा है, ऐसा जीवन तो कोई भी जी लेगा, इसीलिए किसी सन्त ने कहा है—

**कवहूंकि करि करुणा नर देही।**
**देत ईश बिनु हेत सनेही।।**
**नर तन भव पारिधि कहुं बेरो।**
**सन्मुख होई अनुग्रह मेरो।।**

यह मनुष्य-शरीर जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। भगवान की कृपा से ही जीव मनुष्य-शरीर धारण करता है। आज तक जितने भी महान पुरुष हुए हैं, वे सब मानव देहधारी ही तो हैं। यह मानव-शरीर विशिष्ट हेतु से ही प्राप्त होता है, और जो उस हेतु को समझ लेता है, वह जन्म-मरण के चक्रव्यूह को तोड़ कर मोक्ष को प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह भली-भांति समझ लेता है, कि मनुष्य रत्न विषय-भोगों को भोगने के लिए ही नहीं हुआ है।

किन्तु जो इस उत्तम देह अर्थात् मनुष्य तन को पाकर भी अपनी आत्मा का कल्याण नहीं करता, वह कृतघ्नी है, मूर्ख है, अज्ञानी है।

मनुष्य का आवागमन अर्थात् विभिन्न योनियों में जन्म लेने और मरने के क्रम से मुक्त हो जाना ही मोक्ष है।

आज के युग में मनुष्य को देखते ही हम यह भांप जाते हैं, कि वह प्रसन्नचित्त है या दुःखी, क्योंकि उसके माथे की सिकुड़न और चेहरे की रेखाएं यह प्रदर्शित कर देती हैं, कि उसकी मनःस्थिति कैसी है? मनुष्य होना कोई बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं है, अपितु मनुष्य बनना अपने-आप में एक श्रेष्ठ उपलब्धि है, और मनुष्य के लिए यह आवश्यक है, कि वह कर्म-पथ पर आगे बढ़ता हुआ ऊर्ध्वमुखी बने।

व्यक्ति जीवन भर छल, झूठ, पाप करता हुआ अन्त में जब मृत्यु की गोद में सो जाता है, तब सोचता है कि यह क्या हुआ!

अब और नहीं भटकना पड़ेगा, क्योंकि आप भी अपने पूर्वजन्मकृत दोषों का निवारण कर, चौरासी लाख योनियों से छुटकारा पाकर इसी जीवन में साधना एवं तपस्या के बल से सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने में समर्थ हो सकते हैं, यदि आपको उस मंत्रशक्ति का पूर्णतया भान हो तो. . . और जब ऐसा हो जायेगा, तब उस चिन्तन का अर्थ अपने-आप ही समझ में आ जायेगा, कि कैसे इस जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त की जा सकती है, और वह भी इसी जीवन में।

**पूर्वजन्मों के अनन्त कर्म, जो संचित और प्रारब्ध कर्म कहे जाते हैं, उनके शुभ और अशुभ दोनों ही संवलित, अज्ञात और अविच्छिन्न, जो हमारे जीवन के पाथेय को भ्रष्ट कर देते हैं, उन दोषों को पूर्णतया नष्ट करने के लिए यह एक अति आवश्यक एवं अनुपम उपाय है, जो अपने-आप में नवीनतम एवं बेजोड़ है।**

आज का मानव यही सोचकर बैठा है, कि सुख आज नहीं, तो कल प्राप्त हो जायेगा. . . और इस तरह अपने कई जन्मों को गंवा दिया, फलस्वरूप हर बार नया जन्म लेना पड़ता है और यह आवागमन का चक्र भी यूं ही चलता रहता है, क्योंकि उसने सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड़ रखा है।

अभी तक उसका यही चिन्तन चला आ रहा है,

और वही उसे हर बार मृत्यु की ओर ढकेल देता है।

यह जन्म-मरण का खेल और दुःख, दैन्य, पीड़ा, रोग, शोक, किसी भी कार्य में असफलता हमें अपने कुकर्मों के द्वारा ही मिलती है, और इसी कारणवश हमें चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है।

यदि इसी जीवन में पूर्ण होना है, सफल होना है, अपने जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाना है तथा समस्त दोष-बाधाओं को समाप्त कर भौतिक और आध्यात्मिक जीवन को प्राप्त करना है और एक मानवीय जीवन के लिए अपेक्षित समस्त सुख-भोगों के साधन को पाना है, तो "पापांकुशा" से बढ़कर सर्वग्रही और कोई प्रयोग नहीं।

**पापांकुशा का तात्पर्य है– इस जीवन के साथ-साथ पूर्वजन्म के पाप कर्मों को समाप्त कर देना, उन पर अंकुश लगा देना, जीवन के अधूरेपन को, अंधकार पूर्ण क्षणों को, दुःख और दारिद्र्य से अनुपीड़ित दुर्भाग्य से दूषित रेखा को सौभाग्य में बदल देना तथा क्षेय पथ में आये विघ्नोत्पादक अवरोधों को समाप्त कर देना. . . और जब ऐसा हो जायेगा, तो सफलता स्वयं आपके कदम चूमेगी, फिर कोई दुःख जीवन में कैसे रह सकता है, फिर दरिद्रता, निर्धनता कैसे रह सकती है. . . फिर कोई अभाव रहेगा ही नहीं।**

यह प्रयोग अपने-आप में श्रेष्ठ और अद्वितीय है, इसके जैसा तीक्ष्ण प्रभावकारी प्रयोग, जो आगे-पीछे के समस्त पापों से मुक्त कर जीवन को प्रभावशाली और सर्वश्रेष्ठ बना दे, पहली बार ही पाठकों के लाभार्थ हेतु और उनके द्वारा प्राप्त पत्रों के आधार पर ही पूज्य गुरुदेव की कृपा से प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति लाभ से वंचित रह ही नहीं सकता।

## प्रयोग विधिः

१. साधकों को **पापमोचिनी माला, पापांकुशा गुटिका, पाप निवारण यंत्र** ये सामग्री पहले से ही प्राप्त कर लेनी चाहिए।
२. **४ अक्टूबर सायं ८ से १० बजे के मध्य** यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए या फिर किसी भी **शनिवार** के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।
३. साधक सायं प्रयोग करने से पूर्व निश्चित समय पर स्नान आदि से निवृत्त होकर पीली धोती पहिनें और ऊपर गुरुनामी चादर ओढ़ कर **पीले आसन** पर बैठ जायें।
४. **पश्चिम दिशा** की ओर बैठें।
५. अपने सामने चौकी पर एक नया पीला वस्त्र बिछाकर किसी प्लेट में "पाप निवारण यंत्र" को स्थापित कर दें।
६. इसके पश्चात् इस यंत्र को जल से स्नान कराकर कुंकुम का तिलक लगाएं।
७. "पापांकुशा गुटिका" को भी यंत्र के सामने स्थापित कर दें और उसका भी कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें।
८. फिर धूप और दीप दिखाकर यंत्र और गुटिका का पूजन सम्पन्न करें।
९. साधक आसन पर खड़े होकर के **"ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं"** का क्रमशः पश्चिम, उत्तर, पूर्व और दक्षिण चारों दिशाओं की ओर मुख करके "पापमोचिनी माला" से एक-एक माला मंत्र-जप सम्पन्न करें।
१०. इसके बाद पहले की तरह पश्चिम की ओर मुख करके, आसन पर बैठकर मूल मंत्र का **११ माला मंत्र-जप** करें –

**मंत्र**

**ॐ सर्व पापनाशाय ह्रां ह्रीं नमः**

११. फिर **एक माला गुरु मंत्र का जप** करें।
१२. प्रयोग से पूर्व **गुरु-पूजन** एवं मंत्र-जप करना आवश्यक है।
१३. जप समाप्ति के बाद समस्त सामग्री को दूसरे दिन किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें तथा वापिस घर की ओर लौटते समय मुड़कर नहीं देखें।
१४. फिर घर आकर, हाथ-पैर धोकर तीन बार आचमन करें।

**इस प्रयोग से निश्चय ही साधक के चाहे वह पाप इस जन्म का हो या दूसरे जन्म का, नाश होगा ही, अवश्य ही इस प्रयोग के बाद वह अनुभव करेगा, कि मेरा प्रयोग सफल एवं निश्चित फलदायी रहा है।**

सामग्री न्यौछावर :
पापमोचिनी माला - २१०/-, पापांकुशा गुटिका - ७५/-,
पाप निवारण यंत्र - २४०/-

# आप किसी भी साधना में सफलता के कितने निकट हैं, यह केवल दस मिनट में जान सकते हैं।
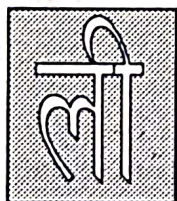
लीजिये आप स्वयं जान सकते हैं, कि आप कितनी ऊंचाई पर खड़े हैं, और अपने भौतिक कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए आप अध्यात्म-पथ पर कितना आगे बढ़े हैं, यद्यपि जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए इन दोनों पक्षों में सन्तुलन बनाये रखना एक आवश्यक और कठिन कार्य है, परन्तु साधना की पगडण्डियों पर अपने नन्हें-नन्हें कदम रखते हुए जो आगे बढ़ जाता है, वह अपने जीवन में सफल हो जाता है और 'श्रेष्ठ' कहलाता है।

अब यह कैसे ज्ञात हो, कि आप एक श्रेष्ठ मानव या साधक हैं, इसके लिए आपको ज्यादा चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि आप नीचे दी गई **''प्रश्नावली''** के आधार पर दस मिनट के अन्दर इसका निर्णय स्वयं कर सकते हैं।

इसके लिए यह आवश्यक है, कि आप सर्वप्रथम अपने इष्ट या गुरु का स्मरण तथा आत्म-चिन्तन करते हुए

मन ही मन में कहें, कि यहां दिये गये प्रत्येक प्रश्न का उत्तर मेरा अनुभव कार्य होगा, न कि झूठी प्रशंसा के लिए बिता दिये गये कुछ क्षणों की व्यर्थता।

तो आइये, हम इन प्रश्नों को हल करें ओर देखें कि हमने कितनी सफलता प्राप्त की है। प्रश्नों का जो भी उचित उत्तर हो, उसके आगे दिये गये "हां" और "नहीं" कॉलम में से किसी एक में (✓) का निशान लगायें—

## मनोविज्ञान

| | हां | नहीं |
|---|---|---|
| १. अध्यात्म में प्रवेश होने का अर्थ भौतिक सुख-समृद्धि का पूर्ण त्याग है? | | |
| २. एक ब्रह्मचारी या संन्यासी ही एक उच्चकोटि का साधक हो सकता है? | | |
| ३. ब्रह्मचारी का मूल अर्थ क्या है— | | |
| (क) विवाह न करने वाला | | |
| (ख) ब्रह्म की तरह आचरण करने वाला | | |
| ४. (क) क्या साधना केवल बुढ़ापे में खाली बैठकर माला जपने को कहते हैं? | | |
| (ख) क्या साधना के द्वारा पूर्ण सौन्दर्यवान एवं ऐश्वर्य-वैभव युक्त भी बना जा सकता है? | | |
| ५. (क) यदि आपका पांच वर्षीय पुत्र साधना-क्षेत्र में उतरने की हठ करता है, तो आप उसे बड़ा होने का इन्तजार करने के लिए कहेंगे? | | |
| (ख) उसे प्रेरित करेंगे? | | |
| ६. क्या धर्म और अध्यात्म दोनों एक ही हैं? | | |
| ७. (क) क्या अध्यात्म मानसिक एवं आध्यात्मिक उत्थान का निजी मार्ग है? | | |
| (ख) एक ऐसा पथ है, जिस पर आप अन्य लोगों का समर्थन प्राप्त करते हुए कदम रखते हैं? | | |
| ८. यदि आपके परिवार एवं समाज वाले विरोध करें, तो क्या आप अपना अध्यात्म-मार्ग छोड़ देंगे? | | |
| ९. स्वप्न में जो आपको अनुभव होते हैं, तो क्या आप उनका अर्थ समझते हैं? | | |

## आपके मन की एकाग्रता कितनी है

| | हां | नहीं |
|---|---|---|
| १. क्या मंत्र-जप करते समय आपका ध्यान इधर-उधर रहता है? | | |
| २. क्या मंत्र-जप करते समय आपकी दृष्टि किसी एक बिन्दु पर केन्द्रित रहती है? | | |
| ३. (क) क्या आप मंत्र-जप खुली आंखों से करते हैं? | | |
| (ख) क्या आप मंत्र-जप बंद आंखों से करते हैं? | | |
| ४. क्या आप बिना कुछ सोचे आंख बन्द करके १० मिनट तक ध्यान लगा लेते हैं? | | |
| ५. क्या आप मंत्र-जप करते समय किसी मानसिक तनाव से ग्रस्त रहते हैं? | | |
| ६. क्या मंत्र-जप करते समय अन्य कई विचार भी मस्तिष्क में घुमते रहते हैं? | | |
| ७. क्या आप आंख मूंद कर बैठ जाने को 'ध्यान' कहते हैं? | | |

| | हां | नहीं |
|---|---|---|
| ८. क्या आपके ध्यान लगाने की अवधि ३२ मिनट है? | | |

## साधना

| | हां | नहीं |
|---|---|---|
| १. क्या आप सूर्योदय से पहले साधना में बैठते हैं? | | |
| २. क्या साधना करते समय आपका क्रम भंग होता है? | | |
| ३. क्या यात्रा करत समय आप मंत्र-जप छोड़ देते हैं और साधना का क्रम भंग कर देते हैं? | | |
| ४. क्या कभी-कभी आप मंत्र-जप आलस्य के कारण करना छोड़ देते हैं? | | |
| ५. (क) क्या आप किसी निश्चित समय पर ही साधना करते हैं? | | |
| (ख) क्या आप अपनी इच्छानुसार कभी भी मंत्र-जप करते रहते हैं? | | |
| ६. क्या आपनें कभी अनुष्ठान के रूप में सवा लाख मंत्र-जप किया है? | | |
| ७. क्या आपने अन्य किसी साधना में सफलता प्राप्त की है? | | |
| ८. क्या आपने दस महाविद्याओं में से किसी एक महाविद्या को भी सिद्ध किया है? | | |
| ६. (क) साधना, सम्मोहन आदि को केवल आप अपने निजी स्वार्थ हेतु पूरा करने का साधन समझते हैं? | | |
| (ख) अपने शत्रुओं को हानि पहुंचाने का माध्यम समझते हैं? | | |
| (ग) समाज निमार्ण का स्रोत? | | |
| १०. मान लीजिये, किसी पहाड़ी पर आपका कोई शत्रु लटका हुआ है, तो क्या– | | |
| (क) आप साधना की रस्सी से उसे खींच लेंगे? | | |
| (ख) आप शत्रुता का प्रहार कर उसे खाई में ढकेल देंगे? | | |
| ११. क्या आपको साधना में पूर्ण विश्वास है? | | |
| १२. क्या आपको साधना करते समय किसी प्रकार की ध्वनि सुनाई देती है? | | |
| १३. क्या साधना करने का उद्देश्य कोई ऐसी कामना तो नहीं, जो असंभव हो, जैसे– मैं बिड़ला बन जाऊं या अमेरिका का राष्ट्रपति बन जाऊं आदि? | | |
| १४. (क) आप भय युक्त होकर साधना करते हैं? | | |
| (ख) आप निर्भय होकर साधना करते हैं? | | |

## साधना उपकरण
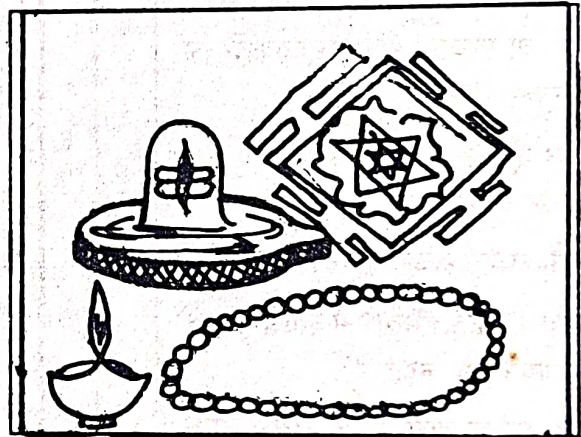
| | हां | नहीं |
|---|---|---|
| १. क्या आप साधना में उपकरण की प्रामाणिकता जांच कर ही उसे प्रयोग में लाते हैं? | | |
| २. क्या आप कहीं से भी प्राप्त उपकरणों का साधना में उपयोग कर लेते हैं? | | |
| ३. (क) क्या आप पत्रिका में प्रकाशित प्रयोग के अन्तर्गत दिये गये उपकरणों का ही उपयोग साधना हेतु करते हैं? | | |
| (ख) उसके स्थान पर किसी अन्य उपकरण का भी अपनी इच्छानुसार प्रयोग करते हैं? | | |
| ४. क्या आप साधना-समाप्ति के पश्चात् उपकरणों का विधि पूर्वक विसर्जन कर आते हैं? | | |

| | हां | नहीं |
|---|---|---|
| ५. (क) किसी साधना में वार-वार असफलता मिलने पर क्या आप साधना उपकरणों का प्रयोग तीन बार से अधिक करते हैं? | | |
| (ख) नये उपकरण मंगाते हैं? | | |
| ६. क्या साधना करते समय आपके उपकरण शुद्ध और पवित्र होते हैं? | | |

## गुरु

| | हां | नहीं |
|---|---|---|
| १. क्या आप प्रातःकाल उठकर सर्वप्रथम गुरु-स्मरण करते हैं? | | |
| २. क्या आप **"निखिलेश्वरानन्द स्तवन"** पढ़ते हैं? | | |
| ३. क्या आप हर गुरुवार को **"गुरु पादुका-पूजन"** करते हैं? | | |
| ४. क्या आप चार माला **"गुरु मंत्र-जप"** करते हैं? | | |
| ५. आपको क्या कभी गुरुदेव के विम्बात्मक दर्शन या प्रत्यक्ष रूप से दर्शन हुए हैं? | | |
| ६. (क) क्या आप किसी भी अपरिचित गुरु से एकदम प्रभावित हो जाते हैं? | | |
| (ख) अच्छी तरह समझ-वूझ कर उनसे जुड़ते हैं? | | |
| ७. (क) क्या आप गुरु को सिर्फ अपने निजी स्वार्थ के लिए पूजते हैं? | | |
| (ख) क्या आप अपने-आप को समाज निर्माण करने वाला व्यक्ति समझते हैं, जो कि एक-दो का नहीं, अपितु पूरे समाज का कल्याण कर सके? | | |
| ८. क्या आप हफ्ते या दस दिन में अपने गुरु से सम्पर्क स्थापित करते हैं? | | |

## दीक्षा

शक्तिपात करते हुए

| | हां | नहीं |
|---|---|---|
| १. (क) आपने दीक्षा को जादू की छड़ी माना है? | | |
| (ख) एक दिव्य चेतना का प्रसाद? | | |
| २. (क) क्या आप रामकृष्ण परमहंस, विशुद्धानन्द, महावतार वावा आदि गुरुओं के विषय में पढ़कर दीक्षा पद्धति से प्रभावित हुए हैं? | | |
| (ख) आजकल के चल रहे शक्तिपात के फैशन से ऐसे ढोंगियों द्वारा, जिन्हें शायद **"दीक्शा"** शब्द भी नहीं लिखना आता? | | |
| ३. क्या आपने अध्यात्म या साधनात्मक क्षेत्र में प्रविष्ट होने से पहले **"गुरु दीक्षा"** ली है? | | |
| ४. क्या आपने **"गुरु हृदय स्थापन दीक्षा"** प्राप्त की है? | | |
| ५. क्या दीक्षा प्राप्त करने के बाद आपको पूर्ण विश्वास है, कि आप साधना में सफलता प्राप्त कर ही लेंगे? | | |

## जवाब आपके और निर्णय भी आपका

१. यदि उपरोक्त इन ५० प्रश्नों में से ४० प्रश्नों के उत्तर सही हैं, तो आप सफलता प्राप्ति के निकट हैं।

२. यदि ५० प्रश्नों में से ३० प्रश्न सही हैं, तो थोड़ा-सा विशेष प्रयत्न करने पर सफलता पाई जा सकती है।

३. यदि ५० में से १५ या इससे कम प्रश्नों के उत्तर सही हैं, तो आप नये सिरे से, अपने गुरु से उचित निर्देशन प्राप्त कर साधना प्रारम्भ कीजिये।

# जीवन की अनमोल सिद्धि साधना

# छाया पुरुष

अत्यन्त तेजस्वी योगियों, मुनियों और तांत्रिकों द्वारा सम्पादनीय, साक्षात् जीवंतता की प्रतीक. . . शक्ति और सामंतता का साक्षात् स्वरूप तथा आत्मा के हजारवें हिस्से का सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्व, बिम्ब. . . ब्रह्माण्ड की दिव्य रश्मियों से सम्पर्कित, सम्वलित एवं उद्वेलित यह "छाया पुरुष साधना" मानव को निश्चित ही भविष्य वक्ता, एवं कालज्ञान का अप्रतिम वक्ता बना देने में सक्षम एवं समर्थ है।
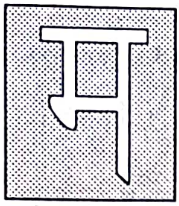
**म**नुष्य प्रारम्भ से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है, अनेक रहस्यमय प्रश्न उसे जन्म से ही उद्वेलित करते रहते हैं, क्या हमारे अन्दर कोई आत्मा है, जो असीम ब्रह्माण्ड की चेतना शक्ति से सम्पर्कित हो? क्या कोई ऐसी चीज है, जिससे हम काल-ज्ञान प्राप्त कर सकें? क्या ऐसा हो सकता है, कि हम भूत, भविष्य और वर्तमान को आसानी से जान सकें?

आज इन जिज्ञासामूलक प्रश्नों का समाधान उन ज्ञानवान व्यक्तियों ने ढूंढ, निकाला है, जो उच्चकोटि के योगी व संन्यासी माने जाते हैं। जो वेद, शास्त्र किसी कारणवश प्रायः लुप्त से हो गए थे, जिनमें जीवन का रहस्य, जीवन का सार, जीवन का तथ्य छुपा है, अपनी मेहनत और कठिन परिश्रम, साधना-तप आदि के माध्यम से ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तित्व उसे समय-समय पर खोजने का प्रयास करते रहते हैं, जिससे कि उस रहस्य को स्पष्ट कर उसे मानव मात्र के लिए सहज उपयोगी बनाया जा सके।

ऐसी ही एक सूक्ष्म विवेचना यहां प्रस्तुत है ''योगीराज जीवचैतन्य जी'' के शब्दों में उन्होंने पहली बार इस रहस्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया और कहा— ''सारा दृश्य और अदृश्य जगत् सूक्ष्म रश्मियों से बना है, इसमें तीन तत्त्व निहित हैं— **१. जीवाणु, २. शक्ति और ३. विचार,** इन तत्त्वों के सम्मिलित रूप को **''आत्मा''** कहा जाता है।

परा-मनोविज्ञान के आधार पर आत्मा दो शरीरों के भीतर वास करती है— पहला सूक्ष्म शरीर और दूसरा स्थूल शरीर, और मनुष्य भी दो प्रकार का होता है— पहला, **हृदय प्रधान** और दूसरा, **मस्तिष्क प्रधान**।

हृदय प्रधान मनुष्य कोरी भावनाओं में बहकर उन मान्यताओं को सहज मान बैठता है, जिनका उल्लेख धर्म ग्रंथों में किया गया है, ऐसा मनुष्य तथाकथित योगियों, सन्तों के बहकावे में आकर उनके द्वारा दिखाए गये ढोंग, प्रदर्शन और चमत्कार को भी सच मान बैठता है। आज ८० प्रतिशत व्यक्ति ऐसे देखने को मिल जायेंगे, जो इन चमत्कारों को सच मान बैठते हैं, अपने भावुक, संवेदनशील हृदय और अगाध श्रद्धा के बल पर, जबकि मस्तिष्क प्रधान मनुष्य हर बात पर सोच-समझकर ही विश्वास करता है।

आज के युग में यह निर्णय कर पाना मुश्किल है, कि क्या सत्य है और क्या असत्य है, इसी भ्रम-जाल में उलझ कर वह किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पाता।

**किन्तु योगीराज जीवचैतन्य जी के शब्दों में – ''अहं ब्रह्मास्मि'' उक्ति के आधार पर व्यक्ति स्वयं ब्रह्म है, क्योंकि उसके अन्दर वह क्षमता निहित है, जिसके बल पर वह स्वयं अपने भूत, भविष्य और वर्तमान को आसानी से जान सकता है, इसके लिए उसे जगह-जगह भटकने की आवश्यकता नहीं है, और न ही उन ढोंगी, पाखण्डी साधु-सन्तों के झांसे में आने की आवश्यकता है। वह स्वयं में कालज्ञानी होने की सामर्थ्य रखता है, यदि दृढ़ निश्चय और विश्वास उसके पास हो तो।**

उन्होंने कहा— ''आत्मा सम्पूर्ण संसार का आधार है। कहते हैं, जब व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, तो पंचभौतिक तत्त्वों से निर्मित स्थूल शरीर नष्ट हो जाता है, और अत्यन्त सूक्ष्म विचारों एवं तन्तुओं से निर्मित सूक्ष्म शरीर रह जाता है, जिसे आत्मा कहा जाता है, जो कभी नहीं मरती, जो अपने स्वभाव और स्वकर्मानुसार अनेक रूप धारण करती है।''

वैज्ञानिकों के अनुसार ब्रह्माण्डीय कणों की कल्पना करने पर यह पता चलता है, कि ये प्रकाश के कणों से भी तीव्र गति से चलते हैं, जिसके फलस्वरूप हम वर्तमान में ही भविष्य को देख सकते हैं, और योगीराज जीवचैतन्य का भी यही कहना है— ''यदि मनुष्य उस साधना को सम्पन्न कर ले, जिसे ''छाया पुरुष'' की संज्ञा दी गई है, तो वह वास्तव में ही वर्तमान में अपने भविष्य में घटित घटनाओं का अनुमान और ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है।''

पहले मैं आपके सामने यह बात मुख्य रूप से स्पष्ट कर देना चाहता हूं, कि – **''छाया पुरुष'' मनुष्य में निहित सूक्ष्म संवेदनाओं, जिसे 'सूक्ष्म शरीर' कहा जाता है, जिसे 'आत्मा' के नाम से जाना जाता है, जो भीतर कई पर्दों में स्थित है, जो अदृश्य है, जिसका कोई आकार या प्रकार दिखाई नहीं देता, जिसे निर्मल, चैतन्य और अविनाशी कहा गया है, उसी का हजारवां भाग है।**

छाया पुरुष का अर्थ किसी पर-पुरुष की छाया से नहीं है, अपितु एक ऐसी शक्ति से है, जो २४ घंटे स्त्री-पुरुष दोनों में रहती है, किन्तु मनुष्य उससे अपरिचित होने के कारण अपने अन्दर निहित उस तत्त्व को, उस शक्ति को, उस बिम्ब को पहिचान नहीं पाता। यदि मनुष्य उस शक्ति को पहिचान जाय, तो काल वक्ता हो जाता है, इसके होने से ही जीवित शरीर गतिशील रहता है, सभी इंद्रियां क्रियाशील रहती हैं, पर ज्यों ही यह शरीर से बाहर निकल जाती है, शरीर की गतिशीलता खत्म हो जाती है, अतः उस शक्ति का, उस तत्त्व का तादात्म्य ब्रह्माण्ड से हर पल बना

रहता है, आवश्यकता है उस चैतन्य शक्ति को अपने अन्दर जाग्रत करने की।

**तत्त्व हो या शक्ति, दोनों ही अविनाशी हैं, केवल इनके रूप बदल जाते हैं, अर्थात् अपने ही रूप-आकार के प्रतिबिम्ब को, आत्मा के उस सूक्ष्म तत्त्व को हम इन स्थूल आंखों से कुछ समय के लिए दोपहर में देख सकते हैं, जिसे व्यक्ति परछाईं कहता है, किन्तु उसकी क्रियाओं का, उसकी गतिशीलता का, उसकी असीमित शक्ति का, उसकी गुणवत्ता का उसे जरा भी भान नहीं है। यदि मनुष्य इसे संचालित करने की क्रिया पद्धति को जान ले, तो वह उसे मंत्रशक्ति के बल पर अपने अधीन कर अपनी सुरक्षा आप कर सकता है।**

## साधना विधिः

१. **छाया पुरुष यंत्र, काली हकीक माला** तथा **कालज्ञान गुटिका** इन तीनों सामग्रियों की आवश्यकता साधना में होती है।

२. यह साधना **३०/०८/९५ भाद्र पद शुक्ल पक्ष, बुधवार** के दिन सम्पन्न करनी चाहिए या फिर किसी भी **मंगलवार** के दिन।

३. यह दोपहर **१२ बजकर ३५ मिनट से ३ बजे के मध्य** सम्पन्न की जाने वाली महत्त्वपूर्ण साधना है।

४. साधक **दक्षिण दिशा** की ओर मुख करके **पीले आसन** पर बैठ जायें।

५. साधना से पूर्व स्नान आदि से निवृत्त होकर उपर्युक्त सामग्री को स्थापित करने के लिए एक छोटी चौकी पर काला वस्त्र बिछा दें।

६. फिर एक पात्र पर सिन्दूर से 'स्वस्तिक' का चिन्ह बनाकर, **एक पाव आटे का मानवाकार बनाकर,** उसे 'छाया पुरुष' की संज्ञा देकर सिन्दूर से रंग दें और उस प्लेट में स्थापित कर दें।

७. इसके पश्चात् "छाया पुरुष यंत्र" को पिण्ड के सामने स्थापित कर दें।

८. यंत्र पर पांच सिन्दूर की बिन्दियां लगाकर तेल का दीपक जलायें। मंत्र-जप समाप्ति तक दीपक प्रज्वलित रहना चाहिए।

९. लोबान धूप और गुग्गुल का धुआं दें।

१०. उस पिण्ड पर अक्षत चढ़ायें तथा जो भी माला उस समय उपलब्ध हो, पिण्ड को पहिना दें।

११. अपने नाम व गोत्र का उच्चारण करें तथा अपनी मनोकामना व्यक्त कर जल को भूमि पर छोड़ दें।

१२. "कालज्ञान गुटिका" को यंत्र के ऊपर स्थापित करके उस पर सिन्दूर लगा दें।

१३. इसके पश्चात् "काली हकीक माला" से निम्न मंत्र का **११ माला जप** करें –

**मंत्र**

**ॐ ग्लौं भविष्यं दर्शय छायापुरुषाय ग्लौं फट्**

१४. पहले दिन की तरह दूसरे दिन भी यही प्रक्रिया अपनायें।

१५. दूसरे दिन मंत्र-जप पूरा होने पर पिण्ड सहित सारी सामग्री को काले वस्त्र में बांधकर सूर्यास्त के बाद जब कोई न देख पाये, तो किसी सुनसान जगह में छोड़ आयें तथा वापिस आते समय पीछे मुड़कर नहीं देखें।

१६. घर आकर स्नान कर लें तथा अपने इष्ट को मन ही मन प्रणाम करें, जिससे कि उस साधना में शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो सके।

**ऐसा करने से वह छाया उस साधक के नियंत्रण में हो जाती है। इसका दर्शन होने पर साधक भयभीत न हों, क्योंकि यह उन्हीं की आत्मा का प्रतीक रूप होती है, जो समय-समय पर दृश्य और अदृश्य दोनों ही रूपों में छाया बनकर मनुष्य को सावधान करने व सुरक्षित रखने में सहायक सिद्ध होती है। फलस्वरूप व्यक्ति भविष्य वक्ता बन जाता है, क्योंकि ब्रह्माण्ड से प्राप्त रश्मियों के कारण वह पहले से ही उन सूक्ष्म कणों को पकड़ने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है, जिसके माध्यम से उसके कानों व मस्तिष्क दोनों में ही एक ध्वनि-सी उत्पन्न होने लगती है, जो उसे पग-पग पर हर घटना की सूचना पहले से ही देकर सचेत व सावधान करती रहती है।**

साधना में प्रयुक्त सामग्री :

| | | |
|---|---|---|
| छाया पुरुष यंत्र | - | २४०/- |
| काली हकीक माला | - | १५०/- |
| कालज्ञान गुटिका | - | १००/- |

# सर्वथा पहली बार प्रकाशित

## पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित

## ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

### एस-सीरिज के अन्तर्गत ये पुस्तकें. . .
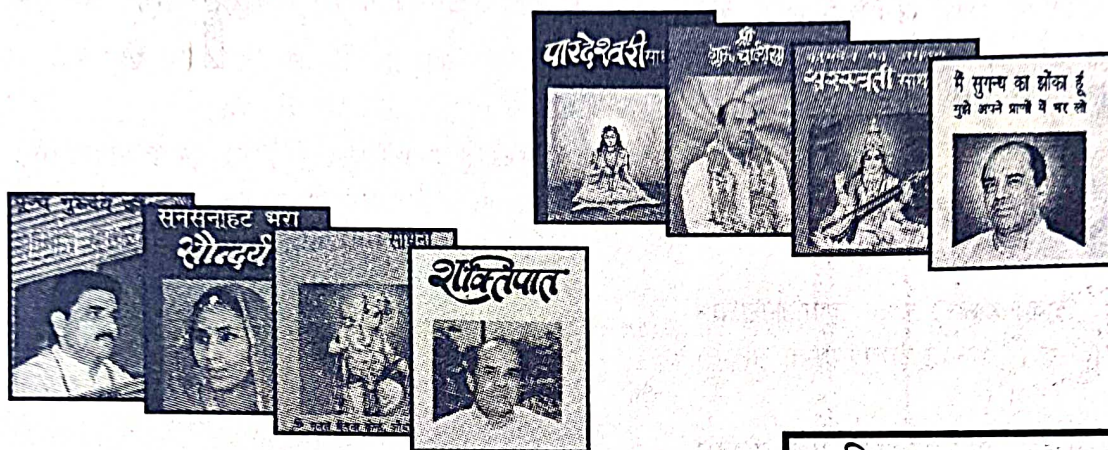
**प्रति पुस्तक मूल्य : 5/-**

### पारदेश्वरी साधना

एक विलक्षण और चैतन्य पुस्तक . . . पारे से धातु परिवर्तन क्रिया की आराध्या "पारदेश्वरी" का पूर्ण साधना विधान . . . गोपनीय, दुर्लभ. . . पहली बार प्रकाशित।

### श्री यंत्र साधना

मां भगवती लक्ष्मी का व्रत्य विग्रह "श्री यंत्र" और उससे सम्बन्धित साधना तो विश्व की दुर्लभतम साधना कही जाती है. . . और यही साधना पहली बार।

### सनसनाहट भरा सौन्दर्य

सौन्दर्य . . . जीवन की पूर्णता, किस विधि से, किस प्रकार से सनसनाहट भरा सौन्दर्य प्राप्त कर सकते हैं. . . एक जीवन्त कृति।

### मैं सुगन्ध का झोंका हूं

गुरु. . . हाड़-मांस का व्यक्ति नहीं, अपितु वासन्ती पवन का झोंका है, जो तन-मन को पुलक से भर दे, जीवन्त, जाग्रत, चैतन्य, सुगन्धित कर दे . . . एक दुर्लभ पुस्तक।

### गणपति साधना

समस्त प्रकार के कार्यों, कष्टों, परेशानियों से मुक्त होने व धन-धान्य एवं समृद्धि प्राप्त करने हेतु श्रेष्ठ साधना पुस्तिका।

### सरस्वती साधना

स्मरण शक्ति बढ़ाने हेतु एवं बालकों का सर्वांगीण विकास व वाक्सिद्धि के लिए श्रेष्ठतम साधनाएं, प्रत्येक गृहस्थ के लिए उपयोगी।

### शक्तिपात

शक्तिपात क्यों, कब और कैसे . . . कुण्डलिनी जागरण किस विधि से . . . जीवन में तनाव मुक्ति सम्भव है? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक।

### बगलामुखी साधना

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने, मुकदमे में सफलता तथा सभी प्रकार के विकारों पर विजय के लिए बगलामुखी साधना सर्वोत्तम है, और इसी से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक।

### श्री गुरु चालीसा

नित्य स्तवन योग्य तथा हृदय में गुरु को धारण करने की विधि लिए सुन्दर, मधुर स्तोत्र।

### अनमोल सूक्तियां

प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी और आवश्यक . . . श्रेष्ठ पुस्तिका. . . जीवन में पूर्ण सफलता के लिए।

**: प्राप्ति स्थान :**

**सिद्धाश्रम,**306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली.110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

## ''विश्व शांति महायज्ञ''
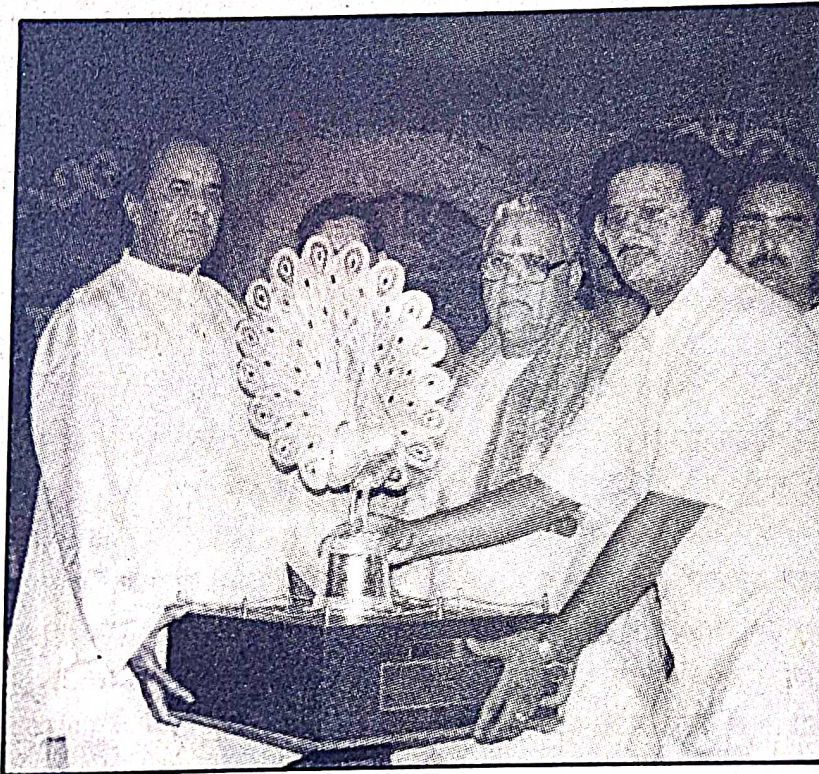
**श्री विजय चौपड़ा लुधियाना सांस्कृतिक केन्द्र की ओर से पूज्य गुरुदेव को ट्रॉफी प्रदान करते हुए**

स बार गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व का आयोजन पंजाब की नगरी लुधियाना में बड़े ही विशाल और भव्य रूप से किया गया, जहां चारों ओर आतंकवाद का भय हरेक के मन को आशंकित किये हुए है, सब कुछ होते हुए भी एक अशांति सी सभी के मन में व्याप्त है, जहां का वच्चा-बच्चा आंख खोलते ही ''गुरु'' शब्द का उच्चारण करता है और उस शब्द से भली प्रकार परिचित है, ऐसे गुरु प्रिय भक्तों और गुरु पर अपनी जान न्यौछावर कर देने वाले शिष्यों के समक्ष ही इस बार **''विश्व शांति महायज्ञ''** का आयोजन **''संत शिरोमणि डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** के सान्निध्य में बड़ी भव्यता के साथ किया गया।

और तब क्या था, जब पूज्य गुरुदेव के शब्द पंजाव

की धरती पर गुंजरित हुए--**"मैं इस जीवन में ही पंजाब की प्रत्येक धरती पर, जगह-जगह पर आयोजन करवाऊंगा और वहां पहुंचूंगा, जहां भी गोलियां चलेंगी, उनके बीच में आप लोगों को बिठाऊंगा और स्वयं भी बैठूंगा, क्योंकि आज तक कोई कारखाना ऐसा नहीं बना है, जहां ऐसी गोली का निर्माण हुआ हो, जो मेरे शिष्यों का सीना छलनी कर सके"**, इन शब्दों ने वहां के लोगों के मन में एक आशा और विश्वास की किरण जगमगा दी, और फिर एक बार पुनः गुरु परम्परा को उच्चता के साथ सम्मानित कर पंजाब के वासियों को उनके प्रति श्रद्धानत होना ही पड़ा, और यह मानना ही पड़ा, कि गुरु के बिना जीवन निराधार है।
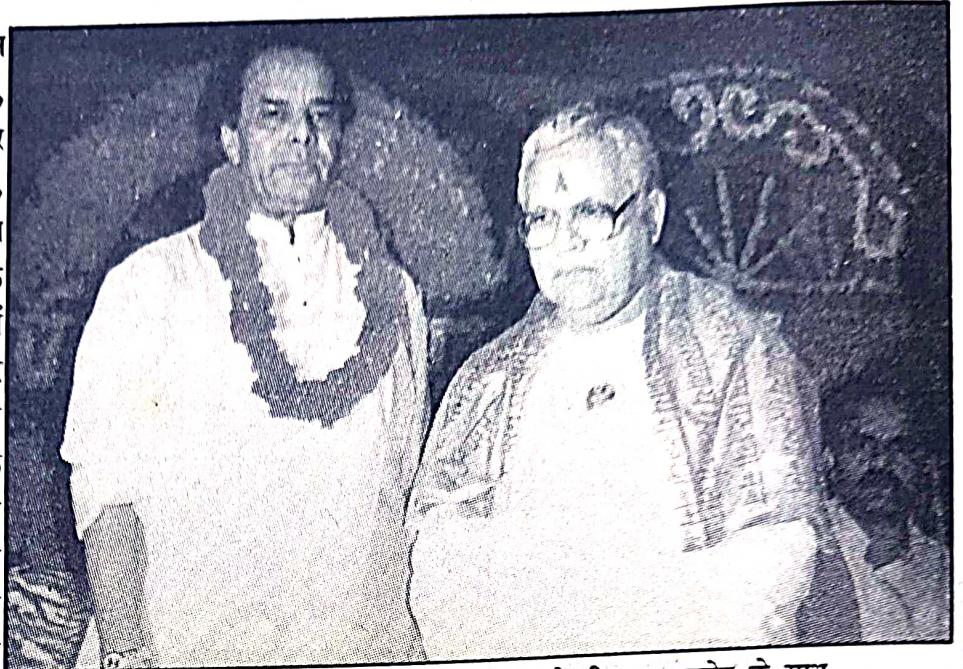
**श्री विजय चौपड़ा प्रधान सम्पादक पंजाब केसरी पूज्य गुरुदेव के साथ**

पिछले पांच हजार वर्षों बाद ही लुधियाना में, पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में गुरु पूर्णिमा शिविर का आयोजन पहली बार किया गया। इस धरती का अपने-आप में एक विशेष महत्त्व है— जहां युद्ध है, जहां भय है, वहां निर्भयता है। जहां अज्ञान है, वहां गुरु है, और यहां तो अपने आराध्य को भी गुरु ही मान लिया गया है, इस धरती ने तो गुरु को सर्वोच्चता दी है, अन्य प्रान्तों में तो रामायण को, महाभारत को, गीता को, वेदों को, पुराणों को महत्त्व दिया गया, किन्तु यहां तो गुरु को ही महत्त्व देकर यह बता दिया गया, कि जीवन का आराध्य केवल गुरु ही होता है।

"गुरु पूर्णिमा" अर्थात् गुरु और शिष्य का पूर्णता के साथ मिलन, ठीक उसी प्रकार जैसे नदी दौड़कर समुद्र से मिल जाती है, ठीक उसी प्रकार जैसे सुगन्ध दौड़कर हवा से मिल जाती है,ठीक उसी प्रकार जैसे एक भक्त दौड़कर अपने आराध्य से एकाकार हो जाता है, यह दिवस ही ऐसा है, जब शिष्य अपना सब कुछ गुरु-चरणों में समर्पित कर देने को आतुर हो जाता है।

गुरु पूर्णिमा का यह शिविर पानीपत में होते-होते अचानक ही लुधियाना में रखा गया, इसके कई कारण थे, जरूर इसके पीछे कोई हेतु रहा होगा। गुरुदेव का कहना था, कि अनेक ऐसे शिष्य हैं, जिन्होंने पंजाब की धरती पर जन्म लिया है, और जो अभी तक मुझसे जुड़ नहीं पाये हैं, उन्हें जोड़ने के लिए, उन्हें चेतना प्रदान करने के लिए ही गुरु को स्वयं चलकर अपने शिष्यों को खोजने के लिए, जो उनके आत्मीय रहे हैं, प्राणज रहे हैं, आत्मांश रहे हैं और जो पूर्व जीवन से उनके साथ हैं, उन्हें ज्ञान का संदेश देने और सही मार्ग प्रशस्त करने के लिए ही गुरुदेव को वहां जाना पड़ा।

लुधियाना के शिविर को देखकर तो ऐसा लगता था, मानो वास्तव में पूरा शिष्य समुदाय ही गुरुदेव से मिलने के लिए उमड़ पड़ा हो, वहां के लोगों में व्याप्त श्रद्धा-भावना, सम्मान और दान देने की प्रवृत्ति को देखकर तो वास्तव में ही आश्चर्य होता था, कि कितने सेवा भावी, शालीन और सभ्य हैं वहां के वासी, जिनके हृदय में "गुरु-भक्ति" स्वाभाविक रूप से ही होती है।

यह चार दिवसीय शिविर अपने-आप में प्रेम, शांति और भाईचारे का प्रतीक था, जहां हजारों की संख्या में भिन्न-भिन्न प्रान्तों से आये शिष्यों का तांता लगा हुआ था, हर कोई इस पावन अवसर पर गुरु-चरणों को स्पर्श करने के लिए व्यग्र हो रहा था, उनके शब्दों को हृदय में उतार लेना चाहता था, उनके दर्शनों के लिए व्याकुल शिष्य अपने आंसुओं के माध्यम से अपनी विरह-व्यथा को सुना रहे थे, और आंसुओं की परिभाषा तो गुरु ही जान सकता है, क्योंकि गुरु-शिष्य का यह दिव्य मिलन, यह सम्बन्ध ही यथार्थ है और बाकी सब मिथ्या है।

९ तारीख से इस शिविर का प्रारम्भ हुआ, किन्तु स्टाफ के कार्यकर्ता **राजेश गुप्ता, रविन्द्र पाल, रजनीश, अनीश, गोपाल** आदि दो दिन पहले से ही पूरी व्यवस्था को सुचारु रूप से बनाये रखने के लिए वहां पहुंच चुके थे, और **पूज्य गुरुदेव, पूजनीया माता जी और छोटे गुरुदेव कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी** भी ७ तारीख को हवाई अड्डे पर पहुंच चुके थे। वहां से वे मण्डी गोविन्दगढ़ गये। मण्डी गोविन्दगढ़ भी अपने-आप में एक औद्योगिक नगरी है, जो लुधियाना से ६० कि०मी० दूर है। वहां के जो उच्चकोटि के उद्योगपति थे, उनका विशेष आग्रह था, कि केवल एक रात हमारे यहां व्यतीत की जाय, वे उद्योगपति तो गुरुदेव से मिलकर अपने-आप को गौरवान्वित महसूस कर रहे थे, उनसे बातचीत करके उन्हें ऐसा लगा, जैसे पहली बार कोई देव पुरुष इस धरती पर अवतरित हुआ हो, जिनका नाम उन्होंने बचपन से

सुन रखा था, जिनकी किताबें उन्होंने बचपन से ही पढ़ रखी थीं, उन्हें अपने सामने साक्षात् देखकर वे कृतकृत्य हो उठे, उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

८ तारीख को करीब एक-डेढ़ बजे के दौरान गुरुदेव लुधियाना पहुंचे और हुकूमत राय, जो वहां के दानवीर सेठ हैं, जिन्होंने वहां के कृष्ण मंदिर को अत्यन्त ही भव्य तरीके से बनवाया है, जिन्हें सारा लुधियाना सम्मान की दृष्टि से देखता है, उनके विशेष अनुग्रह पर ही गुरुदेव के ठहरने की व्यवस्था वहां की गई।

जब गुरुदेव वहां पहुंचे, तो उनकी आगवानी के लिए हजारों शिष्य वहां पंक्तिबद्ध खड़े थे और गुरुदेव के नाम का जयकारा लगा रहे थे। शिविर का आयोजन वहां के व्यवस्थापकों **लुधियाना से श्री रोजन जेम्स और उनकी धर्म पत्नी, मण्डी गोविन्दगढ़ से अमरजीत सिंह, प्रदीप कुमार** आदि ने बड़े ही सुन्दर, शालीन और विशाल ढंग से किया था। वहां का पण्डाल अपने-आप में बहुत बड़ा बना हुआ था और मंच इतनी भव्यता के साथ सजाया हुआ था, कि देखकर ही उस शिविर की दिव्यता का आभास हो रहा था। सभी साधकों के लिए श्री कृष्ण मंदिर में ही ठहरने की उचित व्यवस्था की गई थी, और पहली बार जिस मंदिर में अभी तक महिलाओं को नहीं ठहराया जाता था, हुकूमत राय जी ने महिलाओं और साधिकाओं को ठहरने की स्वीकृति प्रदान कर दी। इतने वर्षों बाद पहली बार ही पंजाब में इस दकियानूसी परम्परा को, इस स्त्री-पुरुष के भेद-भाव को समाप्त किया गया।

शिविर के प्रथम दिन का शुभारम्भ गुरुदेव की उपस्थिति में **पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष हरनाम दास जौहर** द्वारा दीपक प्रज्वलित कर किया गया, उन्होंने अपने भाषण में कहा— **''पंजाब अपने-आप में बहुत संतप्त और संत्रस्त रहा है, आप जैसे देव पुरुष ने यहां आकर इस पंजाब की धरती को धन्य कर दिया है और वास्तव में आपने वैदिक ज्ञान को इस धरती पर उतारने का जो संकल्प लिया है, वह अपने-आप में एक महत्त्वपूर्ण एवं सराहनीय कार्य है। मैंने अनेक शिविर तो देखे हैं, किन्तु इतनी विशाल संख्या में आये पूरे भारतवर्ष के शिष्यों को पहली बार देख रहा हूं,''** उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, कि—**''मैंने आपका नाम तो बहुत सुन रखा था, किन्तु आपके दर्शन करने का सौभाग्य पहली बार ही प्राप्त हुआ है, आपने यहां आकर पंजाब के लोगों को कृतार्थ किया है, इसके लिए मैं और पूरा पंजाब आपके प्रति श्रद्धा से नतमस्तक है।''**

पूज्य गुरुदेव ने भी अपने संक्षिप्त भाषण में कहा—**''पंजाब ने बहुत दुःख, परेशानियां, तकलीफें झेली हैं, यहां के लोगों ने हिंसा का तांडव नृत्य देखा है, मैं इस ''विश्व शांति महायज्ञ'' के माध्यम से उनके मन में शांति, प्रेम, सौहार्द्र, भाईचारा लाने की कोशिश में यहां आया हूं, और चाहता हूं, कि इस प्रकार का वातावरण यहां उपस्थित हो सके, कि पंजाब वापिस खुशहाल बन सके।''**

उन्होंने कहा, कि—''सबसे पहले आर्य पंजाब में आये, सबसे पहले वैदिक ऋचाएं यहां रची गईं, उपनिषदों की यहां रचना हुई, सैकड़ों ऋषि यहां पर विचरण करते रहे, ऐसे भूभाग में आकर उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता हुई है और उनका उद्देश्य मात्र इतना ही है, कि वे वहां के नागरिकों, अपने शिष्यों व साधकों को दीक्षा, साधना और यज्ञों के माध्यम से उस वैदिक ज्ञान से एक बार पुनः परिचित करायें।''
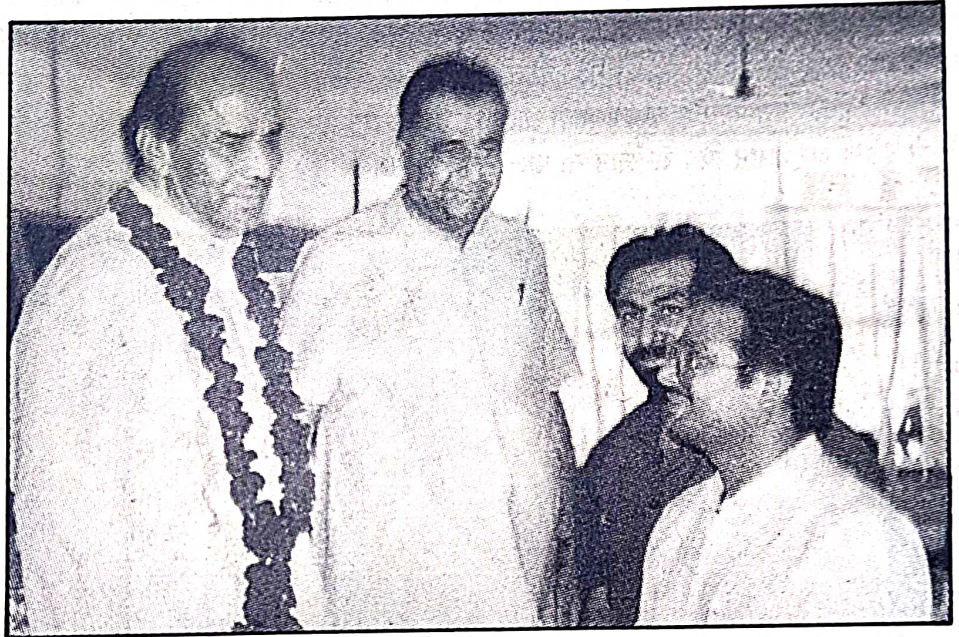
**पंजाब विधान सभा अध्यक्ष श्री हरनाम दास जौहर पूज्य गुरुदेव का स्वागत करते हुए**

इसी दौरान गुरु पूर्णिमा के अवसर पर उन्होंने ६ तारीख से १२ तारीख तक प्रातः एवं सायंकाल दोनों समय विशेष महत्त्वपूर्ण प्रयोग सम्पन्न कराये, जिनमें **६ तारीख को सहस्राक्षी प्रयोग, १० तारीख को ब्रह्माण्ड भेदन प्रयोग, दूर श्रवण प्रयोग, मनोकामना पूर्ति प्रयोग, ११ तारीख को दस महाविद्या प्रयोग, सिद्धाश्रम प्राप्ति प्रयोग, १२ तारीख को शरीरस्थ देवता प्रयोग और प्राण तत्त्व जागरण प्रयोग** सम्पन्न कराये और विशेष दीक्षाओं में **श्री सच्चिदानन्द सिद्धि दीक्षा और ऊर्ध्वपात दीक्षा,** जिन्हें प्राप्त करना तो अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य और गुरुदेव की असीम कृपा ही कही जा सकती है।

१२ तारीख को भारत के प्रमुख समाचार पत्र **पंजाब केसरी** के प्रमुख सम्पादक **श्री विजय चौपड़ा** गुरुदेव को सम्मानित

करने के लिए शिविर स्थल पर पहुंचे, वहां के **मुख्यमंत्री श्री बेअन्त सिंह** जी भी वहां आने वाले थे, किन्तु उस दिन कैबिनेट की मीटिंग होने की वजह से क्षमा मांगते हुए उन्होंने कहा, कि मैं नहीं आ पा रहा हूं और उनके प्रतिनिधि के रूप में **श्री राजन गुप्ता** ने मुख्यमंत्री की तरफ से गुरुदेव का स्वागत किया और कहा--**''जब मैं छोटा था, तब से गुरुदेव के ग्रन्थ पढ़ता आया हूं और आज तक इतनी नम्रता, इतनी शालीनता, इतना अद्वितीय व्यक्तित्व मैंने पहली बार देखा है, मैं इन्हें देख कर ही अपने-आप को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं''**,ऐसा कहते हुए उन्होंने माल्यार्पण कर गुरुदेव के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया।

इसके पश्चात् **''लुधियाना सांस्कृतिक केन्द्र''** की ओर से एक बहुत बड़ी ट्रॉफी गुरुदेव को भेंट की गई। चौपड़ा परिवार का बलिदान तो अपने-आप में सराहनीय है, चौपड़ा जी ने अपने भाषण में कहा, कि— **''मैंने इतना अनुशासन प्रिय सम्मेलन तो पहली बार ही देखा है, मुझे पहली बार लगा, जैसे वास्तव में कोई ऋषि वापिस अवतरित हो गया हो। ''विश्व शांति महायज्ञ'' की उन्होंने बहुत प्रशंसा की और कहा, कि यहां कथा, कीर्तन आदि तो बहुत होते रहे हैं, लेकिन इतनी उच्चकोटि की साधनाएं व दीक्षाएं यहां पहली बार ही हुई हैं, आज तक इस प्रकार का शिविर यहां नहीं लग पाया, और फिर अन्त में उन्होंने गुरुदेव को हार पहिना कर उनका स्वागत किया और गुरुदेव ने भी उन्हें आशीर्वाद प्रदान करते हुए''सिद्धाश्रम गौरव'' का सम्मान पत्र भेंट किया।**

**डी. आई. जी. श्री राजन गुप्ता लुधियाना पूज्य गुरुदेव को हार पहिनाते हुए**

इतना बड़ा पण्डाल छोटा पड़ गया था शिष्यों के विशाल समुदाय को देखते हुए, रोज मिलने वालों की भीड़ हजारों की संख्या में खड़ी रहती थी। छोटे गुरुदेव **श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी** भी आखिरी दिन तक लगातार लोगों की समस्याओं को सुलझाने में व्यस्त रहते, सुबह ७ बजे से लेकर रात्रि ३ बजे तक उनकी परेशानियों का समाधान करते और लोगों से बातचीत करने पर यह ज्ञात भी हुआ, कि उनके बताए हुए समाधान से वे भली प्रकार से शांति एवं संतुष्टि का अनुभव कर लाभ प्राप्त कर रहे हैं। **पूजनीया माता जी श्रीमती भगवती देवी** भी महिलाओं से बहुत ही सहज रूप से मिलकर उनकी समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करतीं और गुरुदेव ने तो यहां तक कहा, कि— **''माता जी ही मेरी प्रेरणा हैं, जिनके त्याग व तपस्या के बल पर ही आज मैं इस स्थान पर खड़ा हो पाया हूं।**

आखिरी दिन विधिवत् गुरु-पूजन हुआ और विदाई समारोह के कार्यक्रम के अन्तर्गत सभी ने चरण-स्पर्श कर, गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त कर विश्व शांति यज्ञ में पंजाब की धरती पर सुख का साम्राज्य स्थापित करने के लिए साधना की आहुति डाली। इस प्रकार यह चार दिवसीय शिविर अपने-आप में उमंग भरा, मस्ती भरा, रस भरा, आनन्द से युक्त शिविर था, इसे देखकर तो ऐसा लग रहा था, कि ''सिद्धाश्रम साधक परिवार'' बहुत तेजी के साथ फैल रहा है और वहां उपस्थित साधक, जिन्होंने पीले वस्त्र धारण किये हुए थे, ऐसे लग रहे थे, जैसे कई देवदूत इस पृथ्वी पर उपस्थित हो गये हों, वहां का वातावरण अत्यंत ही भव्यता और दिव्यता लिए हुए था।

इस आयोजन को सफल बनाने में विशेष रूप से उल्लेखनीय भूमिका रही दिल्ली के **श्री सुभाष शर्मा जी** की, जिनकी वजह से ही १५ दिन के भीतर इतनी शीघ्रता से लुधियाना में इतने विशाल शिविर का आयोजन हो सका और साथ ही **श्री वासुदेव पाण्डे, श्री एस०के० बनर्जी, श्री एस०के०मिश्रा, अम्बाला के श्री राजेश गुप्ता, श्री कृष्णा, इलाहाबाद के डॉ० प्रमोद यादव जी, डॉ० राजेन्द्र ढल, अमरेन्द्र सिंह, विजय अरोड़ा, धनबाहदुर, कोशल, काकुलाल और सेवा सीमिति टीम** ने भी अपनी मेहनत, लगन और परिश्रम से इस शिविर को सफल बनाने में अपना विशेष सहयोग प्रदान किया। इस महोत्सव की तो वास्तव में ही कोई तुलना नहीं की जा सकती और वहां के आयोजकों ने भी जितना परिश्रम किया, उसकी जितनी सराहना की जाय उतनी कम है। लुधियाना शिविर में स्टॉल एवं दीक्षाएं आदि कार्यक्रम **''लुधियाना सिद्धाश्रम साधक परिवार''** द्वारा संचालित किया गया जो अत्यधिक सफल रहा, हर दृष्टि से यह शिविर पूर्ण सफल रहा, अद्वितीय रहा, आनन्दयुक्त रहा उन शिष्यों के लिए भी, जो वहां उपस्थित थे और पंजाब की धरती पर जन्म लेने वाले नागरिकों के लिए भी, क्योंकि गुरुदेव ने अपने पावन चरणों को रखकर उस धरती को भी पवित्र कर दिया, उस गुरु पूर्णिमा के अवसर पर, अपनी दिव्य शक्ति से और अपने आशीर्वाद से।

**— गीतिका कल्पित**

# मूर्च्छावायु (हिस्टीरिया)

● डा० धर्मराज राय,
कानपुर

## निर्वाचन–

यह बीमारी स्नायविक होती है, जो पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक होती है। स्नायु विधान के क्रिया-विकार को **''मूर्च्छावायु''** कहते हैं। इसमें मनोवृत्ति और चैतन्य शक्ति-संचालन में विलक्षणता पैदा होती है। जरायु के साथ इसका विशेष सम्बन्ध है, इसकी उत्तेजना के कारण ही यह रोग उत्पन्न होता है, इसलिये इस रोग की गिनती 'जरायुज रोग' में होती है।

## कारण–

जरायु की उत्तेजना, डिम्बकोश का क्रिया-विकार, अधिक सहवास या उसमें कमी या फिर बिलकुल न होना, कृत्रिम मैथुन, दाम्पत्य प्रेम में खलल पड़ना, कोई कामना पूरी न होना, भय, आलस्य, अधिक भोग-विलास आदि उत्तेजक कारण होते हैं।

## लक्षण–

ऐसा अधिकांशतः देखा गया है, कि रोगिणी रोग के आक्रमण का अनुभव पहले ही कर लेती है। उसके प्रधान लक्षण हंसना, रोना, दीर्घ श्वास, श्वासावरोध आदि हैं। ऐसा मालूम होता है, जैसे गले में कोई गोलाकार चीज फंसी हुई है, इसे **''ग्लोवस हिस्टेरिक्स''** कहते हैं। सम्भवतः पाकस्थली में डकार वाली वायु जमा होकर ऊपर उठती है या फिर गलनली (थोरेक्स) के अकड़न से भी यह पैदा होता है। रोगिणी बोलने में असमर्थ होती है, पर ज्ञान-शून्य नहीं होती, वह जमीन पर गिर पड़ती है, उसके हाथ-पैर अकड़ जाते हैं, और अकड़न के बाद बेहोशी आ जाती है। शुरू में मूत्रावरोध या कम मूत्र और बाद में ज्यादा मूत्र भी इसका लक्षण है, कई रोगिणियां खुशी का भाव दिखाती हैं, स्तनों में दर्द एवं बाईं ओर के पांजर में दर्द होना, माथे में सूजन के साथ दर्द, मांसपेशियों में अकड़न, हंसना-रोना, हिचकी, जम्हाई, खांसी, पक्षाघात आदि इसके अनेक लक्षण होते हैं। कभी-कभी पक्षाघात या लकवा जैसे लक्षण भी देखे गए हैं, लेकिन पीड़ित अंग दुर्बल नहीं होता, यह बहुरूपिया होता है, क्योंकि इसके बहुत से रूप देखने को मिलते हैं।

मस्तिष्क में विकार होने पर रोगिणी कोई एक शब्द या वाक्य बार-बार उच्चरित करती रहती है। जरायु से पैदा होने वाली मूर्च्छा से श्वेत प्रदर, प्रबल संगम की इच्छा या उसका सम्पूर्ण ह्रास, जरायु में शूल दिखाई देता है। आंत से पैदा रोग में शूल जैसा दर्द, पाकाशय के दोष से अम्ल जैसा लक्षण प्रकट होता है। कंठनली व श्वास नली के आक्रांत होने पर सूखी खांसी आती है। आंखों में दृष्टि दोष या कुछ समय के लिए अन्धत्व का लक्षण भी इस रोग में हो सकता है।

## भावी फल–

अनेक स्त्रियां इस रोग में अनेक तरह की तकलीफ भोग कर अन्त में गर्भ धारण करते ही इस रोग से छुटकारा पा जाती हैं। रोग के पुराना हो जाने पर तकलीफें घट जाया करती हैं तथा इस पीड़ा का भावी फल शायद ही भयानक होता है।

## चिकित्सा–

वैसे तो होमियोपैथि में इस रोग की अनेक दवाइयां हैं, परन्तु लक्षण भेद के अनुसार ही दवाइयों का चुनाव किया जाता है। मेरे रोगियों को जिन दवाओं से उपचार मिला, उनका संक्षेप में विवरण दे रहा हूं। ये दवाइयां रोग को जड़ से उखाड़ फेंकती हैं।

१. **एसाफोटिडा ३०वीं शक्ति– प्रधान लक्षण-** गले में एक गोला अटकने का एहसास तलपेट में अधो वायु जमा होना, श्वास-प्रश्वास में कष्ट, मुंह से मानो सारी चीजें बाहर निकल जायेंगी, भोजन के बाद चलने-फिरने से कष्ट बढ़ना, गुल्म वायु से पैदा शूल-वेदना आदि इस औषधि के प्रधान लक्षण हैं।

२. **इग्नेशिमा २००वीं शक्ति–** सिर में कांटा चुभने जैसा दर्द, स्नायुशूल, मानसिक लक्षणों में परिवर्तन, पाकस्थली में कच्चेपन का बोध, मिचली, कै, लड़ाई-झगड़े में रुचि या एकदम चुप, दुःख भाव में पर्यायशीलता, रोगिणी का कभी हंसना, कभी रोना, ठंडी सांस, अधिक पेशाब, अधिक खांसी आदि।

३. **मोस्कस ३० या २००–** चेहरा लाल, कामोन्माद इसका विशेष लक्षण है, इसके अतिरिक्त एक बार रोना दूसरी बार खूब हंसना, हृदय कम्पन, स्नायविक कमजोरी, दिन में नींद आना, उदर वायु के साथ मूर्च्छा, सांस रुकने जैसा संकोचन, ज्यादा पेशाब, मौत का डर, एकाएक बेहोशी, योनि में सुरसुराहट, दृष्टि-दोष के साथ माथे में चक्कर आदि।

४. **नक्स मस्केटा ३०–** मूर्च्छावायु रोग के साथ मानसिक अवसाद, निचले पेट का फूल जाना, मुंह में शोथ, गहरी तन्द्रा आती हो, सांस की तकलीफ, ऋतु के बदले श्वेत प्रदर, मानसिक और शारीरिक कमजोरी, पेट से गोला उठने का भाव आदि।

५. **प्लैटिनम ३०–** दूसरों के प्रति तुच्छ भावना, तेज स्वभाव, मामूली कारण से भी अपना अपमान समझना, बदन में दर्द, माथा दर्द एवं भारी, सांस रुकने जैसा भाव, गाढ़ा काले रंग का अधिक आर्तव, मुरझाया हुआ चेहरा, योनि में सुरसुराहट आदि।

६. **बैलेरियाना ३०–** गले में जैसे एक रस्सी झूलती है, ऐसा लगता है, कि जैसे पाकस्थली से गरम चीज पैदा होकर सांस का कष्ट बढ़ा रही हो, भय, कम्पन, मूर्च्छावायु का गोला जो पेट से गले की तरफ उठे, आम वाट के लक्षण भी देखे गए हैं। यह दवा एलोपैथिक विशेषज्ञ ज्यादा व्यवहार में लाते हैं।

लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियां भी इस बीमारी में प्रयोग होती हैं– **ब्रोमिया ३०, कोलोफाइलम ६,३०, कोक्यूलस ६, ३०, कोनियम ३०, जेल ३०, लैकेसिस २००, पैलेडियम ३० आदि।**

**नोटः आप-अपने डॉ० की व्यक्तिगत सलाह पर ही दवाइयों का सेवन करें।**

# जीवन को परिपूर्ण बनाने हेतु

# परम पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ

## दीक्षा संस्कार

भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से जीवन की पूर्णता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है— दीक्षा द्वारा संस्कारित होना . . . दीक्षा कब, कैसे और क्यों प्राप्त करनी चाहिए . . . प्रस्तुत है इस जिज्ञासा का समाधान

**मूल्य प्रति – 15/-**
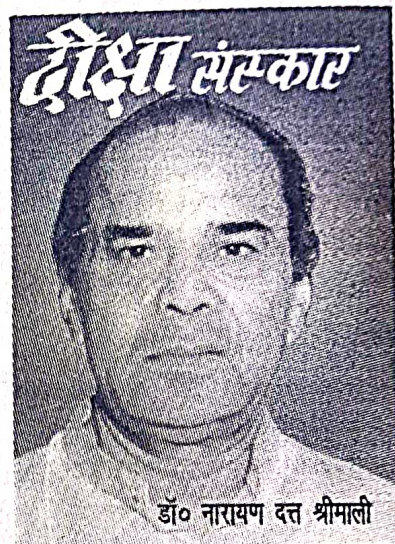
## तांत्रोक्त गुरु-पूजन

गुरु को ही जीवन का सार कहा गया है . . . जीवन के प्रत्येक पल पर एक ऐसे मार्ग दर्शक की आवश्यकता पड़ती है, जो उसके जीवन को पूर्णता तक पहुंचा सके. . . फिर वह चाहे भौतिकता की पूर्णता हो या आध्यात्मकिता की। प्रथम बार दुर्लभ, गोपनींय और महत्त्वपूर्ण कलाकृति का सृजन, गुरुदेव को हृदय में धारण करने का दुर्लभ प्रयोग, सिद्धाश्रम प्राप्ति के गोपनीय प्रयोग. . .

**मूल्य प्रति – 15/-**

## सर्व सिद्धि प्रदायक : यज्ञ-विधान

अध्यात्म जीवन का एक ऐसा पक्ष है, जिसे नकारा नहीं जा सकता. . . और इसकी पूर्णता के लिए जहां मंत्र-जप आवश्यक है, वहीं यज्ञों का समावेश होना भी उतना ही आवश्यक है. . . बिना यज्ञ में आहुति दिये साधना की सफलता में संशय रह जाता है. . . उसकी क्रिया को स्पष्ट करता यह एक लघु ग्रंथ, जो प्रत्येक साधक के लिये आवश्यक है।

**मूल्य प्रति – 15/-**
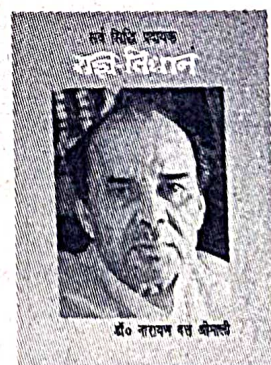

**सम्पर्क**

**सिद्धाश्रम,** 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

# राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट
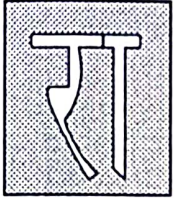
जनीतिक दृष्टि से यदि सम्पूर्ण विश्व को निहारा जाय, तो विश्व का कोई भी देश, कोई भी राज्य, शहर, गांव, कस्बा राजनीति से अछूता नहीं रहा। यदि ध्यान से देखा जाय, तो छोटे-छोटे बालक भी राजनीतिक विषयों में रुचि लेने लगे हैं। कार्यालय में प्राप्त होते "राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्किट" तथा "राशिफल" जैसे विषयों से सम्बन्धित पत्रों से स्पष्ट होता है, कि पत्रिका प्रकाशित भविष्यवाणियों को पढ़कर पाठकों में अदम्य उत्साह बना है। पाठकों की मांग को लेकर ही इस प्रकार के विषय में सामान्यतया वृद्धि की गई है।

भारत में लगातार बढ़ता वित्तीय घाटा सुरसा का मुख बना हुआ है, और वहीं उस घाटे को पूरा करने के लिए बढ़ती महंगाई, क्या कभी इसका अंत होगा? क्या इसका कोई समाधान है, जैसे प्रश्न आज भारत को ही नहीं, समस्त विश्व को झकझोर कर रख देने की स्थिति में हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से निकट भविष्य में इन समस्याओं का कोई समाधान नजर नहीं आता। वित्तीय मामले को लेकर बरती गई उदासीनता किसी भी प्रकार से भारत के हित में नहीं रहेगी।

इस माह में बढ़ते हुए घोटाले, चीनी घोटाला, राशन घोटाला तथा अन्य प्रकार की धोखाधड़ियों का तीव्र गति से भंडाफोड़ होगा, तथा इससे राजनीतिक स्तर अत्यन्त प्रभावित होगा और प्रमुख राजनीतिक हस्तियां इसके कालिख से बच नहीं पायेंगी।

अयोध्या विवाद अपनी कच्छप चाल से चलता ही रहेगा और किसी भी समय अपना रूख बदल कर पूर्ण देशव्यापी विवाद की स्थिति बना सकता है।

उत्तर-प्रदेश में हुए राजनीतिक परिवर्तन से बाहरी स्थिति शांत ही प्रतीत होगी, परन्तु वास्तव में आन्तरिक स्थिति अत्यन्त ही रहस्यमय एवं उलझनों से भरी रहेगी। बसपा एवं भाजपा का संगठन अधिक दिनों तक साथ नहीं निभा पायेगा, और उत्तर-प्रदेश में त्रिकोणी टक्कर की स्थिति प्रबल होगी। राजनीति से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति उच्च स्थान प्राप्ति के लिए एक-दूसरे पर आरोपों की बौछार करता दिखाई देगा।

हरियाणा अपने ही अन्तर्द्वन्दों में उलझता जायेगा। कई दिनों से चला आ रहा जल विवाद समाप्त होगा। हरियाणा भी अपनी चुनावी रणनीति में बढ़-चढ़कर आगे आयेगा और त्रिकोणी टक्कर की स्थिति निर्मित करेगा। राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त दुर्बलता की स्थिति में आयेगा। भजन लाल जी का बहुमत एवं प्रचार बढ़ता प्रतीत होगा।

बिहार, असम, पंजाब में उग्रवाद की घटनाओं में वृद्धि होगी। अपहरण, चोरी, धोखाधड़ी की घटनाओं में वृद्धि होगी। सुरक्षा व्यवस्था कड़ी होने के बावजूद भी इनमें किसी भी प्रकार की कमी नहीं आयेगी।

यह माह प्राकृतिक आपदाओं की दृष्टि से सामान्य ही रहेगा, फिर भी सुखा-बाढ़ एवं भूकम्प जैसी घटनाओं का प्रभाव कई स्थानों पर देखने को मिलेगा। राजस्थान इस दृष्टि से अग्रणी रहेगा। राजस्थान में बढ़ती बेरोजगारी की समस्या राजनीतिक स्तर पर परेशानी का कारण बनेगी। राजनीतिक दृष्टि से राजस्थान भी कम उथल-पुथल से भरा नहीं रहेगा। वोट के लिए धार्मिक भावनाओं एवं प्रदेश की उन्नति के मसले आगे रखे जायेंगे।

हिमाचल प्रदेश आतंकवाद की घटनाओं से प्रभावित रहेगा। कश्मीर समस्या यथावत् बनी रहेगी। राजनीतिक हस्तियों के लिए उक्त समस्या अपना पक्ष गरम करने वाली ही सिद्ध होगी। हिमाचल में मौसमी प्रकोप में वृद्धि होगी। राहत कार्य व्यवस्थाओं को लेकर तनाव की स्थिति बनेगी।

## शेयर मार्किट

व्यापारिक वर्ग में ही नहीं, जन सामान्य में भी शेयर अपना विशिष्ट स्थान बनाकर रखने में सफल हुए हैं। शेयर मार्केट में चली आ रही तीव्र उथल-पुथल से सामान्य शेयरधारक असमञ्जस की स्थिति में रहेंगे। जिन शेयरों के दाम गिरने की सम्भावना बनी हुई थी, अचानक उनमें वृद्धि आश्चर्य का विषय ही रहेगी। शेयर क्रय-विक्रय को लेकर शेयरधारक परेशानी की स्थिति में रहेंगे।

ज्योतिषीय दृष्टि से जिन शेयरों के दामों में वृद्धि की सम्भावना है, वे निम्न रहेंगे— **ए० सी० सी०, बाटा, ब्रिटानिया, ब्रुक ब्रांड, डनलप, जी० के० डब्ल्यू, हिंद डवलपमेंट, हिंद मोटर, हिंद लीवर, आई० सी० आई०, हिन्डालको, बिन्दल एग्रो केमिकल, रिलायन्स इन्ड०, टिस्को, यूनीयन कार्बाइड** जैसे शेयर अपने मूल्यों में असामान्य वृद्धि प्राप्त करेंगे।

वहीं जिन शेयरों के दामों में सामान्य वृद्धि होगी, वे निम्न रहेंगे— **बिरला जूट, ईस्ट इंडिया होटल, गुजरात अम्बूजा, गुजरात नर्मदा, केसोराम, निप्पोन, टेल्को, श्री सिन्थेटिक, एस्सार, एस० बी० आई, जिन्दल विजय नगर स्टील, एच० लोन होजरी, भाखड़ा एग्रो इन्ड०, पामफार्मा, जे० सी० टी०** आदि रहेंगे।

इसके अलावा और कुछ शेयर ऐसे हैं, जो आशातीत लाभ प्रदान करने वाले सिद्ध होंगे, तथा अपनी सामान्य अवस्था को बनाये रखेंगे। यह समय लिवालियों के लिए अनुकूल एवं लाभप्रद सिद्ध होगा, परन्तु निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें, जो भी निर्णय लेना हो स्वयं की मौलिक सूझ-बूझ से ही लें। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का शेयर मार्केट में सीधा हस्तक्षेप रहेगा। कुल मिलाकर स्थिति लाभप्रद ही रहेगी।

# जिसकी प्रत्येक प्रति हाथों-हाथ बिकी

# अत्यधिक मांग की वजह से दोबारा प्रिंट कराना पड़ा

# परम पूज्य गुरुदेव

# डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

# द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ

## निखिलेश्वरानन्द स्तवन

जो एक स्तवन ही नहीं शब्दों के माध्यम से ब्रह्म को व्यक्त करने का प्रयास है, सद्गुरुदेव के ओर-छोर को नाप लेने का प्रयास है . . . जिसका पाठ करते ही स्वतः ध्यान की क्रिया आरम्भ हो जाती है, समाधि की भाव-भूमि स्पष्ट होने लगती है और सिद्धियां तो मानों हाथ जोड़ कर सामने खड़ी हो जाती हैं. . . तभी तो यह मात्र स्तवन नहीं काल के भाल पर लिखी अमिट पंक्तियां हैं, आप सब के द्वारा नित्य पठनीय एवं श्रवणीय . . . एक अद्भुत और अनोखा संकलन . . .
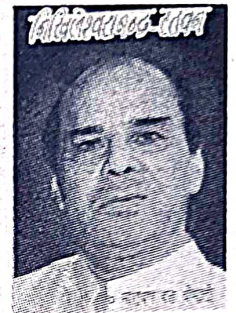
**मूल्य प्रति 96/-**

## आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र
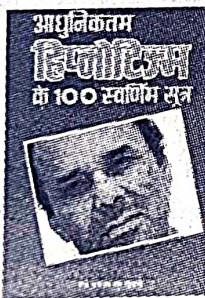
जिससे कली-कली भी खिल उठती है. . . पूर्ण सौन्दर्य, तेज से आपूरित ज्ञान, जिसके माध्यम से दूसरों पर प्रभाव डालकर अपने जीवन को तो सुगम बनाया ही जा सकता है, साथ ही स्वयं को सम्मोहित करके भी अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण किया जा सकता है, तो क्यों न हम आज ही प्राप्त कर लें. . .

### आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र

जो भरा है पूर्ण ज्ञान के भण्डार से, जिसके माध्यम से आप भी अपनी आंखों में अग्नि भर सकते हैं, जिसके तेज से इस्पात भी पिघल जाता है. . . और साथ ही यह अपने में समेटे हुए है सम्मोहन चिकित्सा. . . सम्मोहन सिद्धियां. . . सम्मोहन रहस्य जिससे असम्भव को भी सम्भव किया जा सकता है. . . दृढ़ निश्चयी, चमत्कारी पुरुष बना जा सकता है. . . सम्पूर्ण यौवन की तृप्ति एवं आत्मविश्वास की वृद्धि से इच्छित कार्यों को पूर्ण करने का सरल, सुगम और अत्यन्त तीव्र वशीकरण प्रयोगों से युक्त यह अविस्मरणीय ग्रंथ. . .

दूसरों के मन की बात जान लेना तथा समस्त प्रकार की समस्याओं का निवारण करने का एकमात्र विज्ञान. . . जो अपने-आप में वरदायक बनकर आया है पहली बार. . .

**मूल्य प्रति – 30/-**

**प्राप्ति स्थान**

**सिद्धाश्रम,** 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010
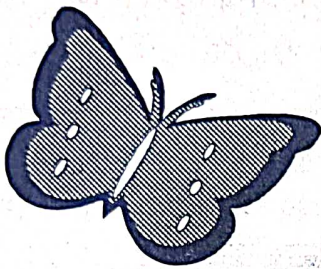
“कुमुदिनी को अपने चरम विकास के लिए चन्द्रमा के आगमन की अपेक्षा बनी रहती है. . . उन नाजुक कलियों की तृषित आंखों को उपवन में वसंत की तलाश रहती ही है. . . चकवी की वह करुणा भरी वेदना चकवे को कहीं भी कैसे चैन से रहने दे सकती है. . . यह प्रयोग उन प्यासे हृदय के भावों को भरने के लिए, उन्हें आनन्दातिरेक से आप्लावित करने के लिए तथा ‘प्रेम’ शब्द को सार्थक करने के लिए ही बना है।”
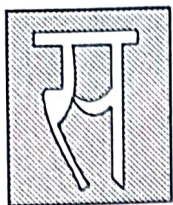
सम्पूर्ण वर्ष के ३६५ दिनों का शास्त्रीय दृष्टिकोण से अलग-अलग महत्त्व निर्धारित किया गया है। प्रत्येक दिवस अपने-आप में अन्यतम उपलब्धियों को समेटे हुए है, यदि हमें उस दिवस विशेष के बारे में जानकारी हो, तो निश्चित रूप से इस दिवस विशेष से सम्बन्धित लाभ को प्राप्त करने का प्रयास करते ही हैं। इन ३६५ दिनों में केवल मात्र एक दिवस ऐसा आता है, जिसके बारे में शास्त्रों में लिखा गया है, कि उस रात्रि में वसुन्धरा पर अमृत वृष्टि होती है, वह दिवस है— **''शरद पूर्णिमा''**।

चन्द्रमा शीतलता का प्रतीक तो होता ही है, किन्तु शरद काल में आने वाली पूर्णिमा को चन्द्रमा की शीतलता पूर्ण अमृत सिक्त हो जाती है, उस दिवस विशेष पर चन्द्रमा से निकलने वाली रश्मियों में कुछ इस प्रकार की विशेषताएं निहित होती हैं, जिनके द्वारा इस पृथ्वी के प्राणियों को बहुत कुछ प्राप्त होता है, यदि वे इस क्रिया के प्रति जागरूक हों तो।

**पूर्णिमा का अर्थ ही है पूर्णता. . . कोई भी प्रेमी या प्रेमिका एक-दूसरे से भिन्न होकर उस स्थिति पर नहीं पहुंच पाता, जो आनन्द की, मस्ती की और उमंग की उत्तुंगता कहलाती है. . .**

शरद पूर्णिमा के दिन ग्रह-नक्षत्रों के संयोग इस प्रकार से निर्मित होते हैं, कि प्राणी के मन में स्वतः ही प्रेम भावना की प्रबलता हो जाती है, उस समय व्यक्ति को ऐसा एहसास होता है, कि आज हृदय बहुत ही आनन्दित है. . . और तब व्यक्ति आंतरिक रूप से आनन्द का अनुभव करता है, तब उसकी एकमात्र भावना यह होती है, कि वह अपने आनन्द के क्षणों को अपने प्रिय के साथ व्यतीत करे।

यह भावना प्रकृति प्रेरित है। इसी कारण कवियों ने, साहित्यकारों ने, यहां तक कि अध्यात्म वेत्ताओं ने भी शरद पूर्णिमा के महत्त्व को स्वीकार कर अपने-अपने भावानुसार पंक्तिबद्ध करके व्यक्त किया है।

शरद पूर्णिमा के दिन ही भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी प्रियतमा राधा तथा अन्य गोप-गोपिकाओं के साथ रासलीला का आयोजन किया था, जिसके माध्यम से उन्होंने समाज के सम्मुख प्रेमी और प्रेमिका का बहुत ही सुन्दर स्वरूप प्रस्तुत किया, उनके उस दिव्य लीलामय स्वरूप को देखकर यह स्पष्ट आभास होता है, कि वाह्य रूप से तो प्रेमी-प्रेमिका दो अलग-अलग रूपों में दिखाई देते हैं, किन्तु ध्यान से देखा जाय, तो वे दो होकर भी एक होते हैं, एक-दूसरे में पूर्णतः समाहित, पूर्णतः विसर्जित, तभी तो किसी कवि ने कहा है--

**दोउ चकोर, दोउ चन्द्रमा, दोउ अलि, पंकज दोउ।**
**दोउ चातक, दोउ मेघ प्रिय, दोउ मछरी, जल दोउ।।**
**आस्रय आलम्बन दोउ, विषयालम्बन दोउ।**
**प्रेमी-प्रेमास्पद दोउ, तत्सुख-सुखिया दोउ।।**
**लीला आस्वादन निरत, महाभाव रसराज।**
**वितरत रस दोउ दुहुन कौं, रचि विचित्र सुठि साज।।**
**सहित विरोधी धर्म-गुन, जुगपत नित्य अनंत।**
**वचनातीत अचिन्त्य अति, सुषमामय श्रीमंत।।**
**श्री राधा - माधव - चरन बंदौ बारम्बार।**
**एक तत्त्व दो तनु धरें, नित-रस-पारावार।।**

'प्रेम' शब्द तो जब इस सृष्टि का निर्माण हुआ, तब भी सर्वव्याप्त रहा, और आज भी सर्वव्याप्त है. . . और आने वाले युगों में भी यह सर्वत्र व्याप्त रहेगा ही। प्रेम के इस महत्त्व को देखते हुए ही विभिन्न ऋषियों-मुनियों ने कुछ ऐसी विशिष्ट साधनाओं का अनुसंधान किया, जिससे मनुष्य के हृदय में प्रेम-भावना दबे नहीं, अपितु अपने पूर्ण स्वरूप के साथ प्रस्फुटित हो सके। निश्चित रूप से हमारे ऋषि-मुनि त्रिकालज्ञ रहे हैं, जिसके कारण उन्होंने यह जान लिया था, कि आने वाले समय में व्यक्ति के पास इतना समय नहीं रहेगा, कि वह अधिक-से-अधिक समय, जिससे वह प्रेम करता है, उसके लिए दे सके।

फिर भी मनुष्य है, तो प्रेम हो ही जाता है, किन्तु उसे दुःख तो तब होता है, जब प्रेमी या प्रेमिका अपने प्रिय के मनोभावों को समझ नहीं पाते, ऐसी स्थिति में वह अपने प्रिय को अलग-अलग उपायों से रिझाने का, मान-मनोहार करने का प्रयास करता रहता है; और जब वह सफल नहीं हो पाता है, तो आज का मनुष्य हताश-निराश हो जाता है, फिर उसका मन किसी भी कार्य में नहीं लगता है।

ऐसी स्थिति आने ही क्यों दें? जब हमारे पास ऋषि प्रदत्त शरद पूर्णिमा को किया जाने वाला **''चुम्बकत्व प्रयोग''** का विधान उपलब्ध हो। **इस प्रयोग को करने के उपरान्त प्रेमी-प्रेमिका एक-दूसरे के बारे में प्रेमयुक्त चिन्तन करते हैं, तथा पूर्ण आकर्षण के भाव से अनुप्राणित रहते हैं।**

प्रेम करना कोई गुनाह नहीं है, यदि दोनों पक्ष पूर्णतः सहमत हों तो. . . और जब दोनों पक्ष पूर्णतः सहमत हों, तो यह

आवश्यक नहीं, कि उनके परिवार के लोग भी पूर्णतः सहमत हों, कई बाधाएं-परेशानियां प्रेमी-प्रेमिका के बीच दीवार बन कर खड़ी हो जाती हैं। समाज की बात मानकर वे किसी अन्य के साथ विवाह सूत्र में बंध अवश्य जाते हैं, किन्तु बोझ स्वरूप ही अपने जीवन को बिताते रहते हैं, फिर उनके अन्दर असमय ही चिड़चिड़ाहट, क्रोध, तनाव उत्पन्न होने लगता है।

**इस प्रयोग के माध्यम से जहां प्रेमी-प्रेमिका विवाह-सूत्र में बंध जाते हैं सम्पूर्ण जीवन काल के लिए, वहीं यदि इस प्रयोग को पति-पत्नी में से कोई भी एक सम्पन्न कर लेता है, तो उन दोनों के मध्य से भी तनाव, क्रोध व मतभेद जैसी बातें समाप्त हो जाती हैं, और एक-दूसरे के प्रति पूर्ण प्रेम व समर्पण की भावना का भी उदय होता है, जिसके कारण उनका दाम्पत्य जीवन अत्यधिक सुखमय, आनन्ददायक, तृप्तिदायक एवं सभी दृष्टियों से पूर्ण सम्पन्नता युक्त हो जाता है।**

इस प्रयोग को करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है-

## सामग्री–

**'सफेद हकीक माला'**, जो कि शरद पूर्णिमा के विशेष अवसर पर किये जाने वाले प्रयोग के लिए चन्द्रेश तन्त्र से अनुप्राणित की जाती है, तथा पूर्ण चुम्बकत्व युक्त **'शरद यंत्र'**। इन दोनों सामग्रियों को आप पहले से ही प्राप्त कर लें।

## दिवस–

**८.१०.९५ शरद पूर्णिमा, आश्विन शुक्ल पक्ष, रविवार** या अन्य किसी भी **सोमवार** के दिन आप इस प्रयोग को कर सकते हैं।

## समय–

**रात्रि में १० बजे के पश्चात् प्रातः ४ बजे** तक कभी भी इस प्रयोग को किया जा सकता है, ध्यान रखें, कि इस प्रयोग को करते समय पूर्णकाल तक चन्द्रमा आकाश में ही हो।

## विधि–

१. शरद पूर्णिमा की रात्रि को स्नान करें।

२. **श्वेत वस्त्र** धारण करें।

३. खुली छत पर या ऐसी जगह पर बैठें, जहां चन्द्रमा की किरणें आपके शरीर पर पड़ती रहें, यदि ऐसा सम्भव न हो, तो प्रयोग प्रारम्भ करने से पूर्व चन्द्र-दर्शन कर लें, और हाथ जोड़ कर उनसे प्रार्थना करें, कि मुझे चुम्बकत्व प्रयोग में पूर्ण सफलता प्रदान करने हेतु सहायक बनें।

४. साधना कक्ष में **पूर्व दिशा** की ओर मुंह करके बैठें।

५. **श्वेत आसन** का प्रयोग करें।

६. अपने सामने लकड़ी की एक चौकी पर श्वेत वस्त्र बिछाकर किसी प्लेट में सफेद चन्दन से चन्द्रमा की आकृति अंकित कर उस पर 'चुम्बकत्व शरद यंत्र' की स्थापना करें।

७. यंत्र के ऊपर 'सफेद हकीक माला' रख दें तथा दोनों का सफेद पुष्प व अक्षत से लघु पूजन सम्पन्न करें।

८. इस प्रयोग में किसी प्रकार की धूप-अगरबत्ती की आवश्यकता नहीं है।

९. सफेद हकीक माला से पहले एक माला गुरु मंत्र का जप करें, फिर निम्न मंत्र की **११ माला जप** करें, इसके बाद पुनः एक माला गुरु मंत्र का जप करें।

**मंत्र**

**ॐ श्रीं पूर्ण प्रेमत्व सिद्धिं साधय श्रीं नमः।**

१०. मंत्र-जप करते समय, यदि आप छत पर साधना कर रहे हैं, तो चन्द्रमा की ओर देखते हुए मंत्र-जप करें, यदि आप साधना कक्ष में बैठ कर मंत्र-जप कर रहे हैं, तो यंत्र को अपलक दृष्टि से देखते हुए मंत्र-जप करें।

११. मंत्र-जप की समाप्ति के पश्चात् दूध से चन्द्रमा को अर्घ्य प्रदान करें, यदि आप साधना कक्ष में इस प्रयोग को कर रहे हैं, तो यह अर्घ्य, यंत्र पर माला को रख दें, फिर इन दोनों सामग्रियों पर अर्पित करें।

१२. अर्घ्य देते हुए मूल मंत्र का ५ बार उच्चारण करें।

१३. यदि सम्भव हो, तो उसी रात्रि को यंत्र तथा माला को नदी में या किसी पवित्र तालाब अथवा सागर में विसर्जित कर दें।

१४. घर लौटने के पश्चात् हाथ-पैर धोकर पूजा कक्ष में जायें तथा गुरु चित्र के सामने अत्यन्त विनम्र भाव से खड़े होकर पुनः मूल मंत्र का १५ बार उच्चारण कर अपनी इच्छा पूर्ति हेतु गुरुदेव से प्रार्थना करें।

१५. इस दिवस पर सिर्फ दूध से बने आहार को ही ग्रहण करने का विधान है।

१६. रात्रि में भूमि शयन करें।

पूर्ण श्रद्धा भाव से किया गया यह प्रयोग शत-प्रतिशत लाभप्रद होता ही है, ऐसा शास्त्र सम्मत विचार है।

साधना में प्रयुक्त होने वाली सामग्री :
सफेद हकीक माला- १५०/-, शरद यंत्र - २४०/-

## अपनों से अपनी बात

☆ इस माह कई विशेष साधनाएं हैं, और अपने-आप में महत्त्वपूर्ण साधनाएं हैं, जो पूरे वर्ष में एक बार ही आती हैं, इसलिए साधकों के लिए ये दिन और यह महिना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, और उन्हें इस प्रकार की दुर्लभ साधनाओं में भाग लेना ही चाहिए।

☆ साधना सम्पन्न करने पर सफलता मिलती ही है, यदि साधक को मंत्र पर, साधना पर, गुरु पर तथा अपने-आप पर पूर्ण आस्था और विश्वास हो, विश्वास डगमगा जाने पर साधना में सफलता संदिग्ध हो जाती है।

☆ पत्रिका की नीति यह है, कि जो पर्व या त्यौहार महत्त्वपूर्ण हो, उसे दो महीने पहले ही लेख के रूप में पत्रिका में प्रकाशित कर दिया जाय, जैसे बिना शस्त्रों के युद्ध में विजय प्राप्त नहीं हो पाती, उसी प्रकार बिना शुद्ध और मंत्रश्चेतना युक्त सामग्री के साधना में भी सफलता मिलनी कठिन हो जाती है . . . फिर सामग्री के बारे में पत्र व्यवहार करने में, उत्तर आने में और फिर सामग्री भेजने में . . . इस पूरी प्रक्रिया में लगभग दो महीने लग जाते हैं, जिससे कि साधक समय पर साधना-सामग्री प्राप्त कर उसका उपयोग कर सके।

☆ पूज्य गुरुदेव अब अधिकतर अपने स्वाध्याय, ग्रन्थ लेखन और व्यक्तिगत साधना में ज्यादा समय देने लगे हैं, फिर भी वे जब दिल्ली में होते हैं, तो निःशुल्क अपने शिष्यों और आगन्तुकों से यथासम्भव भेंट करते ही हैं, और उन्हें मार्ग दर्शन देते ही हैं, ज्यादा अच्छा हो, यदि आप पहले से ही समय निर्धारित कर उनसे भेंट करें, यों प्रत्येक साधक और शिष्य के लिए उनके हृदय-द्वार चौबीस घण्टे खुले रहते हैं।

☆ आप हिमालय से भी ज्यादा शीतल और पर्वत से भी ज्यादा धैर्यवान हैं, तब भी आलोचना करने वाले आलोचना करने में ही सुख अनुभव करते हैं . . . इसके बारे में कहा भी क्या जा सकता है. . . इस पत्रिका का उद्देश्य बिना निन्दा के सभी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना है।

☆ गुरुदेव के नाम से कई व्यक्ति शिष्यों को और साधकों को गुमराह करते हैं, ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए. . . और यदि जोधपुर या दिल्ली से टेलीफोन कर उस व्यक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त कर लें, तो ज्यादा उचित रहेगा।

☆ कई लोगों में यह भ्रम फैला दिया गया है, कि बड़े गुरु जी से मिलना अत्यन्त कठिन है, या वे बहुत अधिक धनराशि लेकर मिलते हैं या धनाढ्यों से ही मिलते हैं . . . यह भ्रम है, असत्य है, वे तो निःशुल्क प्रत्येक व्यक्ति से सुविधानुसार मिलते ही हैं . . . फिर भी उनका स्वयं का काफी समय पूजा-अर्चना, स्वाध्याय, ग्रन्थ लेखन, मार्गदर्शन में व्यय होता ही है, इसके बाद जो समय बचता है, वह साधकों, आगन्तुकों और शिष्यों के लिए ही समर्पित है।

☆ साधना-सामग्री आप कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं . . . पर वह शुद्ध व प्रामाणिक हो, जोधपुर का टेलीफोन : 0291-32209 चौबीसों घण्टे आपके लिए खुला रहता है, अतः टेलीफोन पर ऑर्डर बुक कराइये, जिससे समय की बचत हो सके।

☆ **फोटो द्वारा कोई भी दीक्षा आपके परिवार के किसी भी सदस्य को**

इसके लिए आप पीछे दिया गया पोस्टकार्ड भर दें, इसके द्वारा आपको पुरानी बीस पत्रिकाएं 15 X 20 = 300/- की वी० पी० पी० से भेज दी जायेंगी। वी० पी० पी० छूटने पर आप-अपने परिवार के किसी भी सदस्य का फोटो भेज दें, उन्हें निःशुल्क दीक्षा पूज्य गुरुदेव स्वयं देंगे--

**१. शीघ्र विवाह दीक्षा २. महालक्ष्मी दीक्षा ३. स्वास्थ्य दीक्षा ४. वीर दीक्षा ५. विजय प्राप्ति दीक्षा ६. ज्ञान दीक्षा।**

पत्रिका के पृष्ठ २ पर प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत यह योजना पत्रिका प्राप्ति के एक महीने के भीतर-भीतर पोस्टकार्ड भेजने पर ही सम्भव होगी।

इस मास का

# श्रेष्ठतम उपहार

## प्रत्येक शिष्य, साधक और अध्येता को,

## जो पूज्य गुरुदेव में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखते हैं,

## सिद्धाश्रम के सिद्ध योगियों से आशीर्वाद युक्त

**(पूजा में रखने योग्य)**

*जीवन में पूर्ण सुख, सौभाग्य, उन्नति,*
*ऋणमुक्ति, व्यापार वृद्धि, पुत्र-सुख, रोग मुक्ति*
*एवं समस्त प्रकार की भौतिक-आध्यात्मिक उन्नति के लिए*

**एक अद्वितीय उपहार**

# षोडशी त्रिपुर सुन्दरी यंत्र

**आप क्या करें–**

आप पत्रिका में दिया हुआ पोस्टकार्ड भली प्रकार से भर लें . . . यदि आप सदस्य हैं, तो किसी मित्र या स्वजन का पूरा पता एवं नाम भर कर हमें भेज दें, पोस्टकार्ड प्राप्त होने पर हम आपको 180/- रुपये पत्रिका सदस्यता शुल्क + 16/- रुपये वी० पी० पी० चार्ज इस प्रकार मात्र 196/- की वी० पी० पी० से **'षोडशी त्रिपुर सुन्दरी यंत्र'** भेज देंगे, और यह यंत्र आपको सुरक्षित रूप से प्राप्त हो जायेगा। वी० पी० पी० छूटने पर आपके मित्र को अगले महीने से एक वर्ष का पत्रिका सदस्य वना कर रसीद आपको भेज दी जायेगी।

**नोट :**
- इस योजना का लाभ केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्य ही ले सकते हैं।
- **इससे आप अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं कर सकते।**

**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत।**


**: प्राप्ति स्थान :**

**सिद्धाश्रम,** 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

रजिस्ट्रेशन नं० 55791/93 A.W.H. पोस्टल-डी.एल.नं० 19052/93

# "दीक्षा ही परिपूर्णताम्"

मात्र दीक्षा ही जीवन में पूर्णता प्रदान कर सकती है।

इस माह में पड़ने वाले विशेष दिवस जिनका महत्व अपने-आप में सर्वोपरि है, इन विशेष दिनों में पूज्य गुरुदेव निम्न दीक्षाएं प्रदान करेंगे।

## दिनांक : 2 से 5 सितम्बर 1995

| | |
|---|---|
| 2.9.95 | महालक्ष्मी दिवस |
| 3.9.95 | चन्द्र मौलीश्वर दिवस |
| 4.9.95 | सर्व सिद्धि दायक दिवस |
| 5.9.95 | पद्मा सिद्धि दात्री दिवस |

## और इन दिनों में भी

## दिनांक : 20 से 23 सितम्बर 1995

| | |
|---|---|
| 20.9.95 | अमृत सिद्धि दिवस |
| 21.9.95 | भगवान सदाशिव दिवस |
| 22.9.95 | ऐश्वर्य प्राप्ति दिवस |
| 23.9.95 | सर्व अमृत सिद्धि दिवस |

## दुर्लभ दीक्षाएं

भैरव दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा
राजयोग दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा
धन्वन्तरी दीक्षा, लक्ष्य भेद दीक्षा
महालक्ष्मी दीक्षा, आत्म-ज्ञान दीक्षा
तंत्र सिद्धि दीक्षा, काल ज्ञान दीक्षा
ध्यान सिद्धि दीक्षा, वैवाहिक योग दीक्षा
अभीष्ट सिद्धि दीक्षा, पूर्ण वीर वैताल दीक्षा
ब्रह्मदर्शन सिद्धि दीक्षा, भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा
मंगली दोष निवारण दीक्षा
गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा
आत्मा-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा
वशीकरण दीक्षा,सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा

– विशेष –

प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान पर लगभग आधे घंटे की साधना सम्पन्न करा कर, फिर शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित दीक्षा देने का प्रावधान. . . और साथ में साधना-सिद्धि से सम्बन्धित गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्घाटन गुरुदेव के द्वारा. . .

अंक 8
वर्ष 15

सम्पर्क :
306, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - 110034
फोन : 011-7182248, फेक्सः 011-7196700

नोट :
ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल "गुरुधाम" दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।